बोस्ताँ

•

मूल लेखक : शेख़ सादी
अनुवादक : ज़हूरबख़्श

•

भारतीय ज्ञानपीठ काशी

ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला : हिन्दी ग्रन्थाङ्क १५६
ग्रन्थमाला सम्पादक-नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

BOSTAN
SHEKH SAADI
(Fables and Short Stories)
Bhartiya Jnanpeeth Kashi
Publication
First Edition 1962
Price Rs. 2·50

प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ काशी
मुद्रक
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी
प्रथम संस्करण १९६२
मूल्य दो रुपये पचास नये पैसे

निवेदन

महात्मा शेख सादी एक आदर्श मानव तो थे ही, अपने युग और देशके महान् कवि और साहित्यकार भी थे। उनके रचे हुए सोलह ग्रन्थ पाये जाते हैं। इनमें-से दो ग्रन्थोंमें भक्ति-रसकी चर्चाएँ हैं, चार ग़ज़ल-संग्रह और दोमें समय-समयपर बादशाहों तथा अमीरोंकी प्रशंसामें लिखे हुए क़सीदे हैं। उनकी समस्त रचनाएँ मौलिकता, ओज तथा प्रसाद-गुणसे परिपूर्ण हैं। बड़े-बड़े कवि उनकी ग़ज़लों और क़सीदोंका अधिपति मानते आ रहे हैं। इसका मूल कारण यह है कि उन्होंने न तो ग़ज़लोंमें संयोग-वियोग तथा नख-शिखके वर्णन किये हैं न क़सीदोंमें बादशाहों-अमीरोंको आसमानपर ही चढ़ाया है। सदाचार तथा नीतिका प्रचार करना ही उनके जीवनका उद्देश्य था और उन्होंने अपना यही उद्देश्य अपनी प्रत्येक रचनामें पूर्ण कर दिखाया है।

वैसे तो महात्मा शेख सादीके सभी ग्रन्थ अपने-अपने क्षेत्रमें यथेष्ट महत्त्व रखते हैं; परन्तु इनमें 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँ' सर्वोपरि हैं। ये अपने रचयिताको जनताके हृत्तल तक पहुँचा देते हैं। वास्तवमें इनके द्वारा सादीने संसारको जो कुछ अर्पित किया है वह अनमोल है। साहित्यकी परख रखनेवाला इस सत्यसे परिचित है कि 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँ' सादीके ऐसे पुष्पोद्यान हैं जिनमें सदा वसन्तकी बहार बनी रहेगी। यही कारण है कि संसारके साहित्य-रसिक सदासे इनके सौन्दर्यपर मुग्ध रहते आये हैं।

महात्मा शेख सादीको इस बातका गौरव प्राप्त है कि वह फ़ारसी-गद्यके जन्मदाता थे। यही आदि फ़ारसी-गद्य 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँ' में सुरक्षित

रूपसे विद्यमान है। कहनेको तो ये ग्रन्थ सात सौ वर्षसे अधिक पुराने हो चुके हैं, पर जैसे समयके प्रभावसे ये सर्वथा परे हैं। जब कोई लेखक अलंकृत भाषा लिखनेका उद्योग करता है तब उसमें बहुधा कृत्रिमताका दोष उत्पन्न हो जाता है, सादीकी भाषा इस दोषसे मुक्त है। स्वाभाविकता, सादगी और सजावट उसकी ऐसी विशेषताएँ हैं कि उनसे जहाँ देखिए, प्रसाद-गुण फूटा पड़ता है। यही क्यों, सादीने प्रत्येक बात ऐसे ओजस्वी, और कटाक्ष पूर्ण ढंगसे व्यक्त की है कि वह हृदयमें चुभकर रह जाती है। यद्यपि उनके परवर्ती लेखकोंने निरन्तर ही उनका अनुकरण करनेकी चेष्टा की है, तथापि उनकी जैसी सफलता किसीको नसीब न हो सकी।

महात्मा शेख सादी नीतिके जीते-जागते प्रतीक थे और सदाचार ही उनके जीवनका ध्येय था। 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँ' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। यद्यपि उनका विषय नवीन नहीं है, तथापि उसमें जो वाक्-चातुर्य और भाषा-लालित्य है वह उसे जैसे सदा सजीव बनाये हुए है। परन्तु इसके लिए सादी काल्पनिक-जगत्में नहीं उड़ते-फिरते, वह वास्तविकताकी भूमिपर ही रहते हैं। वह कोई ऐतिहासिक अथवा अपने अनुभवसे सम्बन्धित एक छोटी-सी घटना उठाते हैं और फिर उसे थोड़े-से प्रभावपूर्ण शब्दोंके माध्यमसे इतने मनोहारी ढंगसे सँवारकर रख देते हैं कि देखनेवाले देखते रह जाते हैं।

यद्यपि विषय और उसके प्रतिपादनकी शैलीके विचारसे 'बोस्ताँ' तथा 'गुलिस्ताँ' में श्रेणी-भेद करना अनुचित है, तथापि बहुत लोग 'बोस्ताँ' को और बहुत लोग 'गुलिस्ताँ'को श्रेष्ठ ठहराते हैं। वास्तवमें वे एक ही सिक्केके दो पहलू हैं—ऐसे पहलू, जो आपसमें इस प्रकार सटे हुए हैं कि उनके बीच पृथक्त्वकी रेखा खींचना असम्भव है। महात्मा शेख़ सादीने 'गुलिस्ताँ' का जो प्राक्कथन लिखा है उससे पता चलता है कि उन्होंने ईरानके तत्कालीन सम्राट् अताबक अबूबकर और उनके पुत्र युवराज फ़ख़-रुद्दीनको उपदेश करनेके विचारसे सन् ६५५ हिजरीमें 'बोस्ताँ'का प्रणयन

किया था। परन्तु जब उन्हें इसके प्रणयनसे सन्तोष नहीं हुआ तब उन्होंने उस कार्यको आगे बढ़ाया और अगले ही वर्ष 'गुलिस्ताँ' को प्रस्तुत किया। इस प्रकार 'गुलिस्ताँ' वास्तवमें 'बोस्ताँ'का उपसंहार-मात्र है। यही कारण है जो उन दोनोंमें इतना साम्य भी पाया जाता है।

ईरानके बाहर विदेशोंमें शेख़ सादीको कितना आदर-मान प्राप्त है यह बतानेके लिए इतना ही कहना यथेष्ट है कि उनको युरोपके कुछ समालोचक यूनानी महाकवि होरेसके समकक्ष ठहराते हैं और अँगरेज़ी, डच, फ्रेञ्च, इतालियन, जर्मन, रशन, लैटिन, ग्रीक, तुर्की, अरबी भाषाओंमें 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँके' रूपान्तर पाये जाते हैं। मौलाना हालीने स्वलिखित सादीके जीवन-चरित्रमें 'इंग्लिश साइक्लोपीडिया'के आधारपर इन ग्रन्थोंके उन दस अनुवादोंका उल्लेख किया है; जो विभिन्न युरोपीय भाषाओंमें विद्यमान हैं; परन्तु मौलाना शिबलीके मतानुसार उनकी संख्या लगभग चौबीस है। उन्होंने अपने ग्रन्थ 'शैर-उल-अजम' में उनकी नामावली भी दी है। इनके सिवाय उर्दू, बँगला, मराठी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओंमें भी 'बोस्ताँ' और 'गुलिस्ताँ'के अनुवाद हो चुके हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दीमें यह अब 'बोस्ताँ'का भारतीय ज्ञानपीठ-द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

मछरियाही
सागर, म० प्र०

—जहूरबख़्श

अनुक्रम

एक

दो

तीन

चार

पाँच

छह

सात

एक

जो शासक प्रजा-रंजन करना नहीं जानता :-
अपनी राजनीतिमें न्याय, दया, सत्य और प्रेमका समुचित मिश्रण करना नहीं जानता—वह शासक रूपमें जनता पर भार मात्र है ।

१
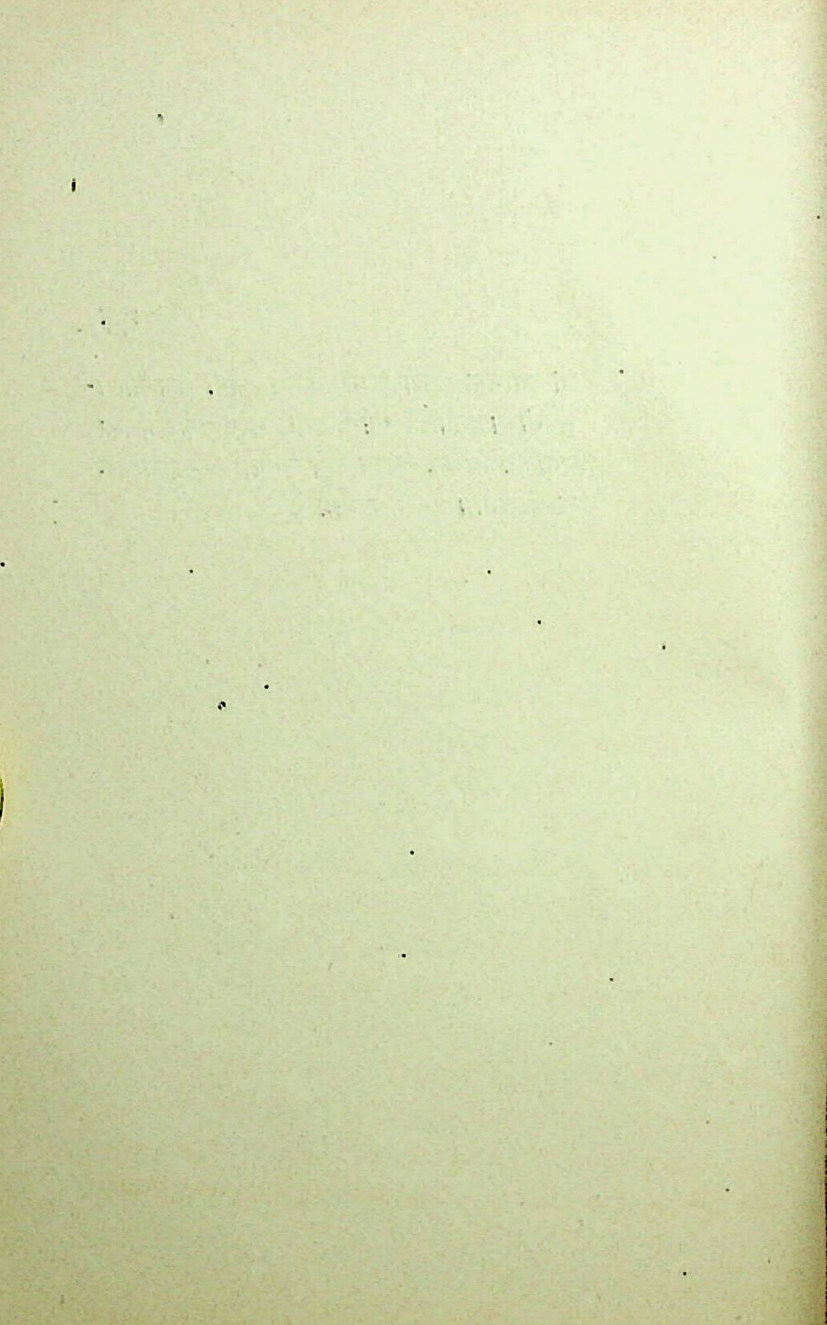
रिआया जड़ है और बादशाह दरख़्त

मैंने सुना है कि जब नौशेरवाँका आखिरी वक़्त आया तब उसने अपने बेटे हुरमुज़से कहा—

"दिलसे फ़क़ीरों-दरवेशोंकी हिफ़ाज़त कर। अपने आरामकी फ़िक्र न रख। कोई भी अक़्लमन्द यह पसन्द न करेगा कि चरवाहा पड़ा सोता हो और भेड़िया उसकी बकरियोंके ग़ोलमें रहे। होशियारीसे दरवेशों-मुहताजोंका खयाल रख, इसलिए कि रिआयाकी बदौलत ही बादशाह ताजदार होता है। रिआया जड़की तरह है और बादशाह दरख्तकी तरह, और दरख्त जड़से ही मज़बूत होता है। जहाँतक बन सके, रिआयाका दिल मत दुखा और अगर तू ऐसा करता है तो अपनी जड़ खोदता है।

"अगर तुझे नेक राहकी ज़रूरत है तो तेरे सामने फ़क़ीरों, परहेज़-गारोंका रास्ता खुला पड़ा है। जिसे यह खौफ़ है कि वह खुद तकलीफ़ न उठाये, उसे भला दूसरोंका नुक़सान क्यों पसन्द आयेगा, और अगर उसकी तबीयतमें यह आदत नहीं है तो उसके मुल्कमें अमन-चैनकी बू भी नहीं है। अगर तू क़ानून-क़ायदेसे मजबूर है तो खुशी अख्तियार कर और अगर तनहा है, पाक-साफ़ है, तो अपना रास्ता ले। उस मुल्कमें खुश-हालीकी उम्मीद न रख जिसमें बादशाहसे रिआया नाराज़ है।

"ख्वाबमें मुल्कको आबाद वही देखता है जो लोगोंके दिल बेज़ार रखता है। ज़ुल्मसे खराबी और बदनामी होती है—बड़े बूढ़े इस बातकी तह तक पहुँच चुके हैं। ज़ुल्मके ज़रिये रिआयाको तबाह करना ठीक नहीं;

इसलिए कि वही हुकूमतको पनाह देनेवाली है। अपने फ़ायदेके लिए किसानोंके साथ रियायत करनी चाहिए। यह खयाल रहे कि जो मजदूर खुश होता है, वह काम भी ज्यादा करता है। किसीके साथ बदी करना मुरौवतके खिलाफ़ है खासकर उस शख्सके साथ जिससे लोगोंकी भलाई होती है।"

●

२

ज़ोरों-ज़ुल्मपर बुनियाद रखनेवाला फ़ना हो जाता है

मैंने सुना है कि जब खुसरोकी आँखें दुनिया देखनेकी तरफ़से हमेशा-के लिए सोने लगीं तब उसने अपने बेटे शेरोयसे कहा—

"तू जो अच्छी नियत कर चुका है उसपर क़ायम रह और हमेशा रैयतकी बेहतरी सोचता रह। ऐ बेटा, अक़्ल और तजवीज़के खिलाफ़ कोई ऐसा काम न कर जिससे तेरी, रैयत घबराकर इधर-उधर भागने लगे। बादशाहके जुल्मसे ही रैयत भाग निकलती है, और उसे तमाम दुनियामें बदनाम करती है। जो शख्स जुल्म और ज़ोरपर अपनी बुनियाद रखता है वह बहुत जल्दी फ़ना हो जाता है। इसमें शक नहीं कि तलवारकी तीखी धारसे खराबी पैदा होती है, मगर इतनी नहीं जितनी कि एक बुढ़ियाकी आहसे। अगर किसी बेवाकी आहका चिराग़ जल उठता है तो अकसर उसकी आगसे शहर-के-शहर वीरान हो जाते हैं।

"उससे ज्यादा खुशनसीब इस दुनियामें और कौन है जिसने इन्साफ़-के साथ हुकूमत की है? जब वह इस जहानसे सफ़र करता है तब लोग उसकी जुदाईमें मातम मनाते और उसकी क़ब्रपर फ़ातिहा पढ़ते हैं। इस जहानमें भले-बुरे सभी मरते जाते हैं, इसलिए बेहतर तो यही है कि लोग

तेरी नेकियाँ याद करें। जब तू किसीको हाकिम बनाये तो यह देख कि वह परहेज़गार है या नहीं, अल्लाहसे डरता है या नहीं; इसलिए कि वही तो मुल्ककी इमारत तैयार करनेवाला कारीगर होता है। इसके खिलाफ़ जो तेरे नफ़ेके लिए रैयतको सताता है, वह रैयतका दुश्मन तो है ही तेरा भी दुश्मन है।

"ऐसे लोगोंको रियासत सौंपना सख्त ग़लती है जिनके ज़ुल्मसे लोग पनाह माँगते हैं। जो अच्छे आदमियोंकी परवरिश करता है, वह बदीसे दूर भागता है। मगर जो बुरे आदमियोंकी परवरिश करता है वह खुद अपनी जानका दुश्मन है। दुश्मनका माल ज़ब्त कर लेना उसके लिए कोई सज़ा-में-सज़ा नहीं है; बल्कि दुश्मनको जड़से उखाड़ डालना ही उसके लिए माक़ूल सज़ा है। जो आलिम (विद्वान्) ज़ालिम हो, उसकी लानत-मलामत क्या करना, बल्कि मोटापेकी वजहसे उसकी तो खाल खिंचवा लेना ही ठीक है। भेड़िया लोगोंकी बकरियाँ चीर-फाड़ डाले, इसके पहले ही उसका सिर उड़ा देना चाहिए।

●

२

ग़रज़मन्दकी शिकायतपर कान देना ठीक नहीं

शहर अम्मानमें एक शख्स आया। वह बड़े-बड़े वीरान मैदानों और घने जंगलोंका सफ़र कर चुका था। अरब, तुर्किस्तान, उज़बेकिस्तान, रूम वग़ैरह सब मुल्कोंकी उसे खबर थी। वह मुल्कों-मुल्कोंकी सैर कर चुका था और बड़ा तजरबेकार था। इल्मसे बखूबी वाक़िफ़ था। सूरत-शक्लसे किसी मज़बूत दरख्तकी तरह ताक़तवर जान पड़ता था। मगर पास कुछ न होनेसे बहुत हैरान-परेशान था। उसकी गुदड़ीमें कम-से-कम दो-सौ

पैवन्द लगे हुए थे। पैवन्द लगते-लगते वह इस हालतमें पहुँच गयी थी कि उसकी गरमीसे उसके दिलमें भी जलन होने लगी थी। वह किसी तरह नदीके किनारेसे चलकर शहरमें आया और इधर-उधर फिरने लगा।

उन दिनों अम्मानका जो बादशाह था वह बड़ा नेकबख्त था। हमेशा नेकीके काम करता और फ़क़ीरों-दरवेशोंकी खिदमतमें लगा रहता था। उसके खिदमतगारोंने ज्यों ही उस शख्सको देखा, त्यों ही वे उसे हम्माममें ले गये। उन्होंने उसे अच्छी तरह नहलाया-धुलाया और साफ़-सुथरे कपड़े पहनाकर भला आदमी बना दिया। इसके बाद जब वह शख्स शाही दरबारमें हाज़िर हुआ, तब दोनों हाथ सीनेपर रखते-रखते और सिर झुकाते-झुकाते बोला, "मैंने इस मुल्कके एक भी रास्तेमें कोई दिल उदासीमें डूबा हुआ नहीं देखा; बस, जिसे देखा, फूलकी तरह खिला हुआ देखा। मैंने इस मुल्कके रास्तेमें किसीको शराबके नशेमें बेहोश नहीं पाया; अगर पाया, तो शराबखानोंको ही बरबाद पाया। बादशाहके लिए मुल्ककी यही सजावट सबसे बड़ी चीज़ है, जो वह किसीको उदासी और बदहाली देखकर खुश होना नहीं जानता।"

उस शख्सने ये बातें ऐसे ढंगसे, ऐसे लहजेमें कहीं, गोया बादशाहपर लफ़्ज़ोंके बहाने मोतियोंकी लड़ियाँ निछावर कर दीं। नतीजा यह निकला कि उसकी ये बातें सुनते-सुनते बादशाह चकित हो उठा। उसने उसे अपने पास बुलाकर उसकी बड़ी इज़्ज़त की, उसके आनेपर अपनी दिली खुशी जाहिर की और उससे बहुत-कुछ पूछताछ की। उसने बादशाहकी हर बातका जवाब इतने दिलचस्प तरीक़ेसे दिया कि वह बड़ी आसानीसे दरबारियोंकी नज़रोंमें चढ़ गया। क़िस्सा कोताह, बादशाहने मन-ही-मन यह इरादा कर लिया कि यह शख्स वज़ीर होनेकी क़ाबिलियत रखता है। मैं इसे ऊपर उठाऊँगा, लेकिन धीरे-धीरे, ताकि सरकारी मुलाज़िम मुझे कम-अक़्ल न समझ बैठें। मौक़े-मौक़ेपर इसकी आज़माइश करूँगा, और जिस क़दर यह अपनी होशियारी दिखायेगा, उसी क़दर इसे तरक़्क़ी दूँगा।

पछतावेका भार तो वही शख्स उठाता है जो बग़ैर सोचे-समझे काम करता है। जब क़ाज़ी खूब ग़ौर और फ़िक्र करनेके बाद फ़ैसला लिखता है तब उसे आलिमों और क़ानूनदाँओंके सामने शरमिन्दा नहीं होना पड़ता। चतुर निशानबाज़ तीर पीछे छोड़ता है, निशाना पहले ही अच्छी तरह साध लेता है। अगर कोई शख्स खूबसूरती और तमीज़में हज़रत युसुफ़ है, तो वह साल भर बाद ही मिस्रका अज़ीज़ हो सकता है। मगर इसके खिलाफ़ तो ज़्यादा वक़्त भी न गुज़रेगा कि किसीके मामलेमें ग़ौर और खोजका सहारा लेना पड़ेगा।

बादशाहने हर तरहसे उस शख्सका इम्तहान लिया और उसे हर तरहसे क़ाबिल पाया। वह अक़्लमन्द था, दीन-ईमानका पाबन्द था, चाल-चलनका नेक था, ऊँचे खयाल रखता था, बातचीत करनेमें चतुर था, इनसानकी परख करनेवाला था—सभी दरबारियोंसे बढ़कर। आखिर बादशाहने उसे तरक़्क़ी देते-देते अपना वज़ीरे-आज़म बना लिया। इस ऊँचे दरजेपर पहुँचते ही उसने इतनी सूझ-बूझसे काम लिया कि उसके हुक्मकी पाबन्दी करनेमें एक भी दिल रंजीदा न हुआ। उसने आसपासके कई इलाक़ोंपर क़ब्ज़ा कर लिया, फिर भी किसीको तकलीफ़ न पहुँचायी। उसकी क़लमसे कभी किसीकी बुराई नहीं निकली। उसके ऊँचे खयालोंसे मुल्ककी तरक़्क़ी हो चली और तमाम ऐब देखनेवालोंकी ज़बान बन्द हो गयी। जब दुश्मनोंकी नज़रमें कोई ग़लती न आयी, तब उनको ईर्ष्या-की आगमें गेहूँकी तरह जलने-भुननेका मौक़ा भी न मिला।

बादशाहके दो ग़ुलाम थे—देखने लायक़, चाँद और सूरजकी तरह अपना जोड़ न रखते थे। दोनों सूरतमें ऐसे थे कि एक-दूसरेसे बढ़कर : सिर्फ़ आइनेमें ही अपनी मिसाल पाते थे। वे दोनों उस नये वज़ीरकी मुहब्बत-भरी, मीठी-मीठी, प्यारी-प्यारी बातोंपर निछावर हो गये, दिलसे उसके दोस्त बन गये, उसपर भरोसा करने लगे, और जब-तब उससे मिलने-जुलने के लिए जाने लगे। बस, पुराने वज़ीरके हाथमें जैसे उस नये वज़ीरकी

जड़ काटनेके लिए एक बढ़िया-सा हथियार आ गया।

एक दिन उसने मौक़ा पाते ही बादशाहसे शिकायत की, "मैं नहीं जानता कि यह शख्स कौन है, कहाँसे आया है और कैसे इतनी बदचलनीके साथ अपनी ज़िन्दगी बसर करता है। मुझे पता चला है कि आपके उन दोनों खूबसूरत गुलामोंके साथ इसका मेलजोल है और यह उनके ज़रिये खयानत (बेईमानी) करता है—दुनियाई ऐश लूटता है। जो दूर-दराज़का रहनेवाला हो, वही ऐसी बेखौफ़ीकी ज़िन्दगी बसर कर सकता है। भला उसे इस मुल्ककी दौलत और इज़्ज़तका दर्द क्यों होने चला! जो ऐसा बेशर्म है, नालायक़ है, सल्तनतकी नेकनामी मिट्टीमें मिलानेवाला है—भला वह किस तरह रियाअतका हक़दार हो सकता है? मैंने ज़िन्दगी भर शाही नमक खाया है, भला मैं मुल्ककी, हूकूमतकी तबाही देखते हुए कैसे खामोश रहूँ! मैंने ये बातें यों ही नहीं कह दी हैं, खूब जाँच-पड़ताल करनेके बाद ही आपकी खिदमतमें पेश की हैं। मैं तो इनकी आज़माइश कर ही चुका हूँ; क्या हर्ज है, आप भी इनकी आज़माइश कर लीजिए। आगे आपकी मरज़ी।"

अल्लाह करे, बुरेको कभी नेकी नसीब न हो! पुराने वज़ीरने ये बातें ऐसे बुरे पैराएमें पेश कीं, जैसे दुश्मनपर क़ाबू पा लिया हो। सच है, छोटी-सी चिनगारीसे वह आग रोशन होती है जो बड़े-बड़े दरख्तोंको भी जला डालती है। इस खबरने बादशाहको बुरी तरह झँझोड़ डाला और उसका जोश एड़ीसे चोटी तक धधक उठा। गुस्सेने उससे कहा कि नये वज़ीरको क़त्ल कर डाल; मगर सब्र और समझदारीने सिफ़ारिश की—भला अपने ताबेमें रहनेवालेको मार डालनेमें कौन-सी जवाँ-मर्दी है? इन्साफ़ इन्साफ़ है, जुल्म जुल्म; फिर इन्साफ़के बाद जुल्मके लिए जगह ही कहाँ बच रहती है! अपने ताबेदारको बग़ैर सोचे-समझे तक़लीफ़ देना इन्साफ़के खिलाफ़ है। जो तेरा तीर रखता है उसे तीरसे क्या मारता है! जब तू जुल्मसे किसीका खून करना चाहता है तो अपनी

नियामतोंसे उसकी परवरिश ही क्यों करता है ! जब उसके हुनरकी पूरी-पूरी जाँच हो चुकी थी, तब कहीं उसे शाही महलमें मुसाहबी नसीब हुई थी। अब तो जबतक उसका क़सूर न साबित हो जाये, तबतक दुश्मनके कहनेसे इसे नुक़सान पहुँचाना ग़ैरमुनासिब है।

बादशाहको बुज़ुर्गोंकी यह नसीहत याद थी : 'ऐ अक़्लमन्द, दिल भेदोंका क़ैदखाना है। जो लफ़्ज़ तेरे मुँहसे निकल जाता है, वह फिर ज़ंजीर-के ज़ोरसे भी वापस नहीं आ सकता।' बस, उसने पुराने वज़ीरकी शिकायत अपने दिलमें रख ली और चुपके-चुपके नये वज़ीरके बारेमें जाँच-पड़ताल शुरू कर दी। आखिर उसे पुराने वज़ीरकी शिकायतमें सचाईकी झलक दिखायी दी और तब उसने नये वज़ीरको बुला भेजा और बड़ी संजीदगीके साथ उससे कहा, "ऐ नेकनाम, मेरा तो खयाल था कि तू अक़्लमन्द है, ईमानदार है, सूझ-बूझ रखनेवाला है, और तेरे हाथमें सल्तनत महफ़ूज है। मैंने तो यह सोचा भी न था कि तू कमीना है, नालायक़ है, नासमझ है, और इस ऊंचे रुतबेके लायक़ हरगिज़ नहीं है। मगर इसमें ग़लती मेरी ही है, तेरी खता कुछ नहीं। जब मैं किसी बदज़ातकी परवरिश करता हूँ तो यह ज़रूरी है कि मैं अपने ही घरमें खयानतको जायज़ समझता हूँ। खैर, इनसानको भले-बुरेका नतीजा बरदाश्त करना ही पड़ता है।

नये वज़ीरने अदब-क़ायदेसे सिर झुकाया और हाथ बाँधकर जवाब दिया, "जहाँपनाहकी बात काट सकूँ, यह मेरी हैसियत नहीं। मैं तो सिर्फ़ यही कहना चाहता हूँ कि जब मेरा दामन पाक-साफ़ है तो मुझे बुरा चेतनेवालेका क्या खौफ़ हो सकता है ! मेरे दिलमें तो इस तरहकी बातें सुननेका गुमान भी नहीं था। मैं क्या जानूँ कि आपसे किसने क्या शिकायत की है, जो आप यह सब फ़रमा रहे हैं।"

बादशाह नाराज़ होकर बोला, "जो कुछ तूने किया है, लोगोंकी नज़रोंसे छिपा नहीं है। मुझे पुराने वज़ीरने सब कुछ बता दिया है। बस, अब बातें बनानेसे काम नहीं चलेगा।"

नये वज़ीरने मुसकराते हुए कहा, "पुराने वज़ीरने जो कुछ भी शिकायत की हो उसपर ताज्जुब न कीजिए। जो शख्स अपनी जगहपर मुझे देखेगा, वह मेरी बदीके सिवाय और सोचेगा ही क्या ! मैंने तो तभी उसे अपना दुश्मन समझ लिया था जब जहाँपनाहने उसे मेरा नायब कर दिया था और मन-ही-मन कहा था—शुक्र है अल्लाहका कि मेरा एक दुश्मन तो पैदा हुआ, ऐसा दुश्मन जो क़यामत तक मेरी बुराई करने-से बाज़ न आयेगा। जहाँपनाह मुझपर मेहरबानी ज़रूर करते हैं; मगर उन्हें क्या खबर कि दुश्मन मेरे पीछे खड़ा हुआ है। भला वह मुझे कब अपना दोस्त समझेगा, जब देखेगा कि मेरी इज़्ज़तमें उसकी ज़िल्लत है। इस मामलेपर एक छोटी-सी कहानी खिदमतमें पेश करना चाहता हूँ। ज़रा ग़ौरसे सुन लीजिए—

"किसी शख्सने ख्वाबमें शैतानको देखा। वह क़दमें सरो जैसा था, और उसका चेहरा चाँदकी तरह चमक रहा था। यह देखकर उस शख्स-ने शैतानसे कहा, 'आप तो खूबसूरतीमें चाँदको मात करते हैं। मगर लोगों-को आपकी खूबसूरतीकी खबर भी नहीं है। वे आपको बहुत खौफ़नाक समझते हैं और हम्मामोंमें आपकी बड़ी भद्दी तसवीरें खींचते हैं।' यह सुनकर शैतान बोला, 'वे मेरी तसवीरें नहीं हैं। मगर क़लम तो दुश्मनोंके हाथमें है। बात यह है कि मैंने जन्नतसे उनकी जड़ें उखाड़ दी हैं। इसलिए अब वे दुश्मनीसे मेरी मनचाही तसवीरें खींचते रहते हैं। मगर इससे मेरा क्या बनता-बिगड़ता है ! वे अपनी जगहपर हैं, मैं अपनी जगहपर हूँ।"

"मेरा भी क़रीब-क़रीब यही हाल है। मैं अबतक नेकनाम रहा हूँ, मगर ईर्ष्याकी आगमें जलनेवाला पुराना वज़ीर मुझे बदनाम करता है। मेरी वजहसे जिसकी इज़्ज़त कम हुई है, उसके रोषका क्या कहना ! मुझे जहाँपनाहकी नाराज़गीका खयाल क्योंकर सता सकता है, जब कि मैं बे-गुनाह हूँ और बेगुनाह होनेकी वजह बेखौफ़ हूँ। जब मेरी क़लमसे दुरुस्त तहरीर निकली है, मुझे नुक़्ताचीनी करनेवालोंको क्या परवाह हो सकती है ! अगर कोई मुलाज़िम खयानत करेगा ही नहीं तो उसे हाकिमके सामने

जवाब देनेकी फ़िक्र क्यों होने लगी!"

बादशाह उसकी बातें सुनकर हैरान रह गया, मगर अपने शाही दब्र-दबेकी वजहसे मारे ग़ुस्सेके उबल उठा और बोला, "मुजरिम अपने झूठपर चाहे जितनी ख़ूबसूरतीसे दलीलोंका मुलम्मा चढ़ाये, वह जो गुनाह कर चुका है उससे हरगिज़ बरी नहीं हो सकता। मैंने सिर्फ़ तेरे ही दुश्मनसे नहीं सुना है; बल्कि अपनी आँखोंसे भी तो देखा है। यही क्यों, तमाम रिआयामें घर-घर यह बात फैली हुई है कि तेरी निगाह बराबर उन ग़ुलामोंपर पड़ती है।"

यह सुनकर नया वज़ीर हँसा और कहने लगा, "हाँ, यह सच है और सचको छिपाना गुनाह है। मगर इसमें एक पोशीदा राज़ है। वह भी आपके सामने खोले देता हूँ। अल्लाह करे, आपकी हुकूमत और दौलत बराबर बढ़ती रहे! शायद आप जानते हैं कि ग़रीबीमें फँसा हुआ फ़क़ीर कैसी अफ़सोसभरी निगाहोंसे मालदारको ताकता है। बस, मेरा भी कुछ ऐसा ही हाल है। मेरी जवानीका वक़्त गुज़र चुका है और ज़िन्दगी यों ही खेलते-कूदते कट गयी है। मगर कभी उन्हीं ग़ुलामोंकी तरह मेरा चेहरा भी गुलाबसे टक्कर लेता था और मेरे बाज़ू बिल्लौरको मात करते थे। कभी उन्हींकी तरह मेरे बाल भी निहायत सियाह थे और मैं चुस्त क़बा पहनता था। मगर अब हाल यह है कि मैं कफ़नके इन्तज़ारमें हूँ, इसलिए कि मेरे बाल रुईकी तरह हो चुके हैं और जिस्म चरख़ा बनकर रह गया है। कभी उन्हींकी तरह मेरे मुँहमें भी दाँतोंकी क़तारे थीं : जैसे मोतियोंकी लड़ियाँ जड़ी थीं। अब देखिए कि पुराने पुरज़ेकी तरह एक-एक दाँत गिर चुका है और बात करते मेरा मुँह काँपता है। आपके वे दोनों ग़ुलाम हुस्न और जवानीके मालिक हैं। अगर कभी-कभी उनसे दो मीठी-मीठी बातें कर लेता हूँ तो मुझे अपना गुज़रा हुआ ज़माना याद आ जाता है और मैं अफ़-सोससे थोड़ी देर हाथ मल लेता हूँ। फिर सोचता हूँ कि वह बेहतरीन ज़माना ख़त्म हो चुका है, तो यह बदतरीन ज़माना भी ख़त्म हो रहा है। अब आप

ही फ़ैसला लीजिए कि इस न-कुछ बातमें भी कौन-सा जुर्म है।"

जब उस अक़्लमन्दने अपनी यह सफ़ाई पेश की तब बादशाह ताज्जुबमें आकर उसका मुँह ताकने लगा। फिर दरबारियोंकी तरफ़ नज़र उठाकर बोला, "अब इस बुज़ुर्गसे बात करना बेकार है। भला कोई अपनी सफ़ाईमें इससे ज़्यादा और क्या कह सकता है! बताइए, इसमें गुनाह और जुर्मकी गुंजाइश कहाँ है? अगर मैं सब्र और समझदारीसे काम न लेता, दुश्मनकी बातोंमें आ जाता, तो एक बड़ी जवाबदेहीका शिकार बन बैठता। गुस्सेमें आकर जल्दीसे तलवार खींच लेनेका नतीजा यह निकलता है कि आखिरमें इनसानको शर्मिन्दा होना पड़ता है। इसलिए बुज़ुर्गोंने कहा है—ग़रज़मन्दकी शिकायतपर कान देना ठीक नहीं।"

इसके बाद सचमुच फ़ैसलेकी बारी आयी। बादशाहने नये वजीरका रुतबा और भी बढ़ा दिया और पुराने वज़ीरकी बहुत-कुछ लानत-मलामत की। अपनी अक़्लमन्दी और सूझ-बूझके लिए नये वज़ीरका नाम मुल्कों-मुल्कोंमें फैल गया। उसने बरसों बड़े रहम और इन्साफ़के साथ हुकूमत की। इसके बाद वह चल बसा और दुनियामें अपनी नेकनामी छोड़ गया।

सचमुच वह बादशाह रिआयाके लिए नियामत है, जो ग़ुस्सेपर क़ाबू रखता और सब्रसे काम लेता है। क़त्लसे पहले क़ैद करना बेहतर है, इसलिए कि कटा हुआ सिर जुड़ना ग़ैर-मुमकिन है। जो बादशाह हुक्म, तजवीज़ और समझदारीसे काम करना जानता है वह लोगोंके शोरग़ुलसे परेशान नहीं होता। मगर जिसका सिर ग़रूरसे भरा हुआ है और सब्रसे खाली है उसपर शाही ताज हराम है। मैं यह नहीं कहता कि बादशाह जंगपर क़ायम न रहे; हाँ, जब ग़ुस्सा आये तब अक़्लसे काम ले। सब्र करना वही जानता है जो अक़्ल रखता है—ऐसी अक़्ल, जिसपर दुश्मन हाथ न रखने पाये। जब ग़ुस्सेका लश्कर मैदानमें निकल पड़ता है तब न इन्साफ़ रहता है, न परहेज़ और न दीन। मैंने आसमानके नीचे ऐसा शैतान दूसरा नहीं देखा जिसके खौफ़से फ़रिश्ते भी भागते नज़र आयें।

४

एक बारकी बदनामी पचास बरसकी नेकनामीको खा जाती है

शरअके हुक्म बग़ैर पानी पीना भी मना है और फ़तवेके मुताबिक़ ख़ून करना भी वाजिब है। अगर शरअ किसीको क़त्ल करनेका फ़तवा देती हो, तो तुझे उसके क़त्ल करनेसे मुँह मोड़नेकी ज़रूरत नहीं। मगर शर्त यह है कि उसके कुनबेमें जो लोग बाक़ी हों उनकी हिफ़ाज़तका इन्तज़ाम कर और उनको पूरा-पूरा आराम पहुँचा; इसलिए कि ग़लती तो ज़ुल्म करनेवालेकी थी और इसमें उसके बीबी-बच्चोंकी कोई ख़ता न थी।

अगर तुझमें क़ूवत है, और तेरे पास बड़ा लश्कर भी है, तो उसे दुश्मनके मुल्कमें मत भेज; इसलिए कि दुश्मन तो ऊँचे क़िलेपर चढ़ जायेंगे और बेगुनाह रैयत तबाह होगी। फिर ज़रा उन लोगोंकी भी खोज-ख़बर ले जो तेरी क़ैदमें हों। मुमकिन है कि उनमें भी कुछ बेगुनाह निकल आयें।

अगर कोई सौदागर तेरे मुल्कमें मर जाये, तो यह निहायत शर्मकी बात है कि तू उसका माल-असबाब ज़ब्त कर ले। उसके बाद उसके कुनबेवाले रोयें और आपसमें यह कहें कि वह ग़रीब तो सफ़र करते चल बसा और उसकी तमाम जमा-पूँजी ज़ालिमने लूट ली। भला इसमें तुझे कौन-सी नामवरी हासिल हुई?

उस यतीम बच्चेकी आह मोल लेनेकी कोशिश मत कर जो उसके तड़पते-तरसते हुए दिलसे निकलती है। जो आदमी बड़ी मुश्किलसे पचास बरसमें नेकनामी कमाता है, वह एक बारकी चूकसे बदनामीके गढ़ेमें जा गिरता है। जो भले आदमी नामवरी कमा चुकते हैं वे जनताके मालपर नज़र भी नहीं उठाते। अगर तू तमाम दुनियाका भी बादशाह है और किसी मालदारसे ज़बरदस्ती माल छीनता है तो फ़क़ीर है। आज़ाद

आदमी ग़रीबीकी हालतमें भूखों भले ही मर जाये, किसी बेगुनाहके मालसे पेट नहीं भरता।

●

५

तू भी किसीके दरवाज़ेपर उम्मीदवार होता है

किसी ज़ालिमने ईराकमें खबर पायी कि एक मुहताज शाही महलके नीचे खड़ा था और पुकार लगा रहा था—

"तू भी किसीके दरवाज़ेपर उम्मीदवार होता है, तो तू उनकी भी मुराद पूरी कर जो तेरे दरवाज़ेपर उम्मीद बाँधे बैठे हैं। तू दर्दमन्दोंके दिलको क़ैदसे, दर्दसे रिहाई दिला, ताकि तेरा दिल भी दर्दमन्द न रहे। यही तेरा दीन है—यही तेरा ईमान है।

"जो बादशाह होता है वह मज़लूमकी परेशानी दूर करनेके लिए, अगर ज़रूरत पड़ती है तो, तख्तपर भी लात मार देता है। मगर एक तू है जो दोपहरमें महलकी ठण्डकमें आरामसे सोता है, भले ही ग़रीब चिलचिलाती धूपमें जलते रहें। मगर इतना याद रख कि जिस मज़लूमकी फ़रियाद बादशाह नहीं सुनता उस मज़लूमकी फ़रियाद अल्लाह सुनता है!"

●

६

बादशाह रिआयाका ग़म नहीं देख सकता

बग़दादके हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़के पास एक बड़ी ख़ूबसूरत अँगूठी थी। उसमें जो नगीना जड़ा हुआ था वह इतना क़ीमती था कि बड़े-बड़े जौहरी भी उसकी क़ीमतका अन्दाज़ नहीं लगा सकते थे। यही क्यों, वह नगीना रातको तारेकी तरह दमकता था और उससे दिनका उजाला छिटकने लगता था।

इत्तेफ़ाक़न् एक साल बादलोंने जो दग़ा दी तो मुल्कमें सूखा पड़ गया। अब लोगोंकी तकलीफ़का क्या कहना था! उनके चाँदसे चेहरे जैसे ग्रहणमें जा दबे। यह देखकर हज़रत उमरको बेचैनीका पार न रहा। आख़िर वह बादशाह थे, बादशाहका फ़र्ज़ समझते थे—फिर अपनी रिआयाको ज़हर पीते देखकर ख़ुद कैसे शरबत पी सकते थे! उन्होंने फ़ौरन सरकारी ख़ज़ाना खोल दिया और भूख-प्याससे मरते हुए लोगोंको बचानेकी भरपूर कोशिश की।

धीरे-धीरे ख़ज़ाना भी ख़ाली हो गया, मगर भूखोंका पेट न भरा। अब क्या किया जाये, भूखोंकी भूख किस तरह बुझायी जाये? हज़रत उमरने अपनी उँगलीसे वह अँगूठी निकालकर एक दरबारीकी तरफ़ बढ़ा दी और उसे हुक्म दिया, "जाओ, इसे बेच दो। मुझसे भूखों मरते हुए लोगोंका ग़म नहीं देखा जाता!"

इसपर कुछ दरबारियोंने कहा, "यह क्या करते हैं आलमपनाह! अकाल तो एक दिन ख़त्म हो ही जायेगा, मगर ऐसी बेजोड़ चीज़ फिर कभी न मिलेगी।"

हज़रतके गालोंपर मोमकी तरह आँसू बह निकले। उन्होंने रुँधे हुए

गलेसे फ़रमाया, "जिस बादशाहकी रिआयाका दिल चोटोंसे चूर-चूर हो रहा है, उसे भला कहीं बनावट-सजावट अच्छी लगती है ? आप लोग ही बताइए, मेरी रिआया दाने-दानेको तरस रही है; ऐसी हालतमें क़ीमती जेवरात पहनना मेरे लिए कहाँतक वाजिब कहा जा सकता है ?"

कहनेका मतलब यह कि हज़रतने लोगोंके समझाने-बुझानेकी ज़रा भी परवाह न की, वह अँगूठी बेच दी और जो धन हाथ आया उससे एक हफ़्ते तक अपनी भूखी-प्यासी रिआयाको खिलाया-पिलाया।

मुबारक है वह बादशाह, जो रिआयाके आरामको अपने आरामसे ऊपर समझता है। मगर जो बादशाह रिआयाके ग़मसे खुश होता है, वह रिआयामें नफ़रतकी नज़रसे देखा जाता है। अगर बादशाह तख़्तपर बेफ़िक्र सोता रहे, तो फ़क़ीरको भी नींद नहीं आती और अगर बादशाह रातको जागता रहे, तो उसकी रिआया मज़ेसे मीठी-मीठी नींद लिया करे।

७

जनताकी सेवा परमेश्वरकी पूजा है

सुल्तान जंगीके बाद उसका बेटा तुक़लह ईरानके तख़्तपर बैठा। दब-दबेके लिहाज़से वह अपने बुज़ुर्गोंसे भी आगे बढ़ गया था—इतना आगे कि अपनी मिसाल आप ही था। उसके खौफ़से कोई किसीको सतानेका नाम भी न लेता था।

हुकूमत करते-करते शायद तुकलहकी तबीयत ऊब उठो। उसने एक मर्तबा किसी पहुँचे हुए फ़क़ीरसे मुलाक़ात की और कहा, "मेरी उम्र बेकार

गुज़री जा रही है। यह ताज और तख़्त तो मुझे उजड़ती हुई दौलत जान पड़ते हैं। मेरा खयाल है कि सच्ची दौलत तो फ़क़ीरके साथ ही जाती है। मैं चाहता हूँ कि अब कहीं एकान्तमें जा बैठूँ और अपना मन अल्लाहकी इबादतमें लगाऊँ। ज़िन्दगीकी जो थोड़ी-सी मुद्दत बाक़ी है उसमें अल्लाह-को पानेकी कोशिश करूँ।"

फ़क़ीर कोरा फ़क़ीर ही न था : काफ़ी अक़्लमन्द था, ऊँचे खयाल रखने और भले-बुरेको परख करनेवाला। बादशाहकी बात सुनते ही बहुत नाराज़ हुआ और बोला, "ऐ तुकलह, होशकी बातें कर। अल्लाहको हासिल करनेका यह रास्ता नहीं है। भला रोज़े, नमाज़, तसबीह और गुदड़ीमें क्या धरा है! तू जनताकी जो खिदमत कर रहा है, तेरे लिए वही अल्लाहकी बेहतरीन इबादत है और उसीसे तुझे अल्लाह मिलेगा। फिर भी तुझे तसल्ली न हो, तो सुल्तानी तख़्तपर बैठकर ही अल्लाहकी तरफ़ मुहब्बत बढ़ा और दरवेश बन। सचाई और विश्वासकी ज़िन्दगी गुज़ार और झूठ और सख़्तीकी तरफ़से ज़बान बन्द रख। अल्लाहके रास्ते-में तो अमल होना चाहिए, दुआ नहीं। अमलके बग़ैर तो दुआ बेकार साबित होती है। जो बुज़ुर्ग यह भीतरी भेद समझते हैं वे फ़िक्रके चिथड़े-को क़बाके अन्दर छिपाकर रखते हैं।"

●

८

तू अपनी फ़िक्र कर

मैंने सुना है कि एक कोई बड़ा आलिम था—सब तरहके इल्म वह जानता था। एक बार रूमका सुल्तान उसके पास पहुँचा और बोला,

"दुश्मनके हमलोंसे मेरी तमाम ताक़त क़रीब-क़रीब खत्म हो

चुकी है। बस, अब इस क़िले और शहरके सिवाय मेरे पास कुछ बाक़ी नहीं है। मैंने बहुत चाहा कि मेरे बाद मेरा बेटा ही हुकूमतका मालिक बने; मगर दुश्मनकी ताक़त इस क़दर बढ़ गयी है कि उसने मेरी जवाँमर्दी और कोशिशका हाथ मोड़ दिया है। इस ग़मने मेरा जिस्म भी खा लिया है उसमें जानका जैसे और पता भी नहीं है। बताइए, अब मैं क्या तदबीर करूँ—किस इलाजका सहारा लूँ, जो इस बीमारीसे छुटकारा पा सकूँ?"

यह सुनकर वह आलिम बहुत खफ़ा हुआ और कहने लगा, "यह रोना कैसा! मुझे तो तेरी हिम्मत और अक़्लपर रोना आता है! हुकूमत-का ग़म क्या खाता है, अपना ग़म खा। तेरी उम्रका जो बहुत-सा ज़माना गुज़र चुका है, तुझे नसीहत करनेके लिए वही काफ़ी है। जब तू यहाँसे चल देगा तब यह जगह, यह हुकूमत भी दूसरेकी हो जायेगी। तू चाहे अक़्लमन्द हो चाहे नादान, उसका ग़म न खा, इसलिए कि उसे अपना ग़म खुद खायेगा। यह दुनिया तो जहाँकी-तहाँ रहनेवाली है: भला इसमें इतनी मशक़्क़त उठाना कब लाज़िम है कि तलवारके ज़ोरसे मुल्क फ़तह करना और फिर यहीं छोड़ जाना! तू अपनी फ़िक्र कर, तेरे बाद जो अक़्लमन्द होगा वह अपनी फ़िक्र खुद कर लेगा।

"चार दिन क़ायम रहनेवाली इस ज़िन्दगीपर क्या भरोसा करना और क्या इतराना! इसी लिए ग़ौर और फ़िक्रके बाद अपने चलनेकी फ़िक्र कर। भला ऐसा कौन-सा मुल्क है और कौन-सा ताज है जो ऊपर उठकर नीचे न गिरा हो? अल्लाहके सिवाय और किसका मुल्क रहता है? यह दुनिया न हमेशा रहनेकी जगह है, न यहाँ हमेशा किसीके रहनेकी उम्मीद है। जो चाँदी-सोने और खज़ानेका मालिक बना वह थोड़ा-सा ज़माना गुज़रनेके बाद ही नेस्त-नाबूद हो गया। पर जिसकी नेकी ज़ाहिर है, उसकी रूहपर हमेशा अल्लाहकी मेहरबानी पहुँचती है। अगर किसी शख्सका नेकनाम बाक़ी है तो सब लोग कहते हैं—हाँ वह अभी बाक़ी है!

"यह खयाल रख कि तू ग़ैरोंपर मेहरबानी करेगा तो बेशक काम-

यावीका फल चखेगा। इसीलिए बराबर नेकी और ख़ैरातके काम किये जा और यह न भूल कि क़यामतके दिन लोगोंको एहसानके मुवाफ़िक़ ही दरजे मिलेंगे। जो शख्स कोशिशका क़दम बढ़ाता है वही अल्लाहकी दरगाहमें बड़ा रुतबा रखता है। मगर जो पीछे रहता है, मानो वह अमानतमें ख़यानत करता है, शर्मसे झुकता है, और आखिर अपनी ना-तजरुबेकारीकी वजहसे छिपता फिरता है। जब तन्दूर गरम हो और रोटी पकानेवाला अपना काम छोड़ बैठे, तो फिर क्यों न शरमिन्दगी उठाये ? तुझे नहीं मालूम कि बीज छिटकते वक़्त जो सुस्ती की जाती है वह ग़ल्ला उठाते वक़्त किसानके सामने क्या नतीजा लाती है ?"

●

९

दोस्तके दुश्मनसे दोस्ती कैसी !

शामके इलाक़ेमें एक फ़क़ीर था जिसका नाम ख़ुदादोस्त था। वह दुनियाकी तमाम उलझनोंपर लात मारकर एक पहाड़ी गुफ़ामें जा बसा था। उस अंधेरे कोनेमें सिर्फ़ सन्तोष ही उसका साथी था। वह बराबर सब्रकी साँस लेता और अपने मालिकका एहसान मानता था। बड़े-बड़े अमीर-उमराव उसके दरवाज़ेपर सिर झुकानेके लिए आते थे; इसीलिए कि वह किसीके दरवाज़ेपर सिर झुकानेके लिए नहीं जाता था। यही सच्चे फ़क़ीरकी ख़ूबी है। उसकी तो बस, एक ही तमन्ना होती है—भीख माँगकर भले ही खा ले, मगर लालचकी हवा उसके पास फटकने न पाये। वह जानता है कि जब इनसानकी भोगेच्छा हर घड़ी पुकार लगाती है—ला-

ला, दे—तब उसे अपने मानका मोती धूलमें मिलाकर दर-दर भटकना पड़ता है।

उन दिनों शामका जो बादशाह था वह निहायत ज़ालिम था। वह जिसे कमज़ोर पाता उसे ही ज़बरदस्ती सताता था। धीरे-धीरे उस ज़ालिमके कड़वे स्वभावसे लोगोंका दिल खट्टा हो गया और सारा मुल्क हाहाकार कर उठा। जब उसका ज़ुल्म हदसे ज़्यादा बढ़ गया, तब दीन-दु:खी आँसू बहा-बहाकर उसे कोसने लगे। जो पैरोंमें ताक़त और दिलमें हिम्मत रखते थे, वे मुल्क छोड़कर भाग निकले और गाँव-गाँव, शहर-शहर भटकते हुए उसकी बदनामीका ढिंढोरा पीटने लगे। सच है, जहाँ ज़ुल्मका हाथ लम्बा होता है वहाँ कोई शख्स क्योंकर हँस सकता है?

फिर भी बादशाहमें एक बात थी। वह ख़ुदादोस्तकी क़ीमत समझता था और कभी-कभी उसकी ज़ियारत करने भी जाता था। मगर ख़ुदादोस्त उसकी तरफ़ नज़र उठाकर भी नहीं देखता था। आख़िर एक मर्तबा बादशाहने उससे कहा, "ऐ नेकबख्त हज़रत, आप मुझपर नज़र पड़ते ही नफ़रतसे मुँह फेर लेते हैं। आप जानते हैं कि मैं आपसे मुहब्बत करता हूँ, फिर आप किस वजह मुझसे यह दुश्मनी रखते हैं? मैंने माना कि मैं दुनियाका सरदार नहीं हूँ, मगर इज़्ज़तमें किसी फ़क़ीरसे कम भी तो नहीं हूँ। मैं यह नहीं कहता कि मुझे औरोंसे बढ़कर समझिए, मगर जिस तरह सबसे मिलते हैं, उसी तरह मुझसे भी मिलिए।"

जब यह बात उस होशियार फ़क़ीरने सुनी, तब वह निहायत दुखी हुआ और बोला, "ऐ बादशाह, होशमें आ! तेरे अस्तित्वसे रिआया हैरान है, परेशान है। भला मैं उसकी हैरानी, उसकी परेशानी, कैसे बरदाश्त करूँ! जब तू मेरे दोस्तोंका दुश्मन है, तब मैं तुझे अपना दोस्त क्योंकर समझूँ! अगर मैं तुझसे दोस्ती कर लूँगा तो शायद अल्लाह तेरा दुश्मन हो जायेगा। तू ख़ुदादोस्तकी खाल भले ही खींच ले, वह दोस्तके दुश्मनसे तो हरगिज़ दोस्ती न करेगा। उसे तो उस संगदिलके ख्वाबसे भी ताज्जुब

होता है जिससे मुल्कका-मुल्क दुखी है। अगर तुझे अक़्ल है, होश है, तो खबरदार हो : रहम और सखावतकी तरफ़से कमर कस और रिआयाको खुश रखनेकी कोशिश कर।"

•

१०

.जालिमके दाँत .खुद उखड़ जायेंगे

ऐ ज़बरदस्त, अपने हाथकी छायामें रहनेवालोंपर हदसे ज़्यादा ज़ुल्म न कर, इसलिए कि दुनिया हमेशा एक ही तर्ज़पर नहीं चलती रहती। बस, किसी कमज़ोरका हाथ मत मोड़, इसलिए कि अगर वह मौक़ा पायेगा, तो अदना-सी चीज़के ज़रिये तुझपर ग़ालिब आ जायेगा। किसीका पैर उसकी जगहसे मत उखाड़, इसलिए कि कभी तेरा भी पैर उखड़ जायेगा, और जब तू गिर पड़ेगा तब बहुत परेशान होगा।

दोस्तोंका दिल हाथमें लिये रह, इसलिए कि वे पराये न हो जायें। यह ख़याल रख कि खज़ाना भले ही खाली पड़ा रहे, मगर किसीको तक़लीफ़ न पहुँचे। किसीके काममें बेजा देर मत कर, इसलिए कि मुमकीन है कभी ऐसा भी मौक़ा आ जाये जब तुझे उसके पैरोंपर गिरना पड़े।

ऐ कमज़ोर दुखी इनसान, ज़बरदस्तकी सख्तीपर सब्र कर और उस मालिकपर भरोसा रख; मुमकिन है कि एक रोज तू उस ज़ालिम ज़बरदस्तसे भी ज़्यादा ताक़तवर हो जाये। लड़नेवाला कोई भी क्यों न हो, अगर वह सामने आये तो हिम्मतसे उसका मुक़ाबला कर! यह खयाल रख कि बाज़ूकी क़ूवत ज़ुल्मके पंजेसे कहीं बेहतर होती है।

मज़लूमके सूखे हुए होंठोंसे कह दो कि वे हँसनेकी कोशिश न करें,

इसलिए कि ज़ालिमके दाँत कभी .खुद-ब-.खुद उखड़ जायेंगे। सरदार तो ढोलकी आवाज़पर जागा है, भला उसे क्या ख़बर कि बेचारे पहरेदारकी रात किस तरह गुज़री है !

ताज्जुब है कि क़ाफ़िलेवालेको अपने बोझका तो ख़याल है, मगर बोझ ढोनेवाले ज़ख्मी गधेका ज़रा भी ग़म नहीं है। यह मैंने माना कि तू गिरा हुआ नहीं पड़ा है, मगर जब हैरान-परेशान हो चुका है तब सम्हलनेकी कोशिश क्यों नहीं करता ?

●

११

काँटे बोकर कोई चमेली कहाँसे पायेगा

मैंने सुना है कि एक रात दीन-दुखी रिआयाकी आहसे जो आग उठी, उसने आधा बग़दाद जलाकर खाकमें मिला दिया। जब सवेरा हुआ तब एक शख्स खुश होकर बोला, "या अल्लाह, तेरा लाख-लाख शुक्र है कि मेरी दूकानको ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुँचा।"

यह सुनकर किसी तजरुबेकारने कहा, "ऐ खुदग़र्ज़ इनसान, तुझे सिर्फ़ अपना ही ग़म था ! अगर तेरा मकान एक किनारेपर होता, तो शायद तू यही पसन्द करता कि सारा शहर आगमें जल जाये ! सच है, जब लोग फ़ाक़ेसे पेटपर पत्थर बाँधते हैं तब संगदिलके सिवाय और कौन अपना मेदा तंग कर सकता है ? मगर जब कोई मोमदिल भला इनसान देखता है कि फ़क़ीर मशक़्क़त उठा रहा है, तब लुक़्मेसे हाथ खींच लेता है।"

जो तीमारदार रात-दिन बीमारका ग़म खाता है, वह तन्दुरुस्त है—यह समझना भूल है। नरमदिल यार अपनी मंज़िलपर ज़रूर पहुँच जाता

है, मगर चैनकी साँस नहीं लेता—सिर्फ़ इस खयालसे कि उसके बहुत-से साथी पीछे रह गये हैं। बादशाहका दिल फ़िक्रके दरियामें डूब जाता है, जब वह देखता है कि उसका बोझ ढोनेवाले गधे दलदलमें फँस गये हैं। अगर नेकीके घरमें कोई है, तो उसके लिए सादीकी नसीहतमें-से एक ही हरफ़ काफ़ी है। अगर तू सुनता है, तो तुझे यही काफ़ी है कि जो काँटा बोता है वह चमेली कहाँसे पा सकता है!

●

१२

मौतके दामनमें सब बराबर हैं

यह मत कहो कि सल्तनतसे बढ़कर कोई रुतबा नहीं है। सल्तनत फिर भी ग़ैरमहफ़ूज़ है, मगर फ़क़ीरोंका मुल्क तो हर तरह महफ़ूज़ है। जिनपर बोझ हलका होता है वे तेज़ चलते हैं, यह बात बिलकुल सच है—दिल रखनेवाले सुन-समझ लें। ग़रीबको सिर्फ़ एक रोटीकी फ़िक्र होती है, मगर अमीरके पीछे तो जहान-भरकी फ़िक्र पड़ी रहती है। फ़क़ीरको जब शामकी रोटी मिल जाती है, तब वह इतनी बेफ़िक्रीसे सोता है जैसे शामका बादशाह ही हो।

खुशी और ग़म देखते-देखते गुज़र जाते हैं। इनसानके मरनेपर ये दोनों उसके दिमाग़से निकल जाते हैं—क्या वह, जिसके सिरपर ताज हो, और क्या वह, जिसकी गरदनपर खिराज हो। बेशक कोई मालदार ऊँचे महलमें आराम करता है और कोई मुसीबतज़दा जेलमें सिर धुनता रहता है, मगर जब दोनों मौतके दामनमें पहुँचते हैं तब उन दोनोंमें किसीकी शनाख्त नहीं रह जाती। कोई नहीं कह सकता कि यह अमीर है और यह फ़क़ीर।

●

१३

मुरदोंकी आवाजसे उठनेवाली नसीहत

मैंने सुना है बहुत दिन बीते दजला नदीके किनारे एक इनसानकी खोपड़ी पड़ी हुई थी। एक दिन वह किसी इबादत-गुज़रसे बोली,

"ऐ आबिद, मैं कभी शाही दबदबा रखती थी और मेरे सिरपर शाही ताज जगमग-जगमग होता था। आसमानने मुझपर रहमकी नज़र-की, फ़तह मेरे पीछे-पीछे चली और मैंने देखते-देखते ईराकपर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया।

"फ़तह इनसानके हौसलेमें चार चाँद लगा देती है। मैं मन्सूबे बाँध रही थी कि लगे हाथ किरमान भी फ़तह कर लूँ; मगर अचानक मुझे मौत ने आ दबोचा और कीड़ोंने मेरा सिर खा लिया। बस, अपने कानोंसे ग़फ़लतकी रूई निकाल डाल, ताकि तुझे मुरदोंकी आवाज़से उठनेवाली नसीहत हासिल हो सके।"

●

१४

बद इनसान लोहे-पत्थरसे बदतर है

भला आदमी कभी बुरा नहीं हो सकता। भला वह बदी क्यों क़बूल करने चला जो अपनेको ज़िन्दगी-भरके लिए नेकीपर क़ुरबान कर चुका है? मगर फ़ितनासाज़ हमेशा बदी ही करता है—उसी तरह, जिस तरह बिच्छू अपने घरमें बहुत कम जाता है, बस डंक चलानेके लिए इधर-उधर फिरता

रहता है। अगर तेरी ज़ातसे किसीको नफ़ा नहीं पहुँचता तो तू वह सख्त पत्थर है जिससे किसी तरहको उम्मोद करना बेकार है।

नहीं-नहीं, मैंने ग़लत कहा—ऐ भले स्वभाववाले दोस्त ! लोहे-पत्थर वग़ैरहमें तो फिर भी नफ़ा रहता है; मगर बद आदमी तो उनसे हर तरह बदतर होता है। भला ऐसे आदमोको ज़िन्दगी किस कामकी जिसके मुक़ा-बले पत्थर भी बहुत-कुछ बड़प्पन रखता है। सच पूछो तो हर आदमी चौपायेसे बढ़कर नहीं है, बल्कि बद आदमी तो दरिन्देसे भी बदतर है। हाँ, नेक इनसान—अक़्लमन्द इनसान—चौपायेसे अच्छा होता है, न कि वह इनसान जो दरिन्देकी तरह हमला करता है।

जो इनसान खाने और सोनेके सिवाय कुछ नहीं जानता, वह चौपायेसे बढ़कर कैसे हो सकता है ? अगर बद-नसीब सवार टेढ़ीमेढ़ी राह चलेगा तो यक़ीनन प्यादा उससे पहले मंज़िलपर पहुँच जायेगा। जिस शख्सने नेकनसीवीका बीज न बोया हो, भला वह क्योंकर दिली-मक़सदके खलियान-से नफ़ा उठा सकेगा ? मैंने अपनी उम्रमें हरगिज़-हरगिज़ यह नहीं सुना कि बद इनसानने कभी नेकीके फलका ज़ायक़ा चखा हो।

●

१५

बदी करके नेकीकी उम्मीद क्यों ?

एक सरदार बड़ा ज़ालिम था। वह अपने बाज़ुओंमें इतनी ताक़त रखता था कि उसके सामने बड़े-बड़े शेरमर्द भी मादाकी नाईं जाते थे। आखिर एक दिन बादशाहने नाराज़ होकर उसे किसी सूखे कुएँमें फिकवा दिया। इस तरह बदी करनेवाला खुद बदीका शिकार बन बैठा। अब तो

वह बहुत परेशान हुआ। बेचारा सारी रात एक झपकी भी न ले सका। बस, रो-रोकर अल्लाह तक अपनी फ़रियाद पहुँचाता रहा। सवेरा होते-होते एक शख्स कुएँपर आया। उसने एक पत्थर फ़ेंककर सरदारके सिरपर मारा और कहा, "तूने भी कभी किसीकी फ़रियाद सुनी थी? फिर आज यह उम्मीद क्यों करता है कि कोई तेरी फ़रियाद सुनेगा? जब तू नालायक़ीका बीज बो चुका है, तब ज़रा छातीपर पत्थर रखकर देख कि उससे कैसा-क्या फल पैदा होता है। तेरे जख्मपर कोई क्यों मरहम रखे, जब कि बेशुमार दिल तेरे किये हुए ज़ख्मोंसे आँसू बहा रहे हैं! तूने हमारे लिए रास्तेमें कुआँ खोदा था: यह तो अल्लाहकी शान है कि तू खुद कुएँमें जा गिरा! दुनियामें दो शख्स खास और आमके लिए कुआँ खोदते हैं—पहला वह नेकनाम जो नेकीसे अपने मालिकको याद करता है; दूसरा वह बदनाम जो बदीसे अपनी तबीयत खुश रखता है। पहला तो इसलिए कुआँ खोदता है कि प्यासे उससे अपनी प्यास बुझायें और दूसरा इसलिए कि लोग उसमें गिर-गिरकर आँसू बहायें।

"अगर तू बदी करता है तो नेकीकी उम्मीद क्यों रखता है? भला कहीं झाऊपर भी अंगूर फलता है! अगर तूने पतझड़के मौसममें जौ बोये हैं तो मुझे उम्मीद नहीं है कि फ़सल आनेपर तुझे गेहूँ मिलेंगे। तू भले ही थूहड़के दरख्तको जी-जानसे पाला कर, मगर यह खयाल मत रख कि उसपर मीठे फल लगेंगे। कनेरके दरख्तसे कब किसने छुहारे पाये हैं! बस, तूने जैसा बीज बोया है, वैसा दाना लुननेके लिए तैयार रह।"

●

१६

बार-बार गिरनेके बाद आदमी कम ही उठ पाता है

एक बादशाह बीमार पड़ा। उसने बहुत-कुछ इलाज कराया। मगर उसे फ़ायदा नज़र न आया; यहाँतक कि वह धीरे-धीरे सूखकर काँटा हो गया। बदनकी कमज़ोरीने उसे इस तरह गिरा दिया कि वह दुबले-पतले लोगोंको भी देखकर मारे जलनके हाथ मलने लगा। बस, वह शतरंजका शाह बनकर रह गया जो बिसातपर नाम तो ज़रूर कमाता है मगर जब घिर जाता है तब पैदलसे भी गया-बीता हो जाता है।

आखिर एक मुसाहिबने ज़मीन चूमते-चूमते उससे कहा, "अल्लाह हुज़ूरकी उम्र बड़ी करे! अपने शहरमें फ़क़ीर तो बहुत हैं, मगर उनमें एक ऐसा है जो वाक़ई पहुँचा हुआ है। लोग मनोरथ ले-लेकर उसके पास जाते और बातकी-बातमें अपना-अपना मतलब हासिल कर लेते हैं। अगर उसे बुला भेजें और वह आपके लिए दुआ करे, तो मुझे यक़ीन है कि अल्लाहकी रहमत आसमानसे उतर आये और आपकी बीमारी काफ़ूर हो जाये।"

बादशाह बिगड़कर बोला; "फिर पूछते क्यों हो? उस पीरको बुलाते क्यों नहीं? जाओ, उसे ले आओ; देर मत करो।"

बादशाहका यह हुक्म हुआ, तो कुछ दरबारी जल्दी-जल्दी गये और बड़ी इज़्ज़तके साथ उस फ़क़ीरको ले आये। फ़क़ीरपर नज़र पड़ते ही बादशाहने बिस्तरसे उठते-उठते कहा, "शाह साहब, मेरे लिए अल्लाहसे दुआ कीजिए। देखिए, मैं सूईका वह धागा हो रहा हूँ जो किसी भी वक़्त एक ज़रा-से झटकेमें टूट सकता है। आपकी दुआ मुझे नयी ज़िन्दगी देगी।"

यह सुनते हुए फ़क़ीरकी झुकी हुई पीठ और भी झुक गयी। वह नाराज़ होकर बड़ी ही कर्कश आवाज़में बोला, "अल्लाह अपना रहम तो

उसपर रखता है जो उसके बन्दोंपर रहम करता है। तू मुल्कका सरदार है, मगर हमेशा ग़फ़लतकी नींद लेता रहा है। बता, तूने कब-कब ज़मानेके उलट-फेरका खयाल किया है। बता, तूने कब-कब इन्साफ़से काम लिया है। बता, तूने कब-कब ग़रीबों-मोहताजोंका ग़म खाया है। भला मेरी दुआ तुझे क्या फ़ायदा पहुँचायेगी, जब कि बेगुनाह क़ैदी और पीड़ित कुओंमें पड़े-पड़े छटपटा रहे हैं ? जब तू अपनी रिआयाके साथ उदारतासे पेश नहीं आता, तब दौलत भी तुझे क्यों आराम देने चली ! पहले अपनी ग़लतीपर तोबा कर, इसके बाद शेखसे दुआकी उम्मीद रख। भला शेखकी दुआ तब-तक क्या असर करेगी जबतक पीड़ितोंकी बददुआएँ तेरे पीछे लगी हुई हैं ?"

फ़क़ीरकी ये कड़वी-तीखी बातें बादशाहके दिलमें तीरकी तरह चुभ गयीं। उसने मारे शर्मके अपनी गरदन झुका ली और कहा, "आप दुरुस्त फ़रमाते हैं शाह साहब ! बीमारीकी अस्ल वजह मैं समझ गया। इसलिए अल्लाहसे माफ़ी माँगता और अपनी ग़लतियोंपर हमेशाके लिए तोबा करता हूँ।"

इसके साथ ही उसने फ़रमान जारी किया कि जितने भी बेगुनाह क़ैदी और पीड़ित क़ैदमें पड़े हुए हैं वे सब फ़ौरन रिहा कर दिये जायें और सरकारी खज़ानेसे ग़रीबों-मोहताजोंकी एक-एक कर सभी तकलीफ़ें दूर की जायें।

अब तो फ़क़ीर बहुत खुश हुआ। उसने नमाज़ पढ़ी, फिर दुआके लिए दोनों हाथ हवामें फैला दिये और कहा, "ऐ आसमान बुलन्द करनेवाले मालिक, इस अभागेने तुझसे जंग छेड़ रखी थी और तूने इसकी तन्दु-रुस्तीपर क़ैद लगा दी थी। अब इसने तुझसे माफ़ी माँग ली है, सुलह कर ली है; लिहाज़ा इसे माफ़ कर दे—तन्दुरुस्ती बख्श दे !"

फ़क़ीर यह दुआ कर ही रहा था कि बादशाह उठकर बैठ गया। उसे ऐसा मालूम हुआ जैसे नयी ज़िन्दगीकी लहर उसकी नस-नसमें दौड़ रही है

और वह मारे ख़ुशीके अभी आसमानमें उड़ जायेगा। अब तो उसका वही हाल हुआ जो बरसातके बादल देखकर मोरका होता है। उसने हुक्म दिया कि फ़क़ीरके सिर और पैरोंपर मोतियोंके थाल निछावर किये जायें।

फ़क़ीरने उस निछावरसे फ़ौरन अपना दामन झाड़ा और कहा, "झूठकी वजहसे सचको छिपाना ग़ैर वाज़िब है। अब ऐसी हरकत कभी न करना। कहीं ऐसा न हो कि बीमारी धर दबाये। जब तू एक मरतबा गिर चुका है, तब क़दम सँभाल-सँभालकर चल, इसलिए कि कहीं दोबारा तेरे पैर न डगमगा जायें।

सादीसे सुन—यह बात बिलकुल सही है कि आदमी बार-बार गिरनेके बाद कम ही उठ पाता है।

●

१७

सचाईको कह देना फ़र्ज़ है

मैंने सुना है कि किसी नेक फ़क़ीरसे कमीनी तबीयत रखनेवाला एक बादशाह रंजीदा हो गया। फ़क़ीरकी ज़बानपर सच दहाड़ रहा था और ज़ालिम बादशाह सचपर नाराज़ हो रहा था। आख़िर बादशाहने फ़क़ीर-को जेलखानेमें भेज दिया इसलिए कि बादशाह बाज़ुओंमें ताक़त रखता था और फ़क़ीर निरा फ़क़ीर था, सब तरह कमज़ोर था।

जेलखानेमें फ़क़ीरसे किसी दोस्तने चुपके-चुपके कहा, "आपने बाद-शाहके सामने जो बात कही वह मौक़ेके खयालसे बेकार थी। भला उसे कहनेकी आपको ज़रूरत ही क्या थी?"

फ़क़ीरने जवाब दिया, "नहीं भाई, मैं फ़क़ीर हूँ। सचाईको ठिकानेपर

पहुँचा देना मेरा फ़र्ज़ है। फिर मैं इस क़ैदसे नहीं डरता—इसलिए कि यह तो घड़ी-भरकी है।"

किसी खुफ़ियाने फ़क़ीरकी यह बात बादशाहके कान तक पहुँचा दी। सुनकर बादशाह हँसा और बोला, "उसका ख़याल ग़लत है। जाकर उस बदनसीबसे कह दे कि अब उसे क़ैदख़ानेमें ही मरना पड़ेगा।"

बादशाहका यह पैग़ाम लेकर एक गुलाम फ़क़ीरके पास पहुँचा। फ़क़ीरने यह पैग़ाम जैसे कानोंपर उड़ा दिया और कहा, "तू अपने बादशाहसे कह दे कि यह दुनिया भी घड़ी-भरसे ज्यादा ठहरनेवाली नहीं है। फ़क़ीरके नज़दीक तो ग़म और ख़ुशी एक बराबर है। अगर तू न सतायेगा तो भी मैं ख़ुश रहूँगा और अगर तू सिर काट लेगा तो भी मुझे कुछ ग़म न होगा। मैंने माना कि तेरे पास लश्कर है, ख़ज़ाना है, और मेरे पास तो न घर-द्वार है न माल-असबाब; मगर जब मौतके दरवाज़ेपर पहुँचेंगे तब दोनों बातकी-बातमें एक बराबर हो जायेंगे। इस चार दिन चमकनेवाली दौलतपर मत इतरा और न गुनाहोंकी आगमें अपना जिस्म जला। तुझसे भी पहले बहुत-से बादशाह दौलतके बड़े-बड़े ज़ख़ीरे जमा कर चुके हैं, ज़ुल्म कर-कर जहानको जला चुके हैं और आख़िर ख़ाकमें मिल चुके हैं। इसलिए ऐसी ज़िन्दगी गुज़ार कि लोग भलाईसे तेरा ज़िक्र करें और जब तू मरे तब तेरी क़ब्रपर लानत-मलामतकी बौछार न करें। कोई बुरी रस्म क़ायम न कर, ताकि लोग यह न कहें कि जिसने यह बुरी रस्म क़ायम की उसपर लानत है। यह ख़याल रख कि अगर कोई बलवान् सिर उठाता है तो फिर क़ब्रकी ख़ाक उसका नाम-निशान भी मिटा देती है।"

अब तो ज़ालिमके ग़ुस्सेका ठिकाना न रहा। उसने हुक्म दिया, "कम्बख़्त फ़क़ीरकी ज़बान तालुसे बाहर खींच ली जाये।"

यह सुनकर सचाईपर मर मिटनेवाले फ़क़ीरने कहा, "मुझे ज़ालिमके इस हुक्मका भी कोई ख़ौफ़ नहीं है। मुझे अपनी बेज़ुबानीपर ग़म करनेकी क्या ज़रूरत! मुझे मालूम है कि अल्लाह दिलका भेद जाननेवाला है।

चाहे मुझपर मोहताजगी आये, चाहे सितमका पहाड़ टूटे, अगर मेरा आखिरी नतीजा नेक निकलना है तो फिर मुझे किस बातकी फ़िक्र ! अगर मैं ख़ैरियतके साथ ख़त्म हो सकूँ तो मेरी मौत एक वलिदान बन जाये ।"

●

१८

उदारता हमेशा क़ायम रहती है

एक पहलवान निहायत बदनसीब था। उसे न सुबहका खाना मिलता था, न शामका। बेचारा भूखसे मजबूर होकर कभी मिट्टी खोदता था, कभी पत्थर तोड़ता था—इसलिए कि मुक्केबाज़ी या कुश्तीके दाँव-पेंचोंसे तो रोटी मिलना मुश्किल था। रोज़ीकी इस परेशानीसे हमेशा उसका मन मेहनत-मशक़्क़तसे भरा रहता था और तन मुसीबतसे लस्त-पस्त रहता था।

वह कभी ज़मानेकी ग़र्दिशसे लड़ते-लड़ते उकता जाता था, कभी अपनी बदनसीबीको कोसते-कोसते झल्ला पड़ता था, कभी अमीरोंकी खुशहाली देखते-देखते जल उठता था, और कभी अपनी हैरानीपर आँसू बहाते-बहाते कहने लगता था, "भला ऐसी सख्त काँटों-भरी ज़िन्दगी किसीने क्यों देखी होगी ! बहुत-से ऐसे हैं जो शहद, मुर्ग़ और हलवा भी सीधे नहीं खाते और एक अभागा मैं हूँ कि दाल-रोटी भी नहीं पाता। दुनियाका यह कैसा इन्साफ़ है कि मैं तो चिथड़े-चिथड़ेको तरसता हूँ और बिल्लियाँ पोस्तीन पहनती हैं ! ऐ आसमान, काश तू ऐसी मेहरबानी करता कि मुझे एक खज़ानेका मालिक बना देता तो, मेरी एक ज़मानेकी तड़पती और बलखाती हवस निकल जाती, मैं इस रंजसे—इस मुसीबतसे छुटकारा पा जाता, और अमन-चैनकी प्यारी-प्यारी सूरत देख लेता !"

मैंने सुना है कि एक दिन वह पहलवान ज़मीन खोद रहा था। अचानक उसकी निगाह ठोड़ीकी एक सड़ी हुई हड्डीपर पड़ी। मिट्टीमें उसके टुकड़े अलग-अलग हो गये थे और मोतीसे दाँत इधर-उधर बिखरे हुए थे। पहलवानको ऐसा जान पड़ा जैसे वह बेज़बान हड्डी उसे चुपके-चुपके नसीहत कर रही है, "ऐ सरदार, अगर तेरी तमन्नाएँ पूरी नहीं हैं तो सब्र कर। देख, मिट्टीके नीचे मुँहका यह हाल होता है—अब तू चाहे उसे शक्कर खानेवाला समझ, चाहे दिलका ख़ून पीनेवाला। ज़मानेकी गर्दिशपर क्या हाथ मलता है। वह तो वक़्तके मुताबिक़ उतार-चढ़ाव अख्तियार ही करती रहती है।"

इस नसीहतसे जैसे पहलवानकी तबीयत क़ाबूमें आ गयी और उसने अपने-आपको समझाया, "ऐ नफ़्सके जालमें फँसे हुऐ बेसमझ, होशमें आ, तदबीर किये जा, ग़मका बोझ उठा, और अपनेको इस तरह क़त्ल न कर।"

चाहे किसीके सिरपर बोझ लदा हो, और चाहे किसीका सिर आसमानतक बुलन्द हो, जब उसका हाथ उलट-पुलटकी हद तक जा पहुँचता है तब मौत आकर उसके सिरसे दोनों तरहके खयाल निकाल देती है। फिर न ग़मका ठिकाना रहता है न खुशीका पता; हाँ भले कामका पुण्य और उससे पैदा हुआ नेकनाम अलबत्ता बच रहा है। ताज और तख्त तो ग़ायब हो जाते हैं, पर उदारता क़ायम रहती है। इसीलिए बराबर बख्शीश किये जा, ताकि तेरी नेकनामी ज़िन्दा रहे। मुल्क और दौलतपर क्या ग़ुरूर करता है। मुल्क और दौलतपर ग़ुरूर करनेवाले तो तुझसे पहले भी हो चुके हैं। और तेरे बाद भी होते रहेंगे। सादी ग़रीब था, दुखी था, पर मोती लुटाया करता था। क्या तू रुपये-पैसे लुटाकर भी नामवरी नहीं लूट सकता?

●

१९

राजनीति

जबतक तदबीरसे काम निकाल सके, दुश्मनकी खातिरदारी लड़ाईसे बेहतर है। जब दुश्मनकी शक्तिको हरा देना मुश्किल जान पड़े तब कुछ दे-दिलाकर झगड़ेके फाटकपर ताला लगा लेना अक़्लमन्दी है। अगर तुझे दुश्मनसे नुक़सान पहुँचनेका अन्देशा हो तो एहसानके ज़रिये उसकी ज़बान बन्द कर देना होशियारी है। दुश्मनपर काँटोंके बजाय फूल बिखेर, इसलिए कि एहसानसे तेज़ दाँत कुन्द हो जाते हैं। तदबीर करने और छोटी-छोटी बातें खयालमें रखनेसे जहानपर क़ब्ज़ा हो सकता है। यह क़ायदेकी बात है कि जब हाथ न कट सके तब तो बोसा देना ही वाजिब है।

वह तदबीर ही तो थी जिससे रुस्तम भी क़ैद किया जा सका। इतमीनानसे दुश्मनकी खाल भी खींची जा सकती है। इसलिए दोस्तकी तरह ही उसकी खातिर करना ठीक है। मामूलीसे-मामूली लड़ाईसे बचना हिकमतका काम है। कौन नहीं जानता कि क़तरा-क़तरा मिलनेसे ही नदीमें बाढ़ आती है! जहाँतक बन सके, भौंहोंपर बल भी न आने दे और अगर दुश्मन कमज़ोर भी हो, तो उसे दोस्त बना ले। जिसके दुश्मन दोस्तोंसे ज़्यादा हों, फिर क्यों न उसके दुश्मन खुश और दोस्त रंजीदा हों!

अपनेसे ज़्यादा ताक़तवर दुश्मनपर हमला न कर। भला नश्तरपर कौन उँगली मारता है! अगर तू दुश्मनसे ज़्यादा ताक़तवर है, तो भी उसपर हमला करना मर्दानगी नहीं है—इसलिए कि कमज़ोरपर ज़ोर दिखाना इनसानियतके खिलाफ़ है। भले ही तुझमें हाथी-जैसी ताक़त और शेर-जैसी हिम्मत हो, मेरे नजदीक तो जंगसे सुलह बेहतर है। हाँ, जिस वक़्त तेरे हाथ सब तरह मजबूर हो जायें, उस वक़्त जंग करना जायज़ है। अगर दुश्मन सुलह चाहे तो इनकार न कर, और अगर वह लोहा लेना चाहे तो मरना भले ही पड़े, पीठ दिखानेके खयालको भी पास न फटकने दे।

अगर दुश्मन जंगका दरवाज़ा बन्द कर दे तो समझ ले कि तेरे रौबमें तेरी हैसियतमें—हज़ार गुना बढ़ती हो गयी है, और अगर वह लड़ाईका पैर रकाबमें डालता है तो फिर अल्लाह प्रलयके दिन तुझसे इसका हिसाब भी न लेगा। जब कोई झगड़ा खड़ा हो जाये, तो जंगके लिए कमर कस ले। फिर दुश्मनपर मेहरबानी करना भूल है। अगर तू कमीनेसे मज़े और खुशी-के साथ बात करेगा तो इससे उसका ग़रूर बढ़ जायेगा—वह और भी बाग़ी हो जायेगा। हाँ, अगर दुश्मन परेशान होकर तेरे दरवाज़ेपर आये तो तू बेशक दिलसे अदावत और सिरसे गुस्सा निकाल डाल।

जब दुश्मन अमन चाहे, तो उसे मेहरबानीके साथ माफ़ कर दे; मगर उसके कपटसे ग़ाफ़िल न हो। बुज़ुर्गोंकी तदबीरसे मुँह मत मोड़, इसलिए कि वे तजरबेकार होते हैं। यह खयाल रख कि जवान तलवारसे और बूढ़े तदबीरसे खुराफ़ातकी बुनियाद उखाड़ डालते हैं। हाँ, जंगके वक़्त भागनेकी फ़िक्र ज़रूर रख। तुझे क्या पता कि फ़तह किसकी होगी! जब तेरा लश्कर तितर-बितर होने लगे, तब तू अकेला अपनी जान मुसी-बतमें मत डाल। अगर किनारेपर हो तो चुपके-से खिसक जा और अगर दुश्मनके बीचमें हो तो उसका लिबास पहन ले।

अगर तू हज़ार हो और दुश्मन दो-सौ हों, तो भी रातको उसके मुल्कमें मत ठहर। अँधेरी रातमें छिपे हुए पचास सवार पाँच-सौ सवारों-की नाईं ज़मीन उलट सकते हैं। अगर तू रातको कहीं सफ़रपर जाना चाहे तो पहले इस बातकी जाँच-पड़ताल कर ले कि कहीं आस-पास कोई दुश्मन छिपा हुआ तो नहीं है। दो लश्करोंमें-से जो एक दिनकी राह चलकर आता है वह लड़नेकी शक्ति खो बैठता है। तू ऐसे थके हुए लश्करपर इतमीनानसे धावा बोल दे, इसलिए कि वह नादान तो खुद ही अपनी क़ब्र खोद चुका है।

जब तू दुश्मनपर फ़तह हासिल कर ले, तब अपना झण्डा बराबर ऊँचा रख। कहीं ऐसा न हो कि तेरा झण्डा झुका हुआ देखकर दुश्मन तुझपर

हमला कर बैठे। भगोड़ोंका बहुत पीछा मत कर। कहीं ऐसा न हो कि तू अपने लश्करसे दूर जा पड़े। अगर तूने यह भूल की तो तू बहुत जल्द हवामें जंगके उड़ते हुए बादल देखेगा और दुश्मन तुझे तीर और तलवारसे घेर लेंगे। सिपाहियोंको लूटके लिए मत भेज, इसलिए कि बादशाहकी हिफ़ाज़तका मुक़ाम उनसे खाली होना ठीक नहीं। सिपाहियोंके लिए भी जंगके इलाक़ेमें बादशाहकी हिफ़ाज़तके लिए मुस्तैद रहना बेहतर है।

२०

राजरीति

हमेशा दुनिया देखे हुए तजरबेकार बूढ़ोंकी रायपर काम करना चाहिए, इसलिए कि बूढ़े भेड़िये बेहतरीन शिकारी होते हैं। तलवार थामे हुए जवानोंसे डरनेकी इतनी ज़रूरत नहीं जितनी तजरबेकार बूढ़ोंसे डरनेकी है। जो जवान हाथीको गिरा देते और शेरको गिरफ़्तार कर लेते हैं वे भी बूढ़ी लोमड़ीकी होशियारीसे मात खा जाते हैं। बूढ़े और तजरबेकार आदमी अक़्लमन्द होते हैं, इसलिए कि वे जमानेकी सर्दी-गरमी परखे हुए रहते हैं।

अगर तू हुकूमतकी तरक़्क़ी चाहता है, तो कोई भी बड़ा काम किसी नौजवानको मत सौंप। अपना सेनापति उस बूढ़ेके सिवाय और किसीको न बना जो जंगके बड़े-बड़े मोरचोंपर अकसर चोटें खा चुका हो। शिकारी कुत्ता चीतेके सामनेसे भी मुँह नहीं फेरता, मगर जो शेर लड़ाई देखा हुआ नहीं रहता वह लोमड़ीके सामनेसे भी भाग निकलता है।

दो कमज़ोर दुश्मनोंके दरम्यान बेफ़िक्रीसे बैठना अक़्लमन्दी नहीं है,

इसलिए कि अगर वे दोनों मिलकर एक हो जायें तो कमज़ोर न रहेंगे बल्कि ताक़तवर बन बैठेंगे।

एक दुश्मनको छल-कपटसे भुलावेमें डाले रख और दूसरे दुश्मनको नेस्तनाबूद कर दे। अगर कोई दुश्मन मुक़ाबलेपर आ जाये तो तदबीरकी तलवारसे उसका खून बहा दे।

जा, दुश्मनके दुश्मनसे दोस्ती कर ले : फिर तो उसके बदनपर कपड़ा भी भारी मालूम होगा। जब दुश्मनके लश्करमें फूट पड़ जाये तब तू बेशक अपनी तलवार म्यानमें कर ले।

अगर भेड़िये आपसमें लड़ने लगें तो बकरियाँ ज़रूर इतमीनानसे चैन करें और जब दुश्मन दुश्मनसे भिड़ जाये तब तू फ़िक्र छोड़-छाड़कर मज़ेसे दोस्तके पास जा बैठ।

जब दुश्मनका मुल्क तेरे क़ब्ज़ेमें आ जाये तब उसे उसके क़ैदियोंको सौंप दें, इसलिए कि जब क़ैदी अपने सामने मौतको देखता है, तब वह ज़ालिमका खून करनेके लिए तैयार हो जाता है। जब तू दुश्मनका शहर फ़तह कर ले तब उसकी रैयतको अपनी रिआयतोंसे निहाल कर दे, इसलिए कि अगर दुश्मन फिर जंग लेनेकी हिम्मत करेगा तो रैयत खुद उसे मौतके घाट उतार देगी। अगर तू रैयतको नुक़सान पहुँचायेगा तो दुश्मनके लिए तेरा दरवाज़ा हरगिज़ बन्द न होगा।

तू यह न कह कि दुश्मन तेरे दरवाज़ेपर है, जब कि उसके साथी शहरमें मौजूद हैं। तदबीरके साथ दुश्मनसे लड़नेकी कोशिश कर, हिकमतपर ग़ौर कर और अपना इरादा छिपाये रख। अपना भेद किसीसे मत कह, इसलिए कि जासूस बहुत घुले-मिले रहते हैं। सिकन्दर पूरबवालोंसे लड़ाई लेता था और खेमोंके दरवाज़े पच्छिमकी तरफ़ रखता था। अगर तेरे दुश्मनको तेरे इरादेका पता चल जाये तो ऐसी अक़्लपर, ऐसी समझपर, आँसू बहा। फिर इतनी मेहरबानी कर कि कशमकश और लड़ाई-झगड़ेको टाल दे, जिससे तू कमसे-कम एक जहानका हाकिम तो बना रहे।

●

दो

सहृदयतासे ही करुणाकी वह निर्झरिणी प्रवाहित होती है जो जीवनकी मरुभूमिमें छटपटाते हुए प्राणीको शीतलता और शान्ति प्रदान करती है और संसारको स्वर्गका रूप देनेके प्रयत्नमें तत्पर रहती है।

१
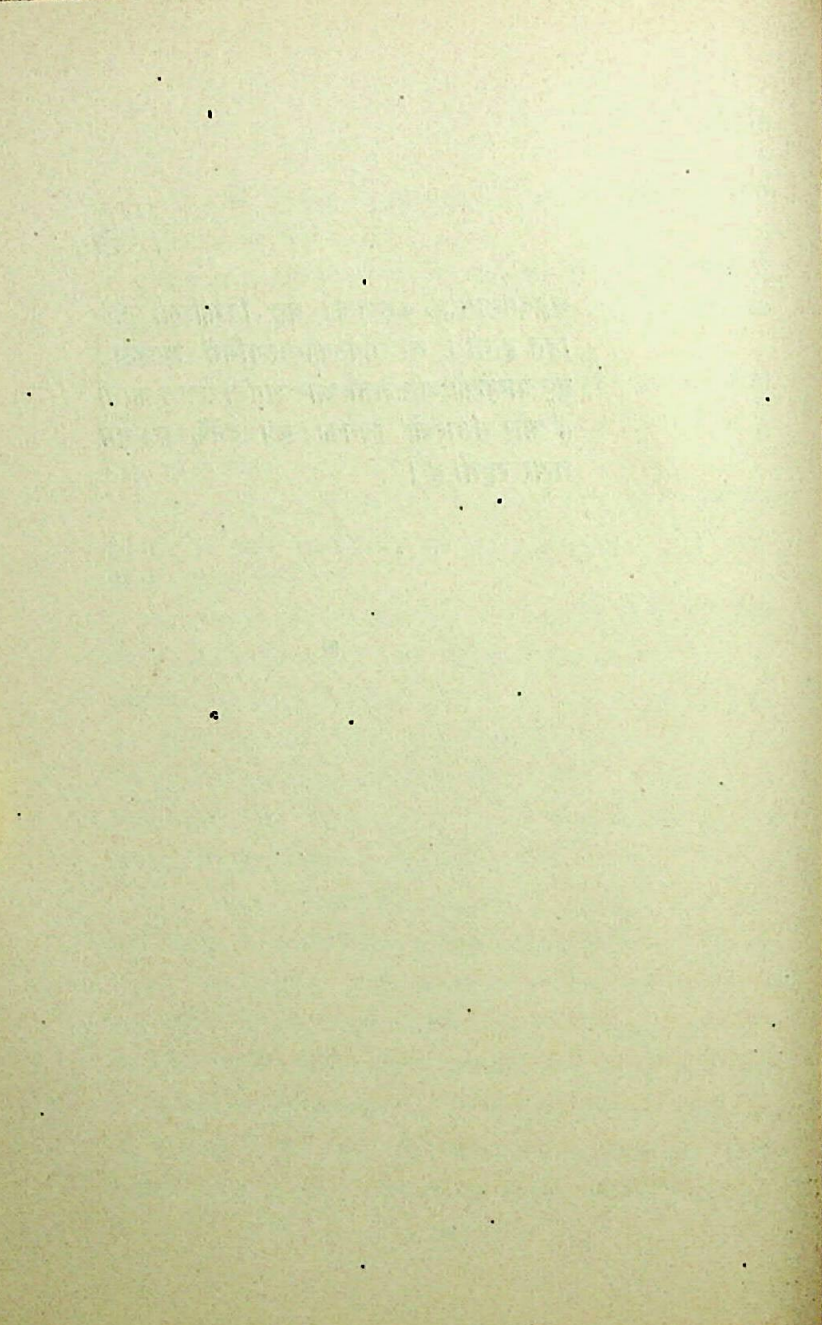
हैरानी-परेशानीके दिन याद रख

अगर तू होश-हवास रखता है तो लफ़्ज़पर नहीं, लफ़्ज़के मतलबपर ग़ौर कर; इसलिए कि लफ़्ज़ तो अपने मतलबमें ही क़ायम रहता है। जो अपनेमें अक़्ल और संयम नहीं रखता, ज़ाहिर है कि वह लफ़्ज़ या उसके मतलबकी क्या क़ीमत समझ सकता है ! क़ब्रमें तो उसी शख़्सको मज़ेकी नींद आती है जिसकी वजहसे प्राणी मज़ेकी नींद लेते हैं। अपनी ज़िन्दगीका ग़म खुद खा; इसलिए कि जो तेरा है वह लालचमें फँसा हुआ मुरदा है। भला मुरदा किसीकी तरफ़ खयाल करना क्या जाने !

अपना माल बख़्शीश किये जा; इसलिए कि वह अभी तेरे क़ब्ज़ेमें है और तेरे बाद तेरे हुक्ममें न रहेगा। अगर तू चाहता है कि तेरा दिल परेशान न रहे तो कभी परेशान दिलोंको न भुला। आज अपना खज़ाना मुस्तैदीसे लुटा डाल, कल उसकी कुंजी तेरे हाथमें न होगी। अपना तोशा यानी सफ़रका सामान अपने साथ लिये जा। तेरे बाद बीबी-बच्चे तुझपर कोई मेहरबानी न करेंगे। दुनियासे वही शख़्स अपने साथ हिस्सा ले जाता है, जो परलोकके लिए कुछ सामान इकट्ठा करता रहता है।

जहानमें तेरी उँगलियोंके सिवाय और कौन है जो तेरी पीठ ठिकानेसे खुजला सके ? जो कुछ तेरे पास है, आज अपनी हथेलीपर रख; नहीं तो कल शर्मिन्दगी उठायेगा। फ़क़ीरके उस अंगको छिपानेकी कोशिश कर जिसके छिपानेकी ज़रूरत है; इसलिए कि अल्लाहताला तेरे भी उस अंगको छिपाये रखे। ज़रूरतमन्दको अपने दरवाज़ेसे खाली हाथ वापस न जाने दे। अल्लाह न करे कि कभी तुझे भी दर-दर मुसाफ़िर बनकर भटकना पड़े।

बुज़ुर्ग लोग मोहताजके साथ भलाई करते हैं। वे इस ख़यालसे डरते हैं कि कहीं उनको भी किसी ग़ैरके सामने मोहताज बनकर न जाना पड़े। मुसीबतमें फँसे हुए ग़रीबोंका हाल देख। कहीं ऐसा न हो कि एक बार तू भी ग़रीब हो जाये। हैरान-परेशान लोगोंको ख़ुश कर और अपनी हैरानी-परेशानीके दिन याद रख। ऐ दूसरोंके दरवाज़ेपर न जाने की आरज़ू रखनेवाले, अल्लाहका शुक्र कर और अपने दरवाज़ेपर आये हुए आरज़ूमन्दको मत झिड़क।

●

२

यतीमके आसू पोंछ दे

जिसका बाप मर गया हो उसपर छाया यानी रहम कर और उसको किसी तरहकी तकलीफ़ न पहुँचने दे। तुझे नहीं मालूम कि वह पहले किस हालमें था और अब कितना परेशान है। भला कहीं बग़ैर जड़के भी पौधा पनपता है! अगर तू देखे कि कोई यतीम सिर झुकाये खड़ा है तो उसके सामने अपने बच्चेके चेहरेका बोसा न ले; इसलिए कि वह अपने बापको याद कर उदास होगा।

अगर यतीम रोता है तो कौन उसका दिल बहलाये, और अगर यतीम ग़ुस्सा करता है तो कौन उसका नाज़ उठाये? ख़बरदार, यतीम रोने न पाये, इसलिए कि जब यतीम रोता है तब उसके रोनेसे आसमान काँप-काँप उठता है। बस मेहरबानी कर, मुहब्बतसे उसकी आँखके आँसू पोंछ दे और उसके चेहरेकी धूल झाड़ दे। अगर उसके सिरसे छाया उठ गयी है तो तू उसे अपनी छायामें पाल ले।

उस वक़्त मेरा सिर शाही ताजके लायक़ था, जब वह बापकी

गोदमें था। अगर मेरे जिस्मपर मक्खी भी बैठ जाती थी तो कई-कई लोग परेशान हो उठते थे। अब अगर क़ैदख़ानेमें क़ैदी बनाकर डाल दिया जाऊँ तो दोस्तोंमें-से भी कोई मेरा मददगार न होगा। बच्चोंकी तकलीफ़को मैं ही जानता हूँ, इसलिए कि मेरे सिरपर-से बचपनमें ही बापकी छाया जाती रही थी।

•

३

उसने मेरा नाम भी न लिया और मैंने उसे सौ बरस जिलाया

मैंने सुना है कि एक बार हफ़्ते-भर तक कोई मेहमान हज़रत इबराहीम ख़लीलुल्लाह—एक पैग़म्बर—की मेंहमानी करने न आया। अब तो हज़रतको बड़ा सदमा पहुँचा। वह सवेरेसे शाम तक खाना न खाते, बस यही आस लगाये बैठे रहते थे कि शायद कोई भूला-भटका मुसाफ़िर आ जाये।

आखिर सातवें दिन हज़रत किसी मेहमानकी तलाशमें निकले और शहरके बाहर पहुँचकर चारों तरफ़ दूर-दूर तक नज़र दौड़ाने लगे। इतने-में देखते क्या हैं कि जंगलकी तरफ़से धीरे-धीरे एक शख्स आ रहा है जो बेंतकी तरह दुबला-पतला है और जिसके काँपते हुए सिरपर चाँदी-जैसे उजले बाल झूम रहे हैं।

हज़रत जल्दी-जल्दी आगे बढ़े। उन्होंने बड़ी मुहब्बतसे 'खुश आम-दीद' कहते हुए उस बूढ़े राहगीरका स्वागत किया। फिर वह उसे भले आदमियोंकी तरह बाक़ायदा खाना खानेकी दावत देते हुए बोले, "मेहर-बानी कर मेरी दाल-रोटी क़बूल कीजिए।"

वह शख्स शायद हज़रतको जानता था, उनकी दावत क़बूल करते हुए मारे खुशीके उछल पड़ा और जल्दी-जल्दी उनके साथ हो लिया। हज़रत उसे अपने मेहमानखानेमें ले आये। लोगोंने उसकी बड़ी आवभगत की। फिर हज़रतके हुक्मसे दस्तरख्वान सजाया गया और सब खाने बैठे। उन्होंने बिस्मिल्लाह कहकर खानेकी तरफ़ हाथ बढ़ाया। मगर उस बूढ़ेके मुँहसे किसी तरहकी आवाज़ न निकली। वह एकदम खाना खाने लगा। इसपर सब लोगोंको बड़ा ताज्जुब हुआ। वे आँखें फाड़-फाड़कर उसकी तरफ़ ताकने लगे। इतनेमें किसीने उससे कहा, "या तो तू बुज़ुर्ग नहीं है, या फिर तुझमें बुज़ुर्ग-जैसा सब्र नहीं है। क्या यह शर्त नहीं है कि जब इनसान अपनी रोज़ी खाये तो रोज़ी देनेवालेका नाम ले ?"

बूढ़ेने जवाब दिया, "मुझे इस तरीक़ेपर चलनेकी ज़रूरत ही क्या है ! मैं न तो अल्लाहपरस्त हूँ, न मूर्ति-पूजक हूँ, मैं तो अग्निपूजक हूँ।"

जब हज़रत इबराहीमको मालूम हुआ कि यह फटे हाल बूढ़ा अपना नहीं है, ग़ैर है, अग्नि-पूजक है—तब उन्होंने उसे बड़ी बेइज़्ज़तीसे निकाल बाहर किया। इतनेमें अल्लाहकी तरफ़से उनके पास एक फ़रिश्ता आया। वह उनकी लानत-मलामत करते हुए बोला, "रे इबराहीम, अल्लाहताला फ़रमाता है कि उसने कभी मेरा नाम न लिया, फिर भी मैंने उसे सौ बरस तक ज़िन्दा रखा और दाना-पानी दिया और तूने उसे इतनी-सी देरमें नफ़रतके साथ निकाल बाहर किया ! बता, अब तुझे अपनेको खलीलुल्लाह'—अल्लाहका दोस्त—समझनेका क्या हक़ है ? माना कि वह अग्नि-पूजक है, मगर तूने यह भी सोचा कि अग्निमें कौन चमकता रहता है ? जब उसने अपना मज़हब नहीं छोड़ा, तब तूने ही अपना मज़हब क्यों छोड़ा और अपना बख्शीशका हाथ क्यों इतनी बेरहमीसे समेट लिया ?"

●

४

अपने मालके मालिक बनो, .गुलाम नहीं !

एक आदमी जितना मालदार था उतना ही बखील था। आखिर वह मर गया और अपना माल यादगारकी तरह दुनियामें छोड़ गया। मगर उसका लड़का दिलवाला था—अक़्लवाला था। उसने मालपर ग़ुलामकी तरह नहीं, मालिककी तरह हाथ रखा।

नतीजा यह हुआ कि अब फ़क़ीर दरवेश उसका पीछा न छोड़ते थे और मुसाफ़िर उसके मेहमानखानेमें भरे रहते थे। वह भी ऐसी तबीयत-वाला था कि दूसरोंको .खुश देखकर .खुद भी .खुश होता था। बापकी तरह मालको बन्द नहीं रखता था।

यह देखकर एक उपदेशक चुप न रह सका। उसने लड़केसे कहा, "मियाँ, जो कुछ तुम्हारे हाथमें है उसे इस तरहसे न फूँको। जब साल-भर चोटीका पसीना एड़ी तक बहाया जाता है, तब कहीं खलियान भरता है। उसे दम-भरमें फूँक डालना कहाँकी अक़्लमन्दी है। दुनिया जानती है कि ग़रीबीमें इनसानका सब्र जाता रहता है। इसलिए उसे सम्पन्नतामें हिसाब-किताबका भी खयाल रखना चाहिए।" इसके बाद उपदेशक बोला, "गाँवकी एक अमीरज़ादीने किसी लड़कीसे क्या अच्छी बात कही थी कि इनसानको चाहिए, वह अच्छे दिनोंमें बुरे वक़्तके लिए सामान इकट्ठा करता रहे। हर वक़्त अपनी मशक और घड़ा भरा रखे, इसलिए कि गाँवमें हर वक़्त नहर जारी नहीं रहती। जो कुछ तुम्हारे पास है, अगर तुम उसे हथेलीपर रखते हो, तो जरूरतके वक़्त हथेली खाली ही पाओगे। ग़रीब तुम्हारी कोशिशसे—तुम्हारी बख्शीशसे—हरगिज़ अमीर न होंगे; बल्कि मुझे डर है कि तुम्हीं ग़रीब हो जाओगे।"

●

५

अगर तू सचाईका हामी है तो वली है

एक बार कोई बीवी अपने शौहरके सामने रोयी और बोली, "आगेसे इस गलीवाले नानबाईसे रोटी मत खरीदना। बाज़ारमें गेहूँ बेचनेवाले तो बहुत हैं, मगर वह गेहूँ बेचनेवालेकी सूरतमें जौ बेचनेवाला है—दग़ाबाज़ है। फिर उसकी दूकानपर गन्दगी भी रहती है; इसीलिए ख़रीदनेवालोंमें-से किसीने एक हफ़्तेसे उसका मुँह भी नहीं देखा है।"

शौहरने बड़ी मुहब्बतके साथ जवाब दिया, "ऐ मेरे घरकी रोशनी, उस ग़रीबपर इस तरह ख़फ़ा न हो। उसने हमारी ही उम्मीदमें यहाँ दूकान लगायी है। यह तो भलमनसाहतकी बात नहीं है कि उसकी रोज़ीपर, उसकी रोटीपर, किसी तरहकी रोक लगायी जाये। बहुत होगा, तो वह हमसे दो पैसे कमा लेगा; मगर उसके बीवी-बच्चे तो पल जायेंगे। क्या यह कम पुण्यकी बात है ?"

ऐ भाई, नेक और आज़ाद मर्दोंका तरीक़ा अख़्तियार कर। चूँकि तू खड़ा है, इसलिए गिरे हुए का हाथ पकड़। उन सच्चे आदमियोंकी क़द्र कर, जो बेरौनक़ दूकानसे सौदा खरीदना जानते हैं। ऐ जवाँमर्द, अगर तू सचाईका हामी है तो वली—अल्लाहका दोस्त—है। बख़्शीश करनेका पेशा तो हज़रतअली-जैसे बड़े दानीका है जो मर्दोंके शाह माने जाते हैं।

●

६

मुंह पानीमें भी दीखता है और आइनेमें भी

बादशाहका सिपाही पड़ा सो रहा था। बीबीने उसे जगाते हुए कहा, "ऐ नेकबख्त, उठो ! रोज़ी हासिल करनेके लिए हाथ-पैर चलाओ। जल्दी जाओ, ताकि सरकारी मुलाज़िम तुम्हें खानेका हिस्सा दें; इसलिए कि तुम्हारे बच्चे भूखे-प्यासे हैं और रोटी माँग रहे हैं।"

सिपाहीने पड़े-पड़े ही जवाब दिया, "आजके दिन रसोईघर ठण्डा रहेगा; क्योंकि कल रात सरकारने रोज़ा रखनेकी नियत बाँधी थी।"

बीबीने नाउम्मीदीकी ठण्डी साँस लेकर सिर लटका लिया और कहा, "जो फ़ाक़ेसे ज़ख्मी हो रहे थे वे सरकारके इस रोज़ेसे और भी ज़ख्मी हो गये। बताओ उन्होंने ऐसे रोज़ेसे क्या फ़ायदा उठाया ? अगर वे रोज़ा खोलते तो एक बात भी होती—हमारे बच्चे ईद मना लेते।"

हमेशा रोज़ा रखनेवाले स्वार्थी इनसानसे वह इनसान बेहतर है जो रोज़ा रखता हो या न रखता हो मगर लोगोंकी भलाई करता हो। रोज़ा रखनेका हक़दार तो वही हो सकता है जो भूखोंको दोपहरका खाना खिलाता हो। ऐसे रोज़ेसे क्या फ़ायदा कि रोज़ेदार तकलीफ़ उठाये, अपनेसे बचाये, और फिर ख़ुद ही खा जाये ? आख़िरकार एकान्तमें जा बैठनेवाले ये बेवकूफ दिनमें कुफ्रका गड़बड़ घोटाला किये बग़ैर न मानेंगे। मुँह तो पानीमें भी दीखता है और आइनेमें भी। मगर मुँह देखनेकी तमीज़ होनी चाहिए। भला कहाँ पानी और कहाँ आइना !

●

७

जिन्दा दिल कभी नहीं मरता

एक शख्स बड़ा दाता था, लेकिन काफ़ी पैसेवाला नहीं था। उसकी आमदनी भी उसकी जवाँमर्दीके बराबर नहीं थी। अल्लाह न करे कि कमीन-की मुट्ठी खुली रहे : अल्लाह न करे कि शरीफ़की मुट्ठी बन्द रहे ! यह कुछ क़ायदा-सा है कि जिसकी हिम्मत बुलन्द होती है, उसकी मुराद शायद ही पूरी होती है। पहाड़ोंपर नदीका ज्वार आता है, मगर कितनी देर ठहरता है ? बस, उसका भी यही हाल था। उसकी बख्शीश पूँजीसे कहीं ज्यादा थी; इसलिए वह मजबूरन तंगदस्त रहता था। शायद इस तंगदस्तीने उसकी क़िस्मतमें यही लिख दिया था कि ऐ भले आदमी, क़ैदखानेमें जा और घुट-घुट कर मर।

बात यह थी कि एक आदमी क़ैदखानेमें पड़ा हुआ था। उसने शहरमें खबर भिजवायी कि मैं एक मुद्दतसे क़ैदखानेकी तकलीफ़ भोग रहा हूँ, अगर कोई भला आदमी थोड़े-से दिरहमोंसे मदद कर दे तो मैं इस मुसीबत-से छुटकारा पा जाऊँ। जब यह ख़बर उस नेकनाम शख्सके कानों तक पहुँची, तब वह बेचैन हो उठा। यह ठीक है कि उसकी आँखोंमें किसी चीज़की कौड़ी बराबर भी क़ीमत नहीं थी, मगर उसकी मुट्ठीमें कौड़ी भी तो नहीं थी। आखिर उसने क़ैदखानेके अफ़सरों तक खबर भेजी, "मेहरबानी कर कुछ मुद्दतके लिए उस ग़रीबके दामनपरसे अपना सख्त हाथ हटा लो और अगर उसे छोड़ना मंजूर करो तो मेरी ज़मानत ले लो।"

भला क़ैदख़ानेके अफ़सर कब ऐसी बातें सुननेवाले थे ! जब उस नेकबख्तने और कोई उपाय न देखा, तब वह खुद क़ैदखाने तक पहुँचा।

उसने मौक़ा पाकर क़ैदखानेका दरवाज़ा खोल दिया और उस क़ैदीसे कहा, "उठो, जल्दी करो और पैरोंकी सारी ताक़तसे भागो।"

जब परिन्देने पिंजड़ेकी खिड़की खुली देखी, तब वह उड़नेके लिए बेचैन हो उठा—पुरवा हवाकी तरह बाहर निकला और ऐसा भागा, ऐसा भागा, कि कोई उसकी गर्द भी न पा सका। आखिर क़ैदखानेवालोंने इस ज़ुर्मके बदले उस नेकबख्तको गिरफ़्तार कर लिया और क़ैदखानेमें डाल दिया।

मैंने सुना है कि वह बरसों क़ैदखानेमें पड़ा रहा। उसने न कभी आराम किया न कभी नींदका नाम लिया, फिर भी न कोई दरख्वास्त दी, न कोई फ़रियाद की। बस, वह सख्त मेहनत-मशक़्क़तके बीच हँसी-ख़ुशोसे अपना वक़्त काटता गया। आखिर एक लम्बा अरसा गुज़रनेके बाद वहाँसे एक भला आदमी निकला और उस नेकबख्तको देखकर बोला, "ऐं, यह क्या! तू भी लोगोंका माल मारता-खाता है? आखिर तुझसे ऐसा कौन-सा क़सूर हो गया है जो तू इस तरह क़ैदखानेमें पड़ा हुआ है?"

नेकबख़्त ने हँसकर जवाब दिया, "शेखजी, आप भी कैसी बात करते हैं। भला मैं किसीका माल मारना-खाना क्या जानूँ! बात सिर्फ़ इतनी हुई कि एक कमज़ोर क़ैदी था जिसका बहुत बुरा हाल था। उसकी रिहाई-की यही एक सूरत थी कि उसके बदले मैं क़ैदखानेमें रहूँ। बस, मुझे यह बात पसन्द न आयी कि मैं आराम करूँ और वह क़ैदखानेकी तकलीफ़ भोगे। यही वजह है, जो आप मुझे यहाँ देख रहे हैं।"

आखिरकार वह क़ैदखानेमें ही मर गया और नेकनामी छोड़ गया। यह भी क्या खूब ज़िन्दगी है कि तन तो मर गया, मगर नाम ज़िन्दा रह गया। मुर्दा तन और ज़िन्दा दिलवाला बेवकूफ़ उस विद्वान्से बेहतर है जिसका तन ज़िन्दा हो और दिल मुर्दा। ज़िन्दा दिल कभी नहीं मरता। ज़िन्दा दिलवाला तन मिट्टीमें मिल जाये तो भी क्या डर!

●

८

जहाँतक बने नेकी किये जा

किसी मुसाफ़िरको जंगलमें एक प्यासा कुत्ता मिला। उसमें बस इतनी ही जान बाक़ी थी कि वह रुक-रुककर कुछ साँस ले लेता था। यह देखकर मुसाफ़िरका दिल भर आया। उसने अपनी टोपीका डोल बनाया और उसमें रस्सीकी तरह पगड़ी लगा दी। इसके बाद खिदमतपर कमर बाँधो, कुएँसे पानी निकाला और कुत्तेके मुँहमें डाल दिया। पानी मिलते ही जैसे कुत्तेमें नयी जान आ गयी; वह उठकर बैठ गया और बड़ी मुहब्बतसे मुसाफ़िरका मुँह ताकने लगा।

उस मुसाफ़िरका यह हाल सुनकर हज़रत मुहम्मद साहबने बड़ी खुशी ज़ाहिर की और कहा, "वाह! उस नेकबख्तने मरते हुए कुत्तेको पानी क्या पिलाया, अपने लिए जन्नतमें मुक़ाम बना लिया।"

खबरदार, ज़ुल्म करनेके इरादेसे बाज़ आ और हो सके तो उपकार और वफ़ादारीका पेशा अपना। जब कुत्तेके साथ की हुई नेकी बेकार नहीं होती, तब भले आदमीके साथ की हुई नेकी क्यों बेकार होने लगी! जहाँ-तक बन सके और जितनी बन सके, नेकी किये जा। अल्लाहने किसीके लिए नेकीकी हद मुक़र्रर नहीं की! अगर जंगलमें तेरा कुआँ नहीं बना है तो तू रास्तेपर चिराग़ ही रख दे। बादशाहके लिए खज़ानेसे ऊँटोंकी क़तार-भर रुपये दान कर देना इतना पुण्यका काम नहीं होता जितना कि किसी मज़दूरके लिए एक दीनार देना। हर आदमी अपनी ताक़तके मुताबिक़ ही बोझ उठा सकता है। चींटीके लिए तो टिड्डीका पैर भी भारी होता है।

ऐ नेकबख्त, जीवोंके साथ नेकी किये जा; इसलिए कि अल्लाहताला

कल तेरे साथ कठोरतासे पेश न आये। जो इनसान परेशान-दिलोंका मददगार रहेगा, वह अगर गिर भी जायेगा तो क़ैद न होगा। किसी ग़ुलामको सज़ाका हुक्म मत सुना। मुमकिन है कि वह सज़ा किसी हाकिम-पर जा पड़े। अगर तू अपनेको पद और शानपर क़ायम रहनेवाला समझता है तो फ़क़ीरों और ग़रीबोंपर जुल्म मत कर।

ऐ दूर-अन्देश आदमी, मेरी नसीहत सुन; इसलिए कि उसके ज़रिये हर दिलसे बुराईका बीज निकल जाता है। जब खलियानका मालिक फूलोंके गुच्छोंपर टेढ़ी निगाह डालता है, तब खुद ही नुक़सान उठाता है। ताज्जुब है कि तू ग़रीबोंको निआमत देते डरता है और इस वजहसे दिल-ही-दिल ग़म खाता है। ऐ ज़ोरवाले, तू नहीं जानता कि जब मुसीबतका समय आता है, तब अफ़सर भाग्य परेशान-हाल लोगोंकी मदद करता है। इसलिए कमज़ोरोंका दिल कभी न तोड़ना चाहिए। अल्लाह न करे कि किसी दिन तू भी कमज़ोर हो जाये।

●

९

अल्लाहकी मरज़ीमें मतलब रहता है

एक कमज़ोर फ़क़ीर किसी तन्दुरुस्त अमीरके सामने पहुँचा और अपना दुखड़ा रोने लगा। मगर स्याह-दिल अमीरने फ़क़ीरको कौड़ी तो दी नहीं, उलटे बुरी तरह डाँट लगायी। अमीरके इस जुल्मसे जैसे फ़क़ीरके दिलका खून हो गया। उसने दुःखसे सिर उठाया और कहा, "ऐ खुश-नसीब, भला यह नाराज़ी किसलिए? शायद आप नहीं जानते कि हमेशा कड़वाहट चखनेवाला फ़क़ीर सवाल करनेसे नहीं डरता।"

मगर संकीर्ण-दृष्टि अमीरपर भला इन बातोंका क्या असर होता। उसके इशारेपर एक गुलामने फ़क़ीरको बड़ी बेइज़्ज़तीसे धक्के देकर निकाल बाहर किया। मैंने सुना है कि अल्लाहका एहसान न माननेवाले उस अमीरका ज़माना देखते-देखते बदल गया। घमण्डने उसे तबाहीमें डाल दिया और आसमानकी चमकने उसकी इज़्ज़त और अमीरीपर सियाहीकी क़लम फेर दी। बदनसीबीने उसे तंग कर दिया और मानो लहसुनकी बदबू दे दी। फिर तो न रिश्तेदारोंने उसे सहारा दिया और न दोस्तोंने ही उसकी खबर ली। अल्लाहके हुक्मने उसके सिरपर फ़ाक़ोंकी धूल उड़ा दी और जैसे किसी जादूगरने उसकी थैली और हथेली खाली कर दी। मतलब यह कि उसका हाल कुछका-कुछ हो गया और इसी हालमें उसके दिन गुज़रने लगे।

अमीरकी यह हालत देखकर उसके नौकर-चाकर भी उसे छोड़कर यहाँ-वहाँ भाग निकले। उनमें-से एक गुलाम एक ऐसेके यहाँ पहुँचा; जो दिलका अमीर था और अपना हाथ हमेशा खुला हुआ रखता था। परेशान-हाल लोगोंको देख वह उसी तरह खुश होता था जिस तरह ग़रीब दौलतको पाकर खुश होता है। एक दिन रातको किसी भिखारीने उसके दरवाज़ेपर पहुँचकर भीख माँगी। वह मारे थकावटके लस्त-पस्त हो रहा था। उसकी यह हालत देखकर वह अमीर-दिल सख्त बेचैन हो उठा और उस ग़ुलामसे बोला, "जाओ-जाओ, उस ग़रीबको खाना खिलाओ, उसकी तबीयत खुश करो।"

ग़ुलाम फ़ौरन खाना लेकर उस भिखारीके पास पहुँचा। भिखारी-पर नज़र पड़ते ही वह चीख उठा और उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे। जब वह भिखारीको खाना देकर वापस आया, तब नेक तबीयतवाले मालिकने ताज्जुबमें आते उससे पूछा, "ऐं! यह क्या बात है? तुझपर ऐसा कौन-सा जुल्म हो गया है जो तू इस तरह आँसू बहा रहा है?"

ग़ुलामने हाथ बाँधकर जवाब दिया, "क्या कहूँ सरकार, उस

भिखारीको देखकर मैं बहुत परेशान हो उठा हूँ। वह पहले मेरा मालिक था और एक अच्छे-खासे रईसकी हैसियत रखता था। आज उसकी यह हालत है कि वह दर-दर भीख माँगता फिरता है। सचमुच अल्लाहकी मरज़ी कौन जान सकता है!"

यह सुनकर वह नेकवख्त हँसा और कहने लगा, "बेटा, मालिककी मरज़ीमें कुछ-न-कुछ मतलब रहता है। इनसान तो अपने-आपपर ज़ुल्म करता है। वह जैसा बोता है वैसा लुनता है। जो आज घमण्डसे आसमान तक सिर उठाता है, वह कल ज़मीन चूमता नज़र आता है। मैं भी वही भिखारी हूँ, जिसे तूने अपने इस मालिकके इशारेपर धक्का देकर दरवाज़ेसे हटा दिया था। तुझे खयाल है कि उस दिन इसने मेरी हालतपर ज़रा भी तरस न खाया था! मगर आसमानने मुझपर रहमकी निगाह की और मेरे मुँहसे मुसीबतकी गर्द धो दी। अगर नसीब अपनी हिकमतसे एक दरवाज़ा बन्द करता है तो अल्लाह अपनी रहमतसे फ़ौरन् दूसरा दरवाज़ा खोल देता है। यही वजह है कि वक़्त आनेपर बहुत-से ग़रीब अमीर बन जाते और बहुत-से अमीर ग़रीब हो जाते हैं।"

●

१०

दाना ढोनेवाली चींटीको भी मत सता

अगर तू भला आदमी है और भली तबीयत रखता है तो सुन, भले आदमीकी आदत कैसी पाक-साफ़ होती है। एक बार हज़रत शिबली किसी गेहूँ बेचनेवालेकी दूकानसे गेहूँका बोरा अपने कन्धेपर लादकर गाँवको ले गये।

जब हज़रत गाँवमें पहुँचे तब देखते क्या हैं कि गेहुँओंमें एक चींटी बड़ी परेशानीसे इधर-उधर भाग रही है। हज़रत सब कुछ समझ गये। बस, उनके दिलमें रहम उमड़ आया। फिर वह आरामसे बैठ भी न सके। उस चींटीको सँभालकर उलटे पैरों लौट पड़े और उसे गेहूँकी दूकानमें छोड़ते-छोड़ते बोले, "यह नन्हीं-सी जान अपने घरसे अलग होकर दुःख उठाती रहे और मैं देखा करूँ: यह तो इनसानियतकी बात नहीं है।"

जो परेशान-हाल हों, उनके दिलको तसल्ली पहुँचा, ताकि तुझे भी ज़मानेकी तरफ़से भरोसा रहे। फ़िरदौसीने क्या ख़ूब कहा है कि दाना ढोनेवाली चींटीको भी मत सता। वह भी जान रखती है और जान बड़ी नायाब चीज़ होती है। वह सियाह-दिल है, तंगदिल है, जो चींटीको भी परेशान करता है। कमज़ोरके सिरपर हाथ मत मार। कौन जाने, कभी तुझे चींटीकी तरह उसके पैरोंपर गिरना पड़े। परवानेके हालपर मोमबत्तीने रहम नहीं खाया। नतीजा यह हुआ कि मोमबत्ती भी भरी महफ़िलमें सबके देखते-देखते जलकर राख हो गयी। मैंने माना कि तू बहुतोंसे बढ़कर शक्तिशाली है, मगर यह भी तो सोच कि कोई तुझसे भी बढ़कर शक्तिशाली है।

●

११

दानेका फन्दा

रास्तेमें मेरे सामनेसे एक जवान निकला। उसके पीछे एक बकरी खुट-खुट करती चली जा रही थी। मैंने उस जवानसे कहा, "यह रस्सी और क़ैदकी वजह है कि बकरी तेरे पीछे-पीछे जा रही है।"

जवानने फ़ौरन् बकरीके गलेसे रस्सी खोल दी। बकरी अब उसके

दाहिने-बायें उछलती-कूदती जाने लगी। वह रास्ते-भर उसके पीछे इसी तरह दौड़ती रही; इसलिए कि उसके हाथसे बराबर दाना-घास पाया करती थी।

जब वह जवान घूम-फिरकर वापस आया, तब कहने लगा, "बकरी रस्सीके ज़ोरसे मेरे पीछे-पीछे नहीं चल रही है बल्कि एहसानका फन्दा इसके गलेमें पड़ा हुआ है और वही इसे मेरे पीछे-पीछे चलनेके लिए मजबूर कर रहा है। बकरीकी तो बिसात ही क्या है, दानेका फन्दा इतनी ताक़त रखता है कि उसकी वजहसे पहाड़-सा हाथी भी महावतके इशारेपर नाचने लगता है।"

●

१२

भलाई वही कमाता है जो भलाई करता है

किसी शख्सने जंगलमें एक अपाहिज लोमड़ी देखी। वह अल्लाहकी क़ुदरतपर हैरतमें रह गया और सोचने लगा कि यह कैसे ज़िन्दगी गुज़ारती है—ऐसे बेकार हाथ-पैरोंसे कैसे खाना जुटाती है? वह इस खयालमें हैरान-परेशान हो ही रहा था कि एक शेर मुँहमें गीदड़ दबाये हुए वहाँ आ पहुँचा। उसने गीदड़का कुछ हिस्सा खाकर अपना रास्ता नापा। जो हिस्सा बच रहा, वह बड़े मज़ेसे लोमड़ीने खा लिया। दूसरे दिन भी इसी तरहका संयोग हुआ और खाना देनेवालेने लोमड़ीके मुँह तक खाना पहुँचा दिया।

यह चमत्कार देखकर जैसे उस आदमीकी आँखें खुल गयीं। उसे विश्वास हो गया कि कोई कोशिश करे या न करे, अल्लाह उसे खाना

ज़रूर देते हैं। इसके साथ ही उसने निश्चय कर लिया कि अब तो मैं परवरदिगारपर भरोसा करूँगा और एक कोनेमें जा बैठूँगा; जब वह हाथी जैसे पेटूको भरपूर खाना देता है, तब क्या मुझे दो रोटियाँ भी न देगा ? बस, वह एक गुफामें जा बैठा और इसी आशामें घड़ियाँ गिनने लगा कि अल्लाहताला आकाशसे अब रोटी भेजता है—-अब रोटी भेजता है। इसी तरह समय बीतता गया और क्या अपना, क्या बिराना, कोई उसका दर्द बँटाने न आया।

धीरे-धीरे उसका हाल बहुत बुरा हो गया। चंग बाजेकी तरह उसकी चमड़ीसे रगें और हड्डियाँ बाहर झाँकने लगीं। कमज़ोरीने उसे यहाँतक दबाया कि वह सब्र और होश-हवाससे हाथ धो बैठा। अचानक आकाशसे उसके कानोंमें आवाज़ आयी, "ऐ कमीने जा, शेरकी तरह मोटी गरदन करना चाहता है तो शेरकी तरह जौहर अपना! लोमड़ीकी तरह पड़ रहनेमें कौन-सी भलाई समझता है ? शेरकी तरह शिकार कर और दूसरोंको खिला। ग़ैरोंकी जूठनपर क्यों जी ललचाता है ? जबतक हो सके, अपने बाजुओंकी क़ूवतसे कमा और खा। मर्दोंकी तरह छाती फाड़, खुद आराम उठा और दूसरोंको आराम पहुँचा। तकलीफ़से तो हीजड़े मुँह चुराया करते हैं।"

ऐ नसीहत क़ुबूल करनेवाले, दूसरोंकी मदद कर। इस बातकी उम्मीद-मत रख कि दूसरे तेरी मददको दौड़ें। अल्लाहताला तो उसपर दयालु होता है, जो प्राणियोंको आराम पहुँचाता है। उदारता तो वही सिर करता है, जो दिमाग़ रखता है। पस्तहिम्मतवाले सिरमें दिमाग़ ही कहाँ होता है, वही व्यक्ति इस दुनियामें और उस दुनियामें भलाई कमाता है, जो अल्लाहके बनाये जीवोंकी भलाई करता है।

१३

बेकार बकवास करनेवाला ख़ाली ढोल है

रूममें एक ऐसा शख्स था जो बड़ा मिलनसार था और बड़ी साफ़ तबीयत रखनेवाला भी समझा जाता था। वह अपनी इन ख़ूबियोंके लिए पास-पड़ोसके इलाक़ोंमें मशहूर भी था। जब मैंने उसकी यह तारीफ़ सुनी तब मैं कुछ मुसाफ़िरोंके साथ उसके दर्शन करने गया। वह हम लोगों-के साथ बड़ी मुहब्बतसे, बड़ी इज़्ज़तसे, पेश आया। उसने इस तरह हम लोगोंके सिर और आँखोंको चूमा जैसे वह हमारा बरसों पुराना दोस्त हो।

मैंने उस शख्सके नौकर-चाकर, घर-मकान, बाग़-बगीचे और ठाट-बाट देखे। इसमें शक नहीं कि वह अमीर आदमी था। मगर बिना फल-फूलवाले पेड़की तरह रूखा भी था। सूरत-शक्ल और बातचीतसे वह ज़रूर मेहर-बान और भला आदमी जान पड़ता था, मगर उसका रसोईघर ठण्डा पड़ा हुआ था। इसके बाद रात-भर किसीको चैन न मिला—उसको मालाके दाने गिनने और अल्लाह-अल्लाह पुकारनेसे और हम सबको भूखों छटपटानेसे। जब सवेरा हुआ, तब उसने दरवाज़ा खोला और फिर वही कलवाली मुह-ब्बत दिखाना और मीठी-मीठी बातें सुनाना शुरू किया।

हम लोगोंके साथ एक नौजवान भी था जो साफ़ तबीयतवाला और साफ़ बोलनेवाला था। जब उस अमीरकी बातें सुनते-सुनते वह थक गया तब मजबूर होकर बोला, "ऐ भले आदमी, बेकारकी ये बातें छोड़। अगर दरवेशको बोसा देता है तो बोसेका तोशा—रास्तेमें खानेका सामान—भी तो दे! सेवाके लिए मेरे जूतेपर हाथ मत रख, बल्कि मुझे रोटी दे। जो व्यक्ति दूसरोंके हितको अपने हितसे ऊपर समझते हैं, वे ही दूसरोंसे आगे निकल

जाते हैं; न कि वे जो दिखावेके लिए रात-रात-भर जागा करते हैं, मगर दिल मुर्दा रखते हैं। यह बात तो मैंने तातारके चौकीदारोंमें भी देखी है, जिनका दिल तो मुर्दा होता है मगर आँखें रात-भर खुली रहती हैं। बुजुर्ग और जवाँमर्द वह कहलाता है जो रोटी देता है। बेकार बकवास करनेवाला तो खाली ढोल है ?"

उस समय व्यक्तिके लिए स्वर्गमें भी अशान्ति है जो स्वार्थके चक्करमें पड़ा रहता और अधिकार छोड़ बैठता है। हाँ, स्वार्थसे अधिकार ठीक हो सकता है। जो दस डग भी नहीं भर सकता, वह कहने-भरके लिए सहारा है। मतलब यह है कि जिस वचनपर अमल नहीं किया जाता वह बेकार है।

●

१४

भलमनसाहत पैदाइशसे ही होती है

हातिमके अस्तबलमें अरबी नस्लका एक ऐसा घोड़ा था, जो धुएँकी तरह हलका जिस्म रखता था, हवाकी तरह चलता था और अपनी चंचलतासे बिजलीको भी मात करता था। जंगलों और पहाड़ोंमें दौड़ता क्या था, गोया सावनके बादलोंकी तरह गरजता था। कभी सैलाबकी तरह मस्तीसे ज़मीन नापता था और कभी इस तरह चौकड़ियाँ भरता था कि बवण्डरको भी पीछे छोड़ जाता था। मतलब यह कि वह घोड़ा सब तरह नायाब था—बस, आप ही अपनी मिसाल रखता था।

एक बार कुछ लोगोंने रूमके सुलतानसे हातिमकी चर्चा की और कहा, "जिस तरह हातिम बख्शीश करनेमें बेमिसाल है उसी तरह उसका घोड़ा भी जवाँमर्दीमें बेमिसाल है : क्या चलनेमें, क्या दौड़नेमें, और क्या जंगमें।

जंगल और पहाड़ ऐसे तय करता है जैसे किश्ती दरियापर नाचती चली जाती है। और तो क्या, उस अरबी नस्लके घोड़ेके सिरपर कौआ भी नहीं उड़ सकता।"

यह सुनकर सुलतान अपने अक़्लमन्द वज़ीरसे बोला, "यह दावा मंज़ूर करना गोया बेगुनाह होनेपर भी शर्मिन्दगीका भार उठाना है। मैं मानता हूँ कि हातिम सरदारीका दबदबा और दानशीलताका गर्व करता है; मगर वह बेमिसाल दानी है—यह ज़रा समझमें न आनेवाली बात है। हालाँकि मैं उससे वह अरबी नस्लवाला घोड़ा नहीं चाहता, फिर भी उसकी परीक्षा लेनेमें क्या हर्ज है? अगर उसने घोड़ा देनेसे मुँह न फेरा, तब तो ठीक है; वरना यही समझना चाहिए कि ये सब चर्चाएँ ढोलकी आवाज़ें हैं।"

इसके बाद सुलतानने एक विद्वान् और अक़्लमन्द दूतको दस आदमियोंके साथ हातिमके पास भेजा। अब तो उनका यह हाल हुआ जैसे बरसता हुआ बादल ठण्डी हवाके मेलसे मुर्दा ज़मीनमें जान डाल दे। वे सब ख़ुशी-ख़ुशी लम्बे सफ़रकी तकलीफ़ उठाते हुए हातिमके डेरेपर उतरे। हातिमके पास उन्होंने ऐसा आराम पाया जैसे प्याससे छटपटाता हुआ आदमी ज़िन्दहरूह नदीके किनारे पहुँच जाये। हातिम कई दिन तक खुले दिलसे उनकी आवभगत करनेमें लगा रहा। फिर शक्कर और मेवोंसे उनके दामन भरते-भरते बोला, "आखिर इतनी तकलीफ़ उठाने और यहाँतक आनेका मक़सद भी तो ज़ाहिर कीजिए!"

जब दूतने अपने आनेका मतलब बताया तब हातिम बहुत परेशान हुआ। मारे अफ़सोसके होश-हवास खो बैठा और दाँतोंसे अपनी हथेली काटते-काटते कहने लगा, "ऐ खुशनसीब नेकनाम अक़्लमन्द, तूने आते ही अपने सुलतानका पैग़ाम क्यों नहीं सुनाया? मैंने वह हवा जैसी तेज़ रफ़्तारवाला घोड़ा उसी दिन ज़िबह करा डाला था और उसके कबाब तुझे खिला दिये थे। बात यह हुई कि उस दिन पानी बड़ी कसरतसे बरस रहा था।

इसलिए घोड़ा चरागाहकी तरफ़ नहीं गया था और मैं यहाँ-वहाँसे कोई जानवर मँगवानेसे लाचार था। फिर मेरे पास उस घोड़ेके सिवाय ऐसा कोई सामान भी नहीं था, जो मैं तुझे खिलाने-पिलानेके लिए कुछ इन्तज़ाम कर सकता। भला मैं कैसे यह गवारा करता कि मेरा मेहमान भूखा पड़ा रहे और पेटकी आगसे उसका दिल झुलस जाये! बस, मैंने वही घोड़ा कटवाया और तेरी खातिर-तवाज़ो की। मैं अपना आराम नहीं चाहता, अपना नाम नहीं चाहता; हाँ, यह ज़रूर चाहता हूँ कि मेरी वजहसे किसीका दिल ज़ख्मी न हो। अगर तूने आते ही अपने सुलतानका पैग़ाम सुना दिया होता तो मैं शायद कुछ और इन्तज़ाम कर लेता।"

इसके बाद हातिमने हर आदमीको खिलअतके साथ एक-एक घोड़ा दिया। जब उन्होंने रूम लौटकर अपने सुलतानको इस जवाँमर्दका यह हाल सुनाया तब उसने ताज्जुबमें आकर उसकी बड़ी तारीफ़ की और कहा, "सच है इनसानमें भलमनसाहत पैदाइशसे ही होती है; पैदा नहीं की जाती।"

•

१५

सख़ी लोगोंका सरदार

याद नहीं आता, किसने मुझे यह कहानी सुनायी थी कि हातिमके ज़मानेमें यमनका एक बादशाह बड़ा मशहूर था, बड़ा नामवर था। वह खज़ाना लुटानेमें अपनी मिसाल न रखता था। एक तरहसे वह दानका बादल था और उसके हाथसे वर्षाकी भाँति धनकी धारा बहती रहती थी। अगर कोई उसके सामने हातिमका नाम भी लेता तो वह चिढ़ उठता था और कहने लगता था, "उस ज़रासे आदमीकी ये बड़ी-बड़ी

चर्चाएँ कबतक होती रहेंगी ! उसके पास न मुल्क है, न हुक्म है, न ख़ज़ाना है; भला वह मेरी बराबरी क्या करेगा ?"

एक बार बादशाहने किसी ख़ुशीमें बड़ी धूमधामसे जलसा किया और बहुत-से लोगोंको दावत दी। जब महफ़िल जमा हुई, तब बातों-बातोंमें हातिमकी चर्चा चल पड़ी और उसकी तारीफ़ोंके पुल बाँधे जाने लगे। अब क्या था, मारे ईर्ष्या और क्रोधके बादशाहके दिलमें वैरकी आग धधक उठी। उसने बिगड़कर कहा, "जब तक मेरे ज़मानेमें हातिम मौजूद है तबतक नेकीमें मेरा नाम न होगा। लोग बराबर उसीके गीत गाते रहेंगे।" इसके साथ ही उसने एक आदमीको हुक्म दिया, "जा हातिमका सिर काट ला।"

बादशाहका हुक्म हुआ, तो क़ातिल उस जवाँमर्दका सिर उतारनेके लिए चल दिया। रास्तेमें उसे एक जवान मिला, जो ख़ूबसूरत था, अक़्लमन्द था, और इतना मीठा बोलनेवाला था कि मानो उसके मुँहसे फूल झड़ते थे। वह बड़ी मुहब्बतसे क़ातिलको अपने घर ले गया। उसने इतनी हमदर्दीसे क़ातिलकी मेहमानी और ख़ातिर-तवाज़ो की कि उसका दिल अपनी मुट्ठीमें कर लिया। जब दूसरे दिन सवेरे क़ातिल चलनेको तैयार हुआ तब जवानने उसके हाथ चूमते-चूमते कहा, "कुछ दिन ठहरिए न, यह आप ही का घर है !"

क़ातिलने जवाब दिया, "ठहरनेको तो मेरा जी भी चाहता है; मगर क्या करूँ, मेरे सिरपर एक बड़े मुश्किल कामका बोझ लदा हुआ है। अगर उसमें देर होगी तो मैं बड़ी मुसीबतमें फँस जाऊँगा।"

जवान बोला, "मुझे अपना दोस्त समझिए और हर्ज न हो तो बताइए, वह कौन-सा मुश्किल काम है। मुमकिन होगा, तो मैं भी जी-जानसे आपका साथ देनेकी कोशिश करूँगा।"

क़ातिलने कहा, "आपको बतानेमें हर्ज ही क्या है। आप जवाँमर्द हैं और जानता हूँ कि ज़वाँमर्द कामकी बात पोशीदा रखते हैं। शायद आपने

सुना होगा कि इस मुल्कमें हातिम नामका एक शख्स रहता है। वह बड़ा भला आदमी है और हमेशा नेकीके काम किया करता है। मगर यमनका बादशाह उससे दुश्मनी रखता है और उसका सिर चाहता है। मैं उसीका सिर लेने आया हूँ। अगर मुमकिन हो तो आप मुझे उसके घर तक पहुँचा दीजिए। फिर बाक़ी काम तो मैं आप ही निबटा लूँगा।"

जवान हँसकर बोला, "तब तो आपको यहाँ-वहाँ भटकनेकी ज़रूरत नहीं है। हातिम मैं ही हूँ। मेरा सिर हाज़िर है। बस, तलवार सँभालिए और अपना काम ख़त्म कीजिए। मैं नहीं चाहता कि आप देर करें और अपना काम बिगाड़ लें। अगर मेरी जान आपकी भलाईपर क़ुरबान हो जाये, तो मेरे लिए इससे बढ़कर सवाबकी और क्या बात होगी! सोच-विचारकी क्या ज़रूरत, बेखटके मेरा सिर तनसे जुदा कीजिए।"

हातिमकी यह दिलेरी, यह सखावत देखकर क़ातिल सन्नाटेमें आ गया। उसने अपनी तलवार तोड़कर फेंक दी और ज़मीन पकड़ ली। अब उसका यह हाल था कि वह कभी हातिमके पैर पकड़ता था, कभी हाथ चूमता था, कभी सिरपर होंठ रखता था, कभी उसे अपनी छातीसे लगाता था, और कहता था, "ऐ हातिम, तू वास्तवमें सखावतका पुतला है। तेरी जैसी तारीफ़ सुना करता था, तुझे उससे कहीं बढ़कर पा रहा हूँ। क़सम है पैदा करनेवालेकी, अगर मैं तुझे फूल भी फेंककर मारूँ तो मर्द नहीं, नामर्द हूँ। बस, मैं तो तेरे क़दमोंका ग़ुलाम हूँ और हमेशा बना रहूँगा।"

इसके बाद क़ातिल यमन लौट आया। बादशाह उसे खाली हाथ देखते ही समझ गया कि उसने कोई काम नहीं किया, इसलिए बिगड़कर बोला, "कहाँ है हातिमका सिर? क्या वह तुझे मिला नहीं? या डरकर तो नहीं भाग आया? यह भी हो सकता है कि तू उसकी सखावत देखकर अपना फ़र्ज़ भूल गया हो। जो बात हो साफ़-साफ़ बयान कर!"

क़ातिलने ज़मीन चूमते-चूमते कहा, "जहाँपनाह अक़्लमन्द हैं,

इन्साफ़-पसन्द हैं, दूधका दूध और पानीका पानी करते हैं, अगर मेरी जान बख्श दें तो मैं कुछ अर्ज़ करनेकी हिम्मत भी बांधूं।"

बादशाह बोला, "भला सचाई ज़ाहिर करनेमें क्या डर ! जो बात हो बेधड़क कहो।"

क़ातिलने उसी तरह ज़मीन चूमते-चूमते कहा, "जहाँपनाह, मैं नाम-वर हातिमकी क्या तारीफ़ करूं ! मैंने जैसा सुना था, हातिमको वैसा ही पाया ! मैंने हातिमको हर तरह ख़ूबसूरत और अक़्लमन्द पाया। मैंने हातिमको हर तरह जवाँमर्द और हुनरमन्द पाया। मैंने हातिमको हर तरह बहादुर और दिलेर पाया ! क्या कहूँ, उसके एहसानके घूंसेने मेरी कमर तोड़ दी और उसकी मेहरबानीकी तलवारने मेरी जान ले ली। मुझमें ताक़त नहीं कि मैं उसकी बख्शीशका हाल बयान कर सकूं। उसकी भलमनसाहत देखकर तो मैं अपनेको ही भूल गया। अगर जहाँ-पनाह ही तशरीफ़ ले जायें तो शायद उसका सिर उतार सकें।"

इसके बाद जब क़ातिलने अपने तजुरबेका पूरा-पूरा बयान किया तब तो बादशाह चकित होकर रह गया और बोला, "हक़ीक़तमें हातिम सख़ी लोगोंका सरदार है। उसके नामपर बख्शीशकी मोहर लगी हुई है। जैसा उसका नाम है वैसा ही उसमें असर है। लोग उसकी जो तारीफ़ करते हैं वह बिलकुल ठीक है।"

●

१६

असल मोतीकी आब

मैंने सुना है कि हज़रत रसूलिल्लाहके ज़मानेमें तय-खानदानके लोगोंने बहुत सिर उठाया और आखिर बग़ावत कर दी। हुजूरने मजबूर होकर

लश्कर भेजा, जो बहुत-से बाग़ियोंको गिरफ़्तार कर लाया। हुज़ूरने हुक्म दिया, "जब तक ये लोग मेल-जोलके लिए राज़ी न हों, तबतक क़ैद रखे जायें।"

क़ैदियोंमें एक औरत भी थी। उसने रसूलिल्लाहसे दरख्वास्त की, "मैं हातिमकी बेटी हूँ। ऐ हज़रत, मुझपर रहम कीजिए, इसलिए कि मेरा बाप सबपर रहम करता था। मैं तमाम ज़िन्दगी आपकी यह मेहरबानी न भूलूँगी।"

इस दरख्वास्तपर हातिमके नामने औरतकी ऐसी ज़बरदस्त सिफ़ारिश की कि रसूलिल्लाहका दिल पानी-पानी हो गया और उन्होंने हुक्म दिया, "यह औरत फ़ौरन इज़्ज़तके साथ रिहा कर दी जाये। बाक़ी लोग बाक़ायदा क़ैद रहेंगे।"

मगर औरत रिहा होनेपर भी वहाँसे हटी नहीं। वह रो-रोकर पहरेदारोंसे कहने लगी, "मेरी दरख्वास्तका यह मतलब नहीं था कि मैं अकेली ही रिहा कर दी जाऊँ और मेरी क़ौमके लोग क़ैदमें पड़े रहें। इससे तो बेहतर यही है कि तुम लोग मुझे क़त्ल कर डालो। मेरे अब्बा हमेशा दूसरोंके लिए अपनी जान हथेलीपर लिये रहते थे, फिर मैं अपनी क़ौमवालोंको कैसे छोड़ दूँ? यह तो इनसानियतका मज़हब नहीं है।"

जब उसके रोनेकी आवाज़ रसूलिल्लाहके कानोंमें पहुँची तब उनसे न रहा गया और उन्होंने मेहरबानी कर सब लोगोंको छोड़नेका हुक्म दे दिया, सच है, असल आदमी वह मोती होता है जो अपनी आब हमेशा क़ायम रखता है।

●

१७

बदोंके साथ नेकी करनेमें क्या तुक ?

मैंने सुना है कि एक मर्द दिन-रात फ़िक्रसे परेशान रहता था—इस-लिए कि उसकी छतपर शहदकी मक्खियोंने छत्ता लगा रखा था। वह तो किसी तरह छत्ता वरबाद कर डालना चाहता था, मगर उसकी बीवी हर वार यही कहती थी, "रहने भी दो ! वेचारी मक्खियाँ वेगुनाह हैं। अगर तुम उनका छत्ता तोड़ डालोगे, तो वे बग़ैर घर-द्वारके हो जायेंगी और इधर-उधर मारी-मारी फिरेंगी।"

एक दिन मर्द तो दुकानपर चला गया, यहाँ मक्खियोंने उसकी बीवी-पर हमला किया और दे डंक, दे डंक, उसका बुरा हाल कर दिया। वह घबराकर घरसे बाहर भागी और लगी गली-कूचोंमें दौड़ने और शोर मचाने, "अरे, कहाँ गये ! दौड़ो-दौड़ो, मेरी जान बचा लो ! हाय-हाय, ये निगोड़ी मक्खियाँ मुझे बग़ैर मौत मारे डालती हैं ! अरे, मेरी पुकार क्यों नहीं सुनते—मैं कबतक चीखती-चिल्लाती रहूँ ?"

यह हाल मालूम होते ही मर्द दुकान छोड़कर घर दौड़ा आया। उस-पर नज़र पड़ते ही बीवी और जोरोंसे बक-झक करने लगी। तब तो मर्द बिगड़कर बोला, "मुझपर क्या नाराज़ होती है ! यह मुसीबत कुछ मैंने तो बुलायी नहीं है। तू ही तो कहती थी कि मक्खियाँ ग़रीब हैं, बेगुनाह हैं, उनका घर न उजाड़ो ! अब तुझे कौन समझाये कि जो शख़्स बदोंके साथ नेकी करता है, वह अपनी इस खूबीसे बदोंको भी और बद बना देता है।"

अगर कोई अपने दिलमें लोगोंको सतानेका शौक़ रखता है, तो तलवार या कुल्हाड़ीसे उसका गला काट डालना ही अच्छा है। कुत्तेके सामने थाल रखनेमें कौन-सी तुक है ? उसके सामने तो हड्डी ही फेंकनेकी ज़रूरत

है। किसी गाँवके मुखियाने क्या अच्छी बात कही है कि लात मारनेवाला गधा जितना ज़्यादा लदा रहे उतना ही बेहतर है। अगर कोतवाल नेकी-का बरताव करनेपर उतर आये, तो लोग रातको चोरोंकी वजहसे सुख-की नींद भी न ले सकें।

लड़ाईके मैदानमें भालेका बाँस क़ीमतमें एक लाख गन्नोंसे कहीं बढ़कर समझा जाता है। सभी आदमियोंका पद एक-बराबर कैसे ठहराया जा सकता है, जबकि कोई इनामका अधिकारी होता है तो कोई सज़ाका। अगर तू बिल्लीपर मेहरबानी करेगा तो वह यक़ीनन तेरा कबूतर पकड़ ले जायेगी। जिस इमारतकी बुनियाद कमज़ोर है, उसे बुलन्द करना अक़्लमन्दी नहीं है। अगर तू उसे बुलन्द करेगा ही, तो वह एक दिन भर-भराकर गिर जायेगी।

●

तीन

प्रेम प्राणि-जीवनका एक अनिवार्य व्यापार है : और 'इश्क़' और 'प्रेम' दो नहीं, एक ही भाव और एक ही सत्य हैं। यह इश्क़ 'मजाज़ी' अर्थात् 'मानुषी' और 'हक़ीक़ी' अर्थात् 'ईश्वरीय' दो रूपोंमें विभक्त होता है; और बहुधा पहलेकी पृष्ठभूमिपर ही दूसरा विकास पाता है।

●

१
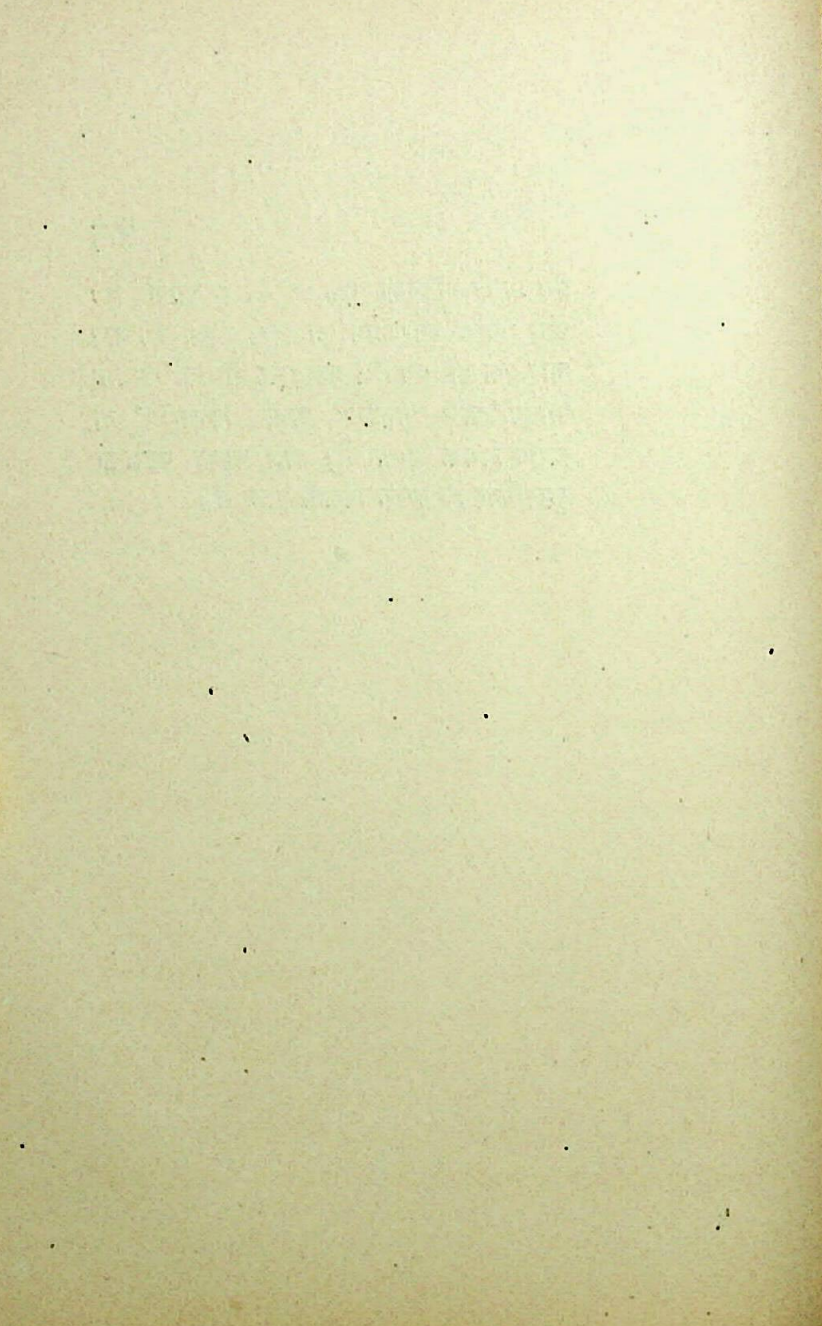
मस्त ऊँट ही बोझ आसानीसे ले जाते हैं

जो ईश्वरके चिन्तनमें परेशान हैं, सचमुच उन्हींका वक़्त अच्छा गुज़रता है, भले ही ये बेहाल नज़र आयें या अपने ज़ख्मोंपर मरहम मलते दिखायी दें। जो अमीरीसे नफ़रत करते हैं, वे परमात्मासे परलोकमें सुख पानेकी उम्मीदपर सबसे काम लेते हैं। घड़ी-घड़ी तकलीफ़की शराब पीते हैं, यानी तकलीफ़ सहते हैं, और ज्यों-ज्यों तकलीफ़ सहते हैं त्यों-त्यों खामोश रहते हैं।

यह मानी हुई बात है कि शराबके नशेमें खुमारका दुखड़ा छिपा रहता है, ठीक उसी तरह जिस तरह अच्छे-से-अच्छे फूलके पीछे काँटेका हथियार। सचमुच वह सब्र कड़वा नहीं रहता जो प्यारेकी यादमें होता है। कौन नहीं जानता कि प्यारेके हाथसे मिली हुई कड़वी चीज़में भी मिठास मालूम देती है! भला प्रेमका क़ैदी कब चाहेगा कि वह अपने प्यारेकी क़ैदसे रिहाई पा जाये? भला प्रेमका शिकार क्यों चाहेगा कि वह अपने प्यारेके फन्देसे छुटकारा पा जाये?

परमेश्वरमें यक़ीन रखनेवाले फ़क़ीर एकान्तमें रहना ही पसन्द करते हैं—इसलिए कि मंज़िल जाननेवाले भी क़दम भूल जाते हैं। जो यारके प्रेममें दीवाने होते हैं वे खुशी-खुशी धिक्कारोंकी बौछार बरदाश्त करते हैं। आखिर मस्त ऊँट ही तो बोझ आसानीसे ले जाते हैं। भला उनकी हैसियतपर मामूली लोग कैसे पहुँच सकते हैं जो अमृतकी तरह अँधेरेमें रहते हैं? वे बाहरी हालतसे भले ही खराब नज़र आयें, उनके दिल तो

'बैतुल-मुकद्दस' (हज़रत सुलेमानकी जेरुसलममें बनवायी हुई वह मसजिद जिसे मसजिदे-अकसा भी कहते हैं और कावेकी स्थापनासे पहले जिसकी तरफ़ मुँह करके नमाज़ पढ़ी जाती थी) की तरह रोशनी-से भरे हुए होते हैं। परवानेकी तरह अपने-आपको जला देते हैं, न कि रेशमके कीड़ेकी तरह खोल पहन लेते—यानी घमण्डी बन बैठते हैं।

●

२

हड्डी और चमड़ेके ढाँचेका ही नाम इनसान नहीं

मैंने एक जानकार बूढ़ेसे सुना है कि जब किसी मस्ताने जवानने जंगलमें जाकर रहनेका इरादा किया तब उसका बाप उसकी जुदाईके ख़यालसे बहुत घबराया। वह खाना-पीना छोड़कर एक तरफ़ जा बैठा और आँसू बहाने लगा। यह देखकर लोगोंने खैरख्वाहीका मक़सद सामने रखा और जवानको बहुत-कुछ समझाया। इसपर उसने जवाब दिया।

"जबसे मेरे महबूबने मुझे अपना बना लिया है, तबसे न किसी शख्ससे मेरा ताल्लुक़ है, और न मुझे किसी शख्ससे मेल-जोल रखनेकी ज़रूरत है। खुदाकी क़सम, जबसे हक़ने मुझे उसका हुस्न दिखाया है, तबसे मैं पहले देखा हुआ सब-कुछ भुला बैठा हूँ। कौन नहीं जानता कि जो लोगोंसे अपना मुँह मोड़ लेता है—दुनियासे अपना ताल्लुक़ तोड़ लेता है, वह अपने खोये हुएको पा लेता है—अपने मक़सदको हासिल कर लेता है।

"दुनियामें ऐसे बहुत लोग हैं, जो जाहिरा परेशान-हाल नज़र आते हैं—आसमानके नीचे रहते हैं और जानवरोंमें भी शुमार किये जा सकते

हैं—फ़रिश्तोंमें भी बिठाये जा सकते हैं। मगर वे न तो बादशाहोंकी तरह मुल्ककी फ़िक्रमें बेचैन रहते हैं और न भिखमंगोंकी तरह दिन-रात लोगोंके आस-पास चक्कर काटा करते हैं। फिर भी मजबूत बाजुओं और छोटे हाथोंवाले होते हैं और अक़्लमन्द भी माने जाते हैं, होशियार भी समझे जाते हैं और मस्त भी कहलाते हैं।

"वे कभी एकान्तमें मज़ेसे गुदड़ी पहनते हैं और कभी परेशानीसे भरी महफ़िलमें गुदड़ी जलाते हैं। न अपना खयाल रखते हैं, न किसी औरकी परवाह करते हैं, न अपने एकान्त कोनेमें किसी दूसरेको ठहरने-की गुंजाइश देते हैं। हक़ीक़तमें वे परेशान अक़्लवाले और खोये हुए होशवाले रहते हैं। अगर कोई उनको नसीहत करना चाहे, तो वे फ़ौरन उसकी तरफ़से अपने कान हटा लेते हैं।

"भला नदीमें रहनेवाली बतख़ पानीमें डूब मरनेका रस क्या जाने! भला आगमें पैदा होनेवाला समन्दर (बड़े चूहे-जैसा एक प्राणी) जलनेका मज़ा क्या जाने! भला दुनियाके जालमें उलझा रहनेवाला इनसान आशिक़ों की आज़ारीका ज़ायक़ा क्या जाने! माना कि वे खाली हाथ रहते हैं, मगर हौसिला-मन्द ऐसे होते हैं कि क़ाफ़िलेका दामन पकड़े बग़ैर जगलोंमें गुज़-रते हैं। लोगोंसे किसी बातकी उम्मीद रखना पसन्द नहीं करते। बस अपने लिए अल्लाहकी पसन्दगी ही काफ़ी समझते हैं।

"वे ईमानवाले ऐसे होते हैं कि अपनेको लोगोंकी निगाहोंसे बचाते हैं —यानी दुनियादारोंकी तरह रहते हैं, न कि उन काफ़िरोंकी तरह जो मोमिनों (ईमानवालों) के लिबाससे अपनी शान बढ़ाते हैं। वे मेवेसे भरे हुए सायेदार अंगूरके पौधेकी तरह होते हैं, न कि उन गुनहगारोंकी तरह जो सूफ़ियों-जैसे नीले कपड़े पहनते हैं। सीपीकी तरह ख़ुद ही अपना सिर झुकाकर चलते हैं, न कि उन नालोंकी तरह जो फेन उगलते हुए बहते हैं।"

सिर्फ़ हड्डी और चमड़ेके ढाँचेका ही नाम इनसान नहीं है, और न हर

ज़ाहिरी सूरतमें इनसान मौजूद रहता है। बादशाह न तो हर गुलामका खरीदार होता है और न हर गुदड़ीमें लाल ही पाया जाता है। अगर ओलेका हर जमा हुआ क़तरा मोती बन सकता, तो बाज़ारमें कौड़ियोंकी तरह मोतियोंके ढेर नज़र आते।

आशिक़ लोग नटोंकी तरह दिखावेके लिए अपने हाथ-पैर रस्सियों-से नहीं बाँधते। वे उस लकड़ीके घोड़ेकी तरह भी नहीं होते, जिसका क़दम मुश्किलसे उठता, और फिर जल्दीसे गिर जाता है। वे तो मौत-की तनहाईके दोस्त होते हैं—ऐसे दोस्त कि एक ही घूँटमें क़यामत तक के लिए मस्त हो जाते हैं। वे तलवारके खौफ़से अपने मतलब, अपने मक़-सद, को छोड़ना नहीं जानते; बस, हर हालतमें आगे ही बढ़ते हैं।

सच है, इश्क़ करनेके बाद मुसीबतोंसे बचना वैसा ही है जैसा कि चोट खानेके बाद शीशेका साबित रहना।

●

३

सच्चा प्रेमी

जो प्रेमके वरदानसे मालामाल हैं, दुनियाकी दौलतसे फ़क़ीर हैं, और ईश्वरकी राहपर चलनेवाले हैं,वे मुझे अकसर यह कहानी सुनाया करते हैं—

कोई बूढ़ा फ़क़ीर भीख माँगने निकला। उसने एक मसजिदके दरवाज़े पर ठहरकर आवाज़ लगायी। इसपर किसी शख्सने उससे कहा, "आगे बढ़! यह ऐसे आदमीका मकान नहीं है जो तुझे कुछ दे सके। फिर यहाँ इस तरह ढिठाईसे क्यों खड़ा है?"

फ़क़ीरने पूछा, "आखिर इस मकानका मालिक कौन है जो किसीको कुछ नहीं देता?"

वह शख्स बोला, "चुप रह। यह क्या बदतमीज़ी है जो मुँहसे ऐसे लफ़्ज़ निकालता है? इतना भी नहीं जानता कि इस घरका मालिक परम पिता परमात्मा है!"

फ़क़ीरने सिर उठाकर मसजिदपर एक नज़र डाली और उसका जलता हुआ ज़िगर दर्द-भरी फ़रियादसे चीख उठा, "अफ़सोस है, इस दरवाज़ेसे आगे बढ़ना–सद् अफ़सोस है इस दरवाज़ेसे खाली हाथ लौटना! मैं कभी किसी दरवाज़ेसे निराश नहीं हुआ, फिर भगवान्‌के दरवाज़ेसे क्योंकर वंचित रह सकता हूँ? बस, यहीं सवालका हाथ फैलाता हूँ और खूब जानता हूँ कि यहाँसे हरगिज़-हरगिज़ खाली हाथ न लौटूँगा।"

कहते हैं कि वह फ़क़ीर एक साल तक वहीं बैठा रहा और फ़रिया-दियोंकी तरह हाथ फैलाये रहा। जब एक रात उसकी ज़िन्दगीकी मियाद खत्म होनेको आयी, तब मारे कमज़ोरीके उसका दिल तड़पने लगा। सवेरा होनेसे कुछ पहले एक आदमी उसके पास पहुँचा तो देखता क्या है कि उसमें टिमटिमाते हुए चिराग़की तरह थोड़ी-सी जान बाक़ी है, फिर भी वह मारे खुशीके चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा है, "जिसने ईश्वरका दरवाजा खटखटाया, उसीने भरपूर फ़ायदा उठाया!"

सच्चे प्रेमीको सब्र करनेवाला और दिल मज़बूत रखनेवाला होना चाहिए। मैंने किसी कीमियागर (फ़ारसी साहित्यमें यह शब्द प्रेमीके लिए आता है।) को मुसीबतोंसे घबराते हुए नहीं देखा। वह चाँदी-सोनेको नाचीज़ मिट्टीमें दबा रखता है—इस खयालसे कि शायद किसी दिन राँगे को चाँदीकी और ताँबेको सोनेकी शक्लमें तबदील कर सके। यह सच है कि चाँदी-सोना हर चीज़ खरीदनेके लिए अच्छे होते हैं, मगर तू उनसे प्रेमीके नाज़नखरे कैसे खरीद सकता है?

●

४

कबहुँक दीन-दयालके भनक परैगी कान ?

ईश्वरके एक नेक बन्देने रात-भर प्रार्थना की और जब सुबह दुआके लिए हाथ उठाये तब अन्तरिक्षसे उसके बूढ़े कानोंमें आवाज़ आयी, "तेरी दुआ बेकार है। जा, अपना यह खयाल छोड़। इस दरवाज़ेपर तेरी दुआ क़बूल नहीं होगी। बस, ज़िल्लतके साथ चला जा, या फिर यहीं ठहरा रह और रोया-पीटा कर !"

और बूढ़ा वहीं ठहरा रहा और दूसरी रात भी बराबर इबादत करता रहा। किसी ईश्वर-विश्वासी शख्सने यह हाल सुना तब उस बूढ़े फ़क़ीरसे कहा, "जब तूने देख लिया कि तेरे मक़सदका दरवाज़ा बन्द है तो इतनी बेकार कोशिशमें क्यों वक़्त बरबाद करता है ?"

बूढ़ा अपने चेहरेपर खूनके आँसू बहाते हुए कराहकर बोला, "ऐ गुलाम, तू क्या समझे। माना कि उसने अपना मुँह मोड़ लिया है, मगर मैं तो चिल्ले (वह इबादत जो फ़क़ीर एकान्तमें चालीस दिन तक करते हैं।) पर क़ाबू रखना जानता हूँ। जब अभिलाषा रखनेवाला एक दरवाज़ेसे वंचित हो जाता है तो घबराकर दूसरा दरवाज़ा ताकने लगता है। मगर मेरे सामने दूसरा दरवाज़ा कहाँ है ? मैंने ग़ैबसे यह जरूर सुना है कि मेरे लिए इस कूचेमें कोई ठिकाना नहीं है, मगर क्या करूँ, मेरे सामने दूसरा रास्ता भी तो नहीं है।"

यह कहते-कहते उसका सिर ज़मीनसे जा लगा, और उसके कानोंमें अन्तरिक्षसे आवाज़ आयी, "बेशक, तू हमारा नेक बन्दा है। हमने तेरी प्रार्थना क़बूल नहीं की थी, मगर जब हमारे सिवाय तेरे लिए और कोई पनाह नहीं है तो हम तेरी दुआ क़बूल करते हैं।"

●

५

दूरी मुहब्बत हटने या घटनेकी निशानी नहीं है

किसीने मजनूँसे कहा, "तुझे क्या हो गया है जो तूने लैलाके क़बीलेकी तरफ़ आना छोड़ दिया ? शायद अब तेरे दिमाग़से लैलाका खब्त निकल गया है, और तेरा खयाल बदल चुका है, इसीलिए उसकी तरफ़ तेरा खयाल नहीं है।"

यह सुनकर बेचारा मजनूँ रोने लगा और बोला, "ऐ सरदार, मेरा दामन छोड़ दे। मेरा दिल खुद ही ज़ख्मोंसे भरा हुआ है; फिर तू क्यों उनपर नमक छिड़कता है ? दूरी मुहब्बत हटने या घटनेकी निशानी नहीं है; क्योंकि दूरी अकसर अनिवार्य हो जाती है।"

सरदारने कहा, "ए भली तबीयतवाले वफ़ादार, अगर लैलाको कोई सन्देश देना चाहे तो बता; मैं उस तक पहुँचा दूँगा।"

मजनूँने जवाब दिया, "नहीं, उसके सामने मेरा नाम न लेना। उसकी महफ़िलमें मेरी याद हो और मैं वहाँ न रहूँ यह तो अफ़सोसकी बात है।"

●

६

जहाँ स्वार्थ है वहाँ प्रेम नहीं

किसीने सुलतान महमूद ग़ज़नवीका मज़ाक़ उड़ाया, "देखो तो, अयाज़-जैसे बदसूरत ग़ुलामको बादशाह कितना चाहता है ! भला जिस फूलमें न खूबसूरती हो, न खूशबू हो, उसपर अगर बुलबुल आसक्त हो जाये तो यह ताज्जुबकी बात है या नहीं ?"

होते-होते यह बात महमूदके कानोंतक जा पहुँची। अपने इस मज़ाक़-पर वह बहुत गुस्सा, बहुत रंजीदा हुआ और बोला, "बेवक़ूफ़ लोग क्या समझें ! मेरी मुहब्बत तो अयाज़के गुणोंपर है न कि रूप-रंगपर। ख़ैर, देखा जायेगा, मेरा मज़ाक़ उड़ानेवाला कब तक सलामत रहेगा !"

मैंने सुना है कि एक दिन महमूद कहीं जा रहा था। अचानक एक तंग गलीमें ऊँट गिर पड़ा और मोतियोंका सन्दूक़ टूट गया। महमूदने अपने साथियोंको मोती लूटनेकी आज्ञा दे दी और खुद उस जगहसे सवारी जल्दी-जल्दी आगे बढ़ा दी। अब क्या था, साथी खुशी-खुशी मोती लूटने लगे और महमूद काफ़ी दूर निकल गया।

एकाएक जब महमूदने मुड़कर देखा, तब उन बड़े-बड़े ग़ुलामोंमें-से सिर्फ़ अयाज़को छोड़कर और कोई भी उसके साथ नहीं था। बस, उसने खुश होकर अयाज़से सवाल किया, "ऐ घुँघराले बालोंवाले, लूटके सामान-से तू भी कुछ लाया है ?"

अयाज़ने जवाब दिया, "कुछ भी नहीं जहाँपनाह ! मैं तो आपके पीछे-पीछे दौड़ रहा हूँ और आपकी सेवाके सामने बड़ीसे-बड़ी दौलतपर लानत भेजता हूँ।"

अगर तुझे बादशाहके नज़दीक हाज़िर होनेका मौक़ा मिलता है, तो उससे खिलअत लेनेमें ग़फ़लत करनेकी क्या ज़रूरत ? अगर कोई शख्स किसी पहुँचे हुए महात्मासे ईश्वरको पहचाननेके सिवाय और कुछ पाना चाहे, तो इससे यही पता चलता है कि न उसका दिल साफ़ है और न वह ठीक रास्तेपर है। अगर तू दोस्तसे उपकारकी आशापर दोस्ती रखता है तो इसका यही मतलब है कि तुझे सिर्फ़ अपनी ग़रज़से मुहब्बत है, दोस्तकी मुहब्बतसे नहीं।

जबतक लालचसे तेरा मुँह खुला हुआ है, तब तक तेरा दिल अदृश्य लोकके भेद किस तरह जान सकता है ? सत्य, जिसमें ईश्वर पाया जाता है, एक साफ़-सुथरा महल है और लालच या ख्वाहिश उसके बाहर

उड़नेवाला गर्द-गुबार ! क्या तू नहीं जानता कि जहाँ गर्द-गुबार उड़ता है वहाँ नज़र काम नहीं करती, भले ही वह चाहे जितनी तीखी, चाहे जितनी पैनी, हो ।

●

७

ईश्वर अपने भक्तोंकी देखभाल आप करता है

संयोगकी बात, मैं एक बूढ़े फ़क़ीरके साथ चला और एक नदीके किनारे पहुँचा । मेरे पास एक दिरहम था । इसलिए मल्लाहने मुझे तो किश्ती पर बैठा लिया, मगर मेरे बूढ़े साथीको छोड़ दिया ।

मल्लाह शायद ईश्वरसे डरना नहीं जानता था; फिर वह उस बूढ़े पर तरस खाता तो क्यों खाता ? उसने जल्दी-जल्दी किश्ती चलाना शुरू कर दिया । मगर मैं अपने साथीके बिछुड़ जानेसे रंजीदा हुआ और मेरी आँखोंमें आँसू भर आये ।

मेरे आँसू देखकर बूढ़ा ज़ोरसे हँसा और बोला, "ऐ मेहरबान दोस्त, मेरे लिए रंज मत कर । मुझे वह पार ले जायेगा जो सबकी किश्ती पार ले जाता है ।"

यह कहकर उसने पानी पर ही अपनी जा-नमाज़[1] बिछा दी । इसके बाद जो कुछ मुझे नज़र आया वह मेरा ख़याल हो सकता है या ख़्वाब । जब उस रात मदहोशीकी हालतमें मेरी आँख झँप गयी और सवेरा हुआ तब उसने मेरी तरफ़ देखकर कहा, "ऐ खुशनसीब, ताज्जुब क्या करता

---

१. वह कपड़ा जिस पर नमाज़ पढ़ी जाती है ।

है ? तुझे किश्तीवाला लाया है तो मुझे ख़ुद अल्लाह लाया है। समझ गया न ?"

कोई मेरी बातपर यक़ीन करे या न करे, ईश्वरके सच्चे भक्त आग और पानी दोनोंपर चल सकते हैं। तू बच्चा नहीं है, जो आग या पानीसे होनेवाला नुक़सान न समझ सके, मगर यह खयाल रख कि भगवान् उससे तेरी हिफ़ाज़त करनेवाला है। जो लोग प्रेमीके चिन्तनमें डूबे हुए हैं वे मानो ईश्वरकी ख़ुशीमें ख़ुश रहनेवाले हैं और वही उनकी देख-भाल रखनेवाला है। उसीने अपने दोस्त हज़रत [१] इबराहीमको आगमें जलनेसे और उसीने अपने दोस्त हज़रत [२] मूसाका सन्दूक़ नील नदीमें डूबनेसे बचाया था।

---

१. हज़रत इबराहीम एक पैग़म्बर थे। जब उन्होंने जनताको एकेश्वर-वादका सन्देश देना प्रारम्भ किया तब मिस्रका सम्राट् नमरूद उनसे बहुत रुष्ट हुआ। वह घोर नास्तिक था और स्वयं परमेश्वर होनेका दावा करता था। अतएव उसने इबराहीमके कार्यमें अनेक प्रकारसे बाधाएँ उपस्थित कीं। फिर भी वह अकृतकार्य रहा। अन्तमें उसने अग्निका एक विस्तृत अलाव लगवाया और हज़रतको उसमें फिंकवा दिया। जब कई दिन पश्चात् अग्नि शान्त हुई, तब हज़रत इबराहीम अलावमें सुरक्षित पाये गये। इसपर उनके भक्तोंने होलीके समान बड़े ही आनन्दसे उत्सव मनाया।

२. हज़रत मूसा भी एक बहुत बड़े पैग़म्बर थे। वह इसराइली जातिमें उत्पन्न हुए थे। उन दिनों मिस्रके सम्राट् फ़िरौनने यह आज्ञा दे रखी थी कि इसराइली जातिमें जितने बच्चे उत्पन्न हों वे सब तत्काल मार डाले जायें। हज़रत मूसाकी माता उनको तीन मास तक किसी प्रकार छिपाये रही। परन्तु जब उसने देखा कि उन्हें अधिक समय तक बचा रखना असम्भव है तब सरकण्डोंकी एक पेटीमें रखकर नील नदीमें बहा

जब लड़का तैरनेवालेका बाज़ू थाम लेता है तब फिर वह डरता नहीं, भले ही नदी चाहे जितनी गहरी क्यों न हो! मगर जब तू ख़ुश्की पर भी नहीं चल सकता, तब फिर महात्माओंकी तरह नदीके ऊपर क्योंकर क़दम रख सकता है?

८

ईश्वरके सामने सब कुछ नगण्य है

अक़लका रास्ता उलझी हुई गुत्थियोंके सिवाय और कुछ नहीं है—दीन-ईमान पहचाननेवाले बुज़ुर्गोंके नज़दीक अज्ञानके सिवाय और कुछ नहीं है। सचाईकी परख़ रखनेवालोंके सामने तो यह असलियत बयान की जा सकती है; मगर बुद्धिमान और तत्त्वज्ञानी इसपर नुक्ताचीनी करते हैं, तरह-तरहके सवाल उठाते हैं: आसमान क्या है, ज़मीन क्या है, इनसान क्या है, हैवान क्या है, ये दरिन्दे और परिन्दे क्या हैं?

इस तरह अक़्लमन्द अपनी पसन्दके सवाल करते रहते हैं। वे मानें, चाहे न मानें, मैं उनके सवालोंका एक जवाब यों देता हूँ—

"ज़मीन और आसमान, जंगल और वीरान, इनसान और हैवान, परी और जिन्न—इन सबका अस्तित्व ईश्वरके अस्तित्वके सामने

दिया। भाग्यवशात् उस पेटीपर फ़िरौनकी एक बेटीकी दृष्टि पड़ गयी। बस, उसने वह पेटी बाहर निकलवायी और अनजान अवस्थामें मूसाकी ही माताको बुलवाया और अपनी ओरसे उनके पालन-पोषणका भार सौंप दिया।

नगण्य है। तुम्हारे सामने तो नदी अपनी लहरोंकी वजहसे बड़ी चीज है और आसमान अपनी ऊँचाईकी वजहसे ताक़तकी खास हस्ती है। मगर तुम बाहरी आँखोंसे देखनेवाले क्या समझो कि भीतरी आँखोंसे देखनेवाले किसी दूसरी ही दुनियामें रहते हैं। उनके नजदीक तो चाँद-सूरज अणुके बराबर भी क़ीमत नहीं रखते और सातों समुद्र बूँद बराबर भी नहीं ठहरते। जिस दिन इज्जतका हाकिम अपना झण्डा ऊँचा करेगा, उस दिन तुम्हारी यह दुनिया बात-की-[illegible]में नष्ट हो जायेगी।"

९

ईश्वर काफ़ी है

किसी शख़्सने साद-बिन-जंगीकी तारीफ़ की। इसपर साद-बिन-जंगीने अपनी शानके मुताबिक़ उसकी ख़ातिर-तवाज़ा की और उसे ख़िलअ़त, अशर्फ़ियाँ वग़ैरह देकर ख़ुश किया।

उस शख़्सने अशर्फ़ियोंपर निगाह डाली। उनपर लिखा हुआ था : 'ईश्वर काफ़ी है।' बस, उसका हाल कुछ-का-कुछ हो गया। उसने शोर मचाया और शरीरसे खिलअत उतारकर फेंक दी। इतना ही नहीं, उसकी तबीयतमें यह सचाई आगकी तरह भड़की और वह अशर्फ़ियाँ वग़ैरह छोड़कर दौड़ता हुआ जंगलकी तरफ़ चला गया।

जंगलमें एक साथीने उससे कहा, "आख़िर यह तुझे क्या हुआ जो तेरी हालत इस तरह बदल गयी? पहले तो तूने बादशाहके सामने तीन बार ज़मीन चूमकर कोर्निश की, और जब उसने ख़िलअत वग़ैरह देकर तेरी इज्ज़त बढ़ायी तो तू उसे पीठ दिखाकर भाग निकला। शायद तेरी अक़्लका दिवाला निकल गया है।"

वह मुसकराकर बोला, "तू नहीं जानता। पहले तो मुझे बादशाहसे उम्मीद थी, इसलिए मैं बेतकी तरह कांपते-कांपते ज़मीनपर झुक गया था, मगर जब मुझे पता चला कि ईश्वर काफ़ी है तब फिर मेरी हालत बदलनेमें ज़रा भी देर न लगी। तू ही बता, अब उसके दबदबेके सामने मुझे किसीसे कुछ उम्मीद रखने और खौफ़ खानेकी क्या ज़रूरत है ?"

१०

.ख़ुशी और प्रेम का जोश ऊँट में भी होता है

अगर तू प्रेममें फँसा हुआ है तो अपनेको तुच्छ समझ, वरना प्रेमको छोड़ और आरामका रास्ता अख्तियार कर, प्रेमसे इसलिए मत डर कि वह तुझे खाक कर देगा। अगर वह तुझे खाक कर देगा तो हमेशाके लिए ज़िन्दगी भी बख्श देगा। अच्छे बीजसे पौधा तो तभी उगता है जब वह पहले मिट्टीमें दब जाता है।

सिर्फ़ वही चीज़ तुझे ईश्वरसे मिला सकती है, जो तुझे अपने पंजेसे छोड़ दे, यानी दुनियावी उलझन! जबतक तू होशमें है, अपनेको नहीं पहचान सकता—और इस नुक़्तेको मदहोशके सिवाय कोई नहीं जानता। प्रेमियोंके लिए गवैयेके गलेकी आवाज़ ही नहीं, बल्कि उसके नाचते हुए पैरोंकी आवाज़ भी वज्द[1] पैदा कर देती है।

मक्खी भी किसी प्रेमीके पास नहीं भिनभिनाती; क्योंकि वह बेचारा

---

१ आत्म-विस्मृति जैसी वह स्थिति जो भक्ति-रस पूर्ण गान सुननेपर भक्तों और विशेषतया सूफ़ियोंमें उत्पन्न हो जाती है।

मक्खीकी तरह वज्द करना नहीं जानता। यों तो परेशान-हाल प्रेमी ज़ेरो-बमसे[1] नावाक़िफ़ होता है, मगर एक परिन्देकी आवाज़पर रो देता है। गानेवाला अपने-आप खामोश नहीं होना चाहता, मगर सुननेवाला अपने कान कब हर वक़्त उसकी तरफ़ लगाये रखता है?

जो इश्क़-हक़ीक़ी शराब पीकर मस्त हो जाते हैं, व पानी निकालनेवाली चरखीकी आवाज़पर भी झगड़ा करते हैं। मतलब यह है कि वे चरम प्रेम और बेखुदीकी वजहसे चरखी[illegible]श[illegible]र घूमने लगते और फिर प्रियतम-के खयालमें आँसू बहाने लगते ह[illegible]ो[illegible]फ़ तक पहुँचकर उम्मीदें बाँधते और जब सब्रकी ताक़त नहीं पाते, तो बेक़रारीमें अपने कपड़े चीरने-फाड़ने लगते हैं।

ऐ भाई, मैं क़व्वाली (भजन) की असलियत तो बयान कर दूँ, मगर यह तो मालूम हो कि सुननेवाला कौन है। अगर उसकी आत्मा हक़ीक़त-के [3]बुर्ज़में रहनेवाली है, तो वह फ़रिश्तोंसे भी ऊँची है। सुबहकी हवासे फूल परेशान हो जाता है, मगर लकड़ीपर उसका क्या असर पड़ता है? अगर वह बेहूदा इनसान है, खेल-कूदमें दिलचस्पी लेनेवाला है, तो उसकी बेहूदगी और भी ज़्यादा बढ़ जायेगी।

यों तो क़व्वाली सुननेवाला वासनालिप्त रहता है, मगर जो समझ रखता है, वह उसकी आवाज़से मदहोश हो जाता है। इसलिए मदहोश, परेशान फ़क़ीरके ऐब देखनेकी कोशिश मत कर; क्योंकि वह मस्तीके

---

१ 'ज़ेरोबम' गान-विद्याके दो स्वर हैं। 'ज़ेर'का स्वर बारीक और 'बम'का स्वर नक़्क़ारेकी ध्वनिसे मिलता-जुलता होता है।

२ वह स्थिति जिसके वशवर्ती होनेपर भक्त प्रत्येक वस्तुमें अपने प्रियतमकी प्रतिच्छवि देखने लगता है।

३ वैसे 'बुर्ज'का अर्थ 'गोल इमारत' है, परन्तु यहाँ आकाशके बारहवें विभागसे अभिप्राय है।

दरियामें डूबा हुआ हाथ-पैर मारता रहता है। क्या तू नहीं जानता कि ऊँट हुदाये अरबसे[1] खुश होकर किस तरह नाचने लगता है। जब खुशीका खयाल और प्रेमका जोश ऊँटमें भी मौजूद पाया जाता है तो इनसानमें उसका न होना ताज्जुबकी बात है। फिर तो वह गधा है।

•

११

इश्क़के दीवाने ख़तरनाक रास्तेपर आगे बढ़ते हैं

किसीने पतंगेसे कहा, "ऐ नन्हीं-सी हस्ती, जा, किसी अपने उपयुक्त शरीरसे दोस्ती कर! ऐसा रास्ता अख्तियार कर, जिसमें कुछ कामयाबीकी उम्मीद हो। अफ़सोस है, तुझे इतना भी शऊर नहीं कि कहाँ तू और कहाँ शमा! तू समुद्री कीड़ा नहीं है, फिर क्यों आगके इर्द-गिर्द चक्कर लगाता है? बहादुरीकी ज़रूरत तो सिर्फ़ लड़ाईके मैदानमें होती है। यह समझ ले कि सूरजको देखते ही चूहा छिप रहता है। फ़ौलादी पंजेसे ज़ोर-आज़मायी करना नादानीके सिवाय और कुछ नहीं है। ख्वाहमख्वाह अपने दुश्मनको पकड़ लेना और जल मरना कहाँकी अक़्लमन्दी है! कोई भी न कहेगा कि यह तूने अच्छा किया जो उसके पीछे अपनी जान गवाँ दी। जो फ़क़ीर बादशाहज़ादीकी चाह रखता है, वह बेकार खयाल क़ायम करता है; बल्कि अपनी मौत बुलाता है। जब शमाके दोस्त अमीर और बादशाह हैं, तब वह तुझे क्या खाक समझेगी! यह मत सोच कि वह ऐसी महफ़िलमें तेरे-

---

१ ऊँटवानोंका वह गीत जिसे सुनकर ऊँट मुदित हो जाते और जल्दी-जल्दी चलने लगते हैं।

जैसे मुसीबतके मारेकी खातिर करेगी। भले ही वह, सबके साथ नरमी दिखाती रहे, तेरे साथ तो सख़्तीसे ही पेश आयेगी; क्योंकि तू असहाय है–अनाथ है।"

मगर वाह, उस जलनेवाले परवानेने कितना अच्छा जवाब दिया, "तेरी बातपर मुझे ताज्जुब होता है। अगर मैं जलता हूँ तो तू क्यों डरता है? मेरे दिलमें हज़रत इबराहीम-जैसी मुहब्बतकी आग धधक रही है, फिर शमाका यह शोला तो मेरे लि[illegible] फूल है। प्रियतमका दिल कब मेरे दामनमें उलझता है, उसकी प्र[illegible]ी जानके गरेबानको अपनी तरफ़ खींचती है। मैं खुद अपनेको कब आगमें डालता हूँ, मेरी गरदनमें ही जलनेके शौक़की जंजीर पड़ी हुई है। मैं अभी उसके क़रीब पहुँचने भी न पाया था कि मेरा दिल उसकी मुहब्बतमें मचल उठा, फिर अगर शरीर जल गया तो यह कौन-सी ताज्जुबकी बात है? क्या करूँ, प्रियतमके नखरे ही ऐसे नहीं हैं जिनको देखकर मैं परहेज़पर क़ायम रह सकूँ। उसकी दोस्तीपर कोई मुझे क्या बुरा-भला कहेगा, मैं तो उसके क़दमोंपर क़त्ल होना अपनी खुशनसीबी समझता हूँ। जानता है कि मुझे जान देनेका लालच क्यों है? बस, इसीलिए कि प्रियतम बाक़ी रहे और मैं भले ही मिट जाऊँ। जानता है कि मैं क्यों जलता हूँ? बस, इसलिए कि काश प्रियतममें भी मेरी मुहब्बतका–मेरी जलनका–असर जाग उठे। मुझसे यह क्यों कहता है कि अपने उपयुक्त शरीरसे मुहब्बत कर–अपनेही-जैसा कोई हमदर्द तलाश कर?"

परेशान-हालको नसीहत करना ऐसा ही है, जैसा कि बिच्छूके डंक खाये हुएको न रोनेकी ताकीद करना। ऐसे आदमीको नसीहत करनेसे क्या फ़ायदा, जो उसके असरसे ही दूर भागता है। जब लगाम हाथसे मजबूर शख्सके क़ाबूमें न रहे, तब उससे यह कैसे कहा जा सकता है कि घोड़ा आहिस्ता-आहिस्ता चला। सिन्दबादके बयानमें यह कितनी अच्छी बात लिखी है कि ऐ लड़के, इश्क़ आग है और नसीहत हवा। कौन नहीं जानता

कि हवासे आग भड़क उठती है और ज़ख्म खाकर शेर और भी खूँख्वार हो जाता है। मैंने खूब ग़ौर करनेके बाद यही नतीजा निकाला है कि अगर तू इस मामलेमें कुछ कहता है तो बुरा करता है।

बस, मौक़ेको ग़नीमत समझ, अपनी भलाई तलाश और अभिमानमें वक़्त बरबाद मत कर। यह याद रख कि ग़रूर करनेवाले हमेशा पस्त-हिम्मतोंके पीछे चलते और इश्क़के दीवाने खतरनाक रास्तेपर आगे बढ़ते हैं। मैंने जब इश्क़के रास्तेपर क़दम रखा था, तब पहले ही अपने सिरसे हाथ धो लिया था। [illegible]हमें सिर देनेवाला ही सच्चा आशिक़ होता है। भला वह इस राहपर क़दम रखनेकी क्या हिम्मत करेगा जो अपने ही अस्तित्वपर आशिक़ रहता है। जब मौत अचानक मेरी जान लेने आये तो बेहतर यह है कि मैं पहले ही क्यों न प्रियतमके हाथसे क़त्ल हो जाऊँ! जब मरना यक़ीनी लिखा है, तब बेहतर यह है कि प्रियतमके हाथसे ही मौत आये। क्या तुझे यह नहीं मालूम कि एक दिन मजबूरन जान देनी होगी? फिर बेहतर यही है कि उसे प्रियतमके क़दमोंपर क्यों न क़ुरबान कर दे?

●

१२

इश्क़की राहमें जलनेसे मर जाना कहीं बेहतर है

मुझे याद है, एक रात बड़ी देर तक मेरी आँख नहीं लगी। अचानक मैंने सुना, एक पतंगा उड़ते-उड़ते शमासे बोला, "मैं आशिक़ हूँ इसलिए जलता हूँ तो अच्छा है, मगर तू क्यों जलती और रोती है?"

शमाने जवाब दिया, "ऐ मेरे नासमझ दोस्त, तू नहीं जानता।

ज़िन्दगी एक मिठास चाहती है, वह मुझमें कहाँ है ? जब मेरे अन्दरसे मिठास निकल चुकी है, तब अब फ़रियादकी तरह सिर धुनती और आगमें जलती हूँ ।"

आँसुओंकी बाढ़ तेज़ीसे उसके पीले-पीले कपोलोंपर बह रही थी और वह कह रही थी, "ऐ इश्क़का दावा करनेवाले, इश्क़ तेरे बसका नहीं है । तुझमें न सब्र है न चैन है । ऐ कच्चे इश्क़वाले, तू एक शोलेको देखकर भागता है । मगर मुझे देख, सी[illegible]ड़ी हूँ, इसलिए कि बिलकुल जल जाऊँ । अगर इश्क़की आगने ते[illegible] दिये हैं तो यह कौन-सी ताज्जुबकी बात हुई ? मुझे देख, सिरसे पैर तक जल रही हूँ ।"

अभी रातका दूसरा पहर भी न गुज़रने पाया था कि अचानक एक हसीनने झोंका देकर शमाको बुझा दिया । उसका धुआँ ऊपर उठकर मंडराने लगा । फिर भी जैसे उसकी आवाज़ मेरे कानोंमें गूँज रही थी, "ऐ इश्क़की डींग मारनेवाले, देख, इश्क़का परिणाम क्या होता है ! अगर तू इश्क़ सीखना चाहता है, तो ख़ूब समझ ले, इश्क़की राहमें जलनेसे मर जाना कहीं बेहतर है । किसी मार डाले हुए दोस्तकी क़ब्रपर आँसू मत बहा बल्कि खुशी मना, यह सोचकर कि वह प्रियतमका प्यारा हो चुका है ।"

अगर तू सच्चा आशिक़ है, तो इश्क़के मर्ज़से मुँह न मोड़, बल्कि सादीकी तरह ग़रज़से अलहदा रह । सच्चा आशिक़ अपनी क़िस्मतसे जंग नहीं ठानता, भले ही उसके सिरपर ईंट-पत्थर बरसा करें । मैंने तुझसे कितने मर्तबा नहीं कहा कि नदीमें मत जा, और अगर जा, तो अपनेको तूफ़ानके सुपुर्द कर दे ।

●

चार

अभिमान और नम्रता दोनों मानवकी विरोधी प्रवृत्तियाँ हैं। अभिमानीके विनाशकी सीमाएँ संकुचित होती जाती हैं और अन्तको उसका सिर नीचा [illegible]। पर जो विनम्र है वह हर व्यक्ति और [illegible]को उसके यथार्थ रूपमें ही देखने-परखनेका प्रयत्न करता है; और विकास, कीर्ति और सुख उसके आगे हाथ बाँधे खड़े रहते हैं।

१

तू ख़ाकसे पैदा हुआ है

अल्लाह पाकने तुझे ख़ाकसे पैदा किया है। इसलिए ऐ बन्दे, ख़ाककी तरह आजिज़ी—नम्रता—अख्तियार कर, लालची-ज़ालिम और नाफ़रमान मत बन।

जब तू ख़ाकसे पैदा हुआ है, तब तुझे आगकी तरह होनेकी क्या ज़रूरत है? देख, जब आगने ख़ौफ़नाक शोले बुलन्द किये, तब ख़ाकने अपनेको आजिज़ीसे नीचे कर लिया।

आगने घमण्ड दिखाया और ख़ाकने नम्रतासे काम लिया, इसीलिए क़ुदरतने आगसे शैतान और ख़ाकसे इनसान पैदा किया।

●

२

बूँद और समुद्र

बारिशकी एक बूँद बादलसे नीचे गिरी। जब उसने समुद्रकी लम्बाई-चौड़ाई देखी, तब वह बहुत लज्जित हुई और बोली, "भला इसके सामने क्या मैं और क्या मेरी हस्ती! अगर इसकी हस्ती है, तो इसके सामने मेरी हस्ती न होनेके बराबर है।"

जब बूँदने अपनेको इस क़दर तुच्छ समझा, तो सीपीने उसे गोदमें ले लिया और अपनी जानसे ज्यादा प्यारा समझकर पाला-पोसा। आसमान-ने भी उसका काम इस दरजेपर पहुँचाया कि वह बूँद चमकीले क़ीमती मोतीके नामसे मशहूर हो गयी।

सचमुच इज़्ज़त उसीने हासिल की, जिसने ज़िल्लत उठायी और अपनेको इस क़दर मिटानेका इरादा कर लिया कि न वह ख़ुद बचे न उसकी इज़्ज़त बाक़ी रहे।

३

ऊँचा बननेकी सीढ़ी

किसी अच्छी जगहका रहनेवाला एक अक़्लमन्द जवान समुद्रके रास्ते रूमके किनारे उतरा। उसकी तबीयतमें बड़प्पन, नम्रता, फ़क़ीरी और तमीज़की कोई कमी नहीं थी। इसलिए लोगोंने उसे बड़ी इज़्ज़तसे मसजिदके पास ठहराया। एक दिन मसजिदके इमामने उससे कहा, "मसजिदका गर्द-गुबार बाहर निकाल दो!"

मुसाफ़िरने ज्यों ही यह बात सुनी त्यों ही वह बाहर चला गया और फिर किसीको दिखायी न दिया। इसपर मसजिदमें बैठे हुए लोग यही समझे कि उसे ईश्वरकी उपासनाकी कोई परवाह नहीं है। दूसरे दिन किसीने उसे रास्तेमें पड़ा देखा, तो कहा, "तूने मसजिद छोड़कर बहुत बुरा किया। ऐ घमण्डी लड़के, क्या तू नहीं जानता कि इनसान ईश्वर-भक्तिसे ऊँचे पदपर पहुँचता है?"

उसने सच्चे और दुःखी दिलसे रोते-रोते जवाब दिया, "ऐ जानको बढ़ाने और दिलको रोशन करनेवाले दोस्त, मैंने जब मसजिदमें धूल या मिट्टी कुछ भी न पायी तब यही खयाल किया कि वहाँ सिर्फ़ मैं ही नापाक हूँ। इसलिए मैंने वहाँसे मजबूरन अपने क़दम बाहर निकाले। क्या मेरे-जैसे नापाक इनसानके लिए पाक मसजिदके बजाय मिट्टी और घास बेहतर नहीं है?"

फ़क़ीरके लिए दिलकी सफ़ाईका रास्ता इसके सिवाय दूसरा नहीं कि अपने-आपको नम्र रखे। अगर तुझे उच्चताकी ख्वाहिश है तो पहले नम्रता अख्तियार कर, क्योंकि उच्चताके लिए नम्रताके सिवाय कोई दूसरी सीढ़ी नहीं है।

४
नम्रता और ग़रीबीका दरजा ऊँचा

मैंने बुज़ुर्ग लोगोंके मुँहसे सुना है कि हज़रत ईसाके ज़मानेमें एक शख्स था। उसने अपनी जिन्दगी बरबाद कर दी थी और अज्ञान और नासमझीमें बड़ी नामवरी हासिल की थी। वह जैसा बदचलन था, वैसा ही सख्त दिल रखता था और बुराइयोंमें शैतान भी उसके सामने शर्मिन्दा होता था। वह बेकार वक़्त खोया करता था और चैन तो शायद तभीसे नहीं लेता था, जबसे पैदा हुआ था। उसका दिमाग़ इज्ज़तवाली अक़्लसे खाली था और पेट हमेशा हरामके टुकड़ोंसे भरा रहता था। उसने फ़रेब और झूठसे अपना दामन गन्दा कर लिया था और न रखने लायक़ चीज़ोंसे अपना दिल बोझिल बना डाला था। उसके पैर जैसे अन्धे थे, कभी सीधे रास्तेपर नहीं चलते थे और कान तो नसीहत सुननेसे दूर-दूर भागते थे। लालच और गन्दी ख्वाहिशने उसका खलियान बिलकुल जला दिया था। नेकनामी तो उसने जौ बराबर भी जमा नहीं की थी। ऐश और इशरतसे उस दुराचारीका लेखा-जोखा इतना भर गया था कि अब उसमें और कुछ लिखनेकी जगह ही बाक़ी नहीं थी। वह वासनाओंका पूजक था, अभिमानी था, गुनहगार था, दिन-रात ग़फ़लतकी शराबसे मदहोश रहता था और लोग उससे अकालकी तरह नफ़रत करते थे।

जब एक बार हज़रत ईसा जंगलसे आये, तब एक भक्तकी खानकाहपर ठहरे। एकान्तमें बैठनेवाला भक्त अपने कमरेसे बाहर आया और बड़े भक्ति-भावसे ज़मीनपर गिरकर हज़रत ईसाके पैर चूमने लगा। अचानक वह गुनहगार और बिगड़े नसीबवाला शख्स वहाँ आ निकला और हज़रत ईसाके चमकीले चेहरेपर नज़र पड़ते ही परवानेकी तरह बेचैन हो उठा। उसके दिलमें हसरत और फ़िक्रकी लहरें नाचने लगीं। मारे शर्मके उसकी गरदन झुक गयी और वह हज़रत [illegible]के सामने इस तरह खड़ा हो रहा, जिस तरह कोई मुसीबतका म[illegible] मालदारके सामने ठहर जाता है। अब उसे खयाल आया कि उसने ग़फ़लत-ही-ग़फ़लतमें दिन-रात एक कर दिये हैं। बस, उसकी आँखोंसे आँसू बह निकले और वह हाथ मलते-मलते बोला, "अफ़सोस! मैंने अपनी उम्र ग़फ़लतमें ही तबाह कर दी, अपनी प्यारी ज़िन्दगीकी पूँजी फ़िज़ूल बरबाद कर दी। अल्लाह न करे, कोई मेरी तरह ज़िन्दा रहे। मेरे-जैसे शख्सका मर जाना ज़िन्दा रहनेसे कहीं बेहतर है। वही अच्छा है जो बचपनमें मर जाता है और बुढ़ापेमें गुनाहोंसे शरमिन्दगी उठानेके लिए बाक़ी नहीं रहता। ऐ दुनियाको पैदा करनेवाले, मेरे गुनाह बख्श दे! ऐ मेरे मददगार, मेरी फ़रियाद सुन ले!"

इस तरह वह बूढ़ा गुनहगार एक तरफ़ खड़ा-खड़ा रो रहा था, शरमिन्दगीसे उसका सिर झुक रहा था और हसरतका पसीना उसका जिस्म धो रहा था। इतनेमें उस अभिमानी भक्तने अपनी नज़रें उस दुराचारीपर तेज़ कीं और कहा, "यह कम्बख्त जब देखो तब हमारे पीछे पड़ा रहता है। भला यह बेवकूफ़ हमारी क्या बराबरी कर सकता है! इसने अपनी गरदन आगमें डाल दी है और वासनाकी भूखमें अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर दी है। इसकी गुनाहोंमें डूबी हुई तबीयतसे किसीकी क्या भलाई हो सकती है! अल्लाह जाने, इसे क्या हो गया है कि यह खुद तकलीफ़ उठाता है और दूसरोंको भी तकलीफ़ पहुँचाता है। इतना भी नहीं समझता कि जो बुरा काम करता है, वह बुरा नतीजा पाता और आखिर दोज़खमें

जाता है। मैं तो इसकी सूरतसे भी नफ़रत करता हूँ और डरता हूँ कि कहीं मुझपर इसकी छाया न पड़ जाये। या अल्लाह, जब क़यामतके मैदानमें सब लोग जमा हों, उस वक़्त मुझे इसके साथ न रहना पड़े—बस, यही अर्ज है!"

भक्त यह कह ही रहा था कि हज़रत ईसाको ईश्वरीय प्रेरणा हुई, "ऐ ईसा, अगर एक विद्वान् है और दूसरा मूर्ख है, तो क्या हुआ; मुझे तो दोनोंकी दुआ पसन्द हैं। मालूम [illegible] उस बद-नसीबने अपनी उम्र और ज़िन्दगी बरबाद कर दी है; [illegible] मेरे सामने रोता-गिड़गिड़ाता है, फ़रियाद करता है। नम्रतासे जो भी मेरे पास आता है, उसे मैं अपनी बख्शीशके दरवाज़ेसे दूर नहीं रख सकता। मैं उसके गुनाह माफ़ कर चुका हूँ और अब उसे अपनी मेहरबानीसे स्वर्गमें दाखिल करूँगा। अगर भक्त उसे बुरा खयाल करता है और चाहता है कि स्वर्गमें उसके साथ न रहे, तो उससे मत कहो कि वह क़यामतमें उसके साथ शरम न खाये। मैं गुनहगारको स्वर्गमें रखूँगा और भक्तको नरकमें भेजूँगा, इसलिए कि गुनहगारका दिल दर्द और तपिशसे पानी-पानी हो चुका है, मगर भक्त अपनी भक्तिके भरोसेपर टिका हुआ है। उसने यह नहीं समझा कि अल्लाहतालाकी कचहरीमें नम्रता अभिमानसे ज्यादा बेहतर है। ऐसा कौन है, जिसका बाह्य अच्छा और अन्तर खराब हो और फिर उसे दोज़खके दरवाज़ेकी कुंजी न मिले? बस, इस चौखटपर तो आज्ञाकारिता और घमण्डके बजाय नम्रता और ग़रीबीका ही दरजा ऊँचा है।"

जब तूने अपनेको नेकोंमें शुमार किया, तब बुरा किया। भला उसकी खुदाईमें तेरी खुदी कैसे समा सकती है? अगर तू बहादुर है, तो अपनी बहादुरीका बयान मत कर; इसलिए कि खेलमें हर तेज़ दौड़नेवाला गेंद आगे नहीं ले जाता। वह बेहुनर शख्स बिलकुल प्याज़की तरह है जो यह समझता है कि पिस्तेकी तरह प्याज़में भी गरी मौजूद है। इस क़िस्मकी आज्ञाकारिता काम नहीं आती। भक्तिका फल वह बेअक़्ल नहीं खाता,

जो अल्लाहके साथ अच्छा और इनसानके साथ बुरा होता है। अक़्लमन्दों-की बात बतौर यादगार रह जाती है। इसलिए सादीकी भी यही एक बात याद रख कि जो गुनहगार अल्लाहसे डरता है, वह भक्तसे बेहतर होता है।

•

५

क़द्र गन्ना ही पायेगा नरकुल नहीं

फ़क़ीर ग़रीब और फटेहाल था। वह क़ाज़ीके महलमें पहुँचा, तो पहली क़तारमें जा बैठा। क़ाज़ीने उसकी तरफ़ घूरकर देखा। बस, चोब-दारने उसकी आस्तीन पकड़कर कहा, "उठ यहाँसे! क्या तू नहीं जानता कि तेरी जगह इतनी ऊँची नहीं हो सकती? नीचे उतरकर बैठ, या बाहर चला जा, या फिर खड़ा रह!"

बड़ोंके सामने ऐसी गुस्ताखी करना ठीक नहीं। हर शख्स मसनदपर बैठनेके लायक़ नहीं होता। बुज़ुर्गी तुझे अपने पदके मुताबिक़ ही मिलेगी और पद तेरे हालसे देखा जायेगा। दूसरे तरीक़ेसे आदमीको क़ैद करनेकी क्या ज़रूरत है, जब कि यही शरमिन्दगी उसके लिए काफ़ी है। जो इज्ज़त-के बावजूद नीचे बैठता है, वह तिरस्कारके साथ ऊपरसे नहीं गिरता। खैर, जब इस तरह आगने अपना धुआँ बुलन्द किया, तब फ़क़ीर जिस मुक़ामपर था, उससे चुपचाप नीचे उतरकर बैठ गया।

थोड़ी देर बाद जब सब विद्वान् अपनी-अपनी जगहपर जा डटे तब वे आपसमें उलझने लगे। उन्होंने बहसमें लड़ाईका दरवाज़ा खोल दिया और 'हाँ' और 'नहीं' की पुकारके साथ गरदनें उठाना शुरू किया। तू कहेगा कि

लड़ाईके लिए तो नादान लोग शोर मचाते और चोंचें और चंगुल लड़ाते हैं। मगर नहीं, वहाँ उन पण्डितोंका भी यही हाल था—कोई बदहवास होकर चीख़ता था, तो कोई आपेसे बाहर होकर ज़मीनपर हाथ मारता था। असलमें वे किसी गहरे मसलेको हल करना चाहते थे, मगर उसे हल करनेका रास्ता नहीं पा रहे थे। आखिर वही फटेहाल फ़क़ीर पिछली कतारसे जंगलके शेरकी तरह दहाड़ा और बोला, "दलील मज़बूत होनी चाहिए, न कि दलीलके लिए गरदनकी नसें [illegible]ड़नी चाहिए। अल्लाहके रहमसे मुझे भी हर्फ़का बल्ला और गेंद [illegible]"

लोगोंने कहा, "अगर तू इस मसलेके बारेमें कुछ जानता है तो बोलता क्यों नहीं ? चुप क्यों बैठा है ?"

बस, फ़क़ीरने ज़ाहिरके कूचेसे बातिन यानी मनकी तरफ़ मुँह फेरा, अपनी खुश-बयानीका क़लम सँभाला और ज़ो उससे दावेके हर्फ़ काटना और लोगोंके दिलोंके दिलोंपर नगीने जड़ना शुरू किया तो चारों तरफ़से आवाज़ें उठने लगीं, "तेरी तबीयतपर आफ़रीन है। तेरी अक़्लपर हज़ार आफ़रीन है !!"

अब तो फ़क़ीरने अपने कलामका घोड़ा इस तरह दौड़ाया कि क़ाज़ी गधेकी तरह तबेलेमें रह गया। वह अपने मसनदसे उठा। उसने बड़ी इज़्ज़त और मेहरबानीके साथ अपनी पगड़ी फ़क़ीरके सामने पेश की और कहा, "मैंने न तो आपका पद पहचाना और न आपके आनेपर शुक्रिया ही अदा किया। मुझे अफ़सोस है कि आप-जैसा क़ाबिल आदमी ऐसी खराब हालतमें रहे।"

इसके साथ ही चोबदार बड़ी नरमीसे फ़क़ीरके पास पहुँचा—इस इरादेसे कि उसे क़ाज़ीकी पगड़ी पहना दे। मगर फ़क़ीरने उसे मना करते हुए कहा, "दूर हो, मेरे सिरपर घमण्डका बोझ मत रख। मैं अबतक फटीपुरानी चादरमें रहा हूँ। अब सिरपर पगड़ी पहनूँगा तो उसके असरसे अभिमानी बन बैठूँगा, और जब लोग मुझे 'सरकार' या 'हुज़ूर' कहकर

पुकारेंगे तब वे मेरी नज़रोंमें तुच्छ जँचने लगेंगे। मीठा पानी चाहे गिलास-में रखा जाये चाहे ठीकरेमें, अपनी तासीरमें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ने देता। अगर आदमीके सिरमें दिमाग़ और समझ हो तो फिर उसे तानोंसे भरी हुई पगड़ीकी ज़रूरत ही क्यों रहे? कोई शख्स बड़े सिरकी वजहसे ही ख़ासियत हासिल नहीं कर सकता। कद्दू बड़ा भले ही दिखायी दे, अन्दर तो खोखला ही होता है। पगड़ी या दाढ़ीमें ऐसी क्या खूबी है जो गरदन ऊँची की जाये? आखिर पगड़ी और दाढ़ीमें मिट्टीके सिवा और क्या रखा है? इसलिए मुनासिब यही है [illegible] ग अपनेको इनसान समझते हैं वे ज़ाहिरा भी इनसानकी तरह अपनी हालतमें रहें, अपनी हुनरमन्दीके मुताबिक़ पदकी तलाश करें, न कि ऊँचे होनेपर भी मनहूसीमें अपने दिन बितायें। नरकुल ऊँचाईमें गन्नेसे क्या कम होता है, मगर क़द्र तो गन्ना ही पाता है, नरकुलको कौन पूछता है? जब मिट्टीमें पड़ी हुई कौड़ीको एक लालची ज़ाहिलने उठा लिया, तब कौड़ीने उससे क्या खूब कहा था : मुझे कोई मिट्टीकी क़ीमतपर भी न ख़रीदना चाहेगा, फिर पागलपनमें मुझे रेशमके अन्दर क्यों लपेटता है? इनसान सिर्फ़ मालकी वजहसे ही बेहतर नहीं हो सकता। गधेको रेशमकी झूल क्यों न पहना दी जाये, वह रहेगा तो गधा ही!" इस तरह उस चतुर और बात करनेवाले फ़क़ीरने लफ़्ज़ोंके पानीसे क़ाज़ीकी सख्तीको साफ़ कर दिया। आखिर दुखे हुए दिलसे जो कलाम निकलता है वह सख्त रहता ही है। जब तेरा दुश्मन नीचे हो जाये, जब तू दुश्मनपर क़ाबू पा जाये, तब सुस्ती मत कर। बस, बातों-ही-बातोंमें उसका घमण्ड निकाल दे, इसलिए कि यही मौक़ा दिलसे ग़ुबारको धो डालता है। क़ाज़ी मानो चुपचाप उसके ज़ुल्मका क़ैदी हो गया और धीरे-से बोला, "बेशक आपका दिल बहुत सख्त है।" यह कहते-कहते उसने ताज्जुबसे उँगली मुँहमें दबा ली।

इसके बाद फ़क़ीर उस जगहसे बाहर चला गया। फिर किसीने उसका पता न पाया। अब तो महफ़िलके बुज़ुर्गोंने बड़ा शोर मचाया और कहा,

"यह जुरअतमन्द कौन था, कहाँका रहनेवाला है ?" फ़ौरन एक सिपाही वहाँसे भागा। वह चारों तरफ़ दौड़ता और पूछता फिरा, "किसीने इस सूरत और सिफ़तका आदमी तो नहीं देखा ?"

इसपर एक आदमीने जवाब दिया, "इस शहरमें ऐसी मीठी बातें करनेवाला सादीके सिवाय और कौन है। उसे तो हम जानते हैं। सच बहुत कड़वा होता है, मगर वह उसे कितनी मिठासके साथ पेश करता है !"

६

नरमी और चतुराई किसीको भी मुट्ठीमें कर सकती है

एक शाहज़ादा बड़ा बदचलन था। जब देखो तब उसके दिमाग़में नशा और हाथमें प्याला मौजूद रहता था। एक दिन वह मस्तीके आलममें झूमता और गाता हुआ मसजिदमें जा पहुँचा। उसकी इन हरकतोंसे सब लोग बहुत घबराते थे, मगर दिल मसोसकर रह जाते थे।

मसजिदकी कोठरीमें एक फ़क़ीर ठहरा हुआ था। वह दिलका जैसा पाक-साफ़ था, वैसा ही मीठा बोलनेवाला था। उसकी बातें सुननेके लिए लोग अकसर आते रहते थे; क्योंकि जो विद्वान् नहीं होते वे सुननेवाले तो बन ही जाते हैं। जब शाहज़ादा ऊधम मचाकर चला गया, तब एक शख्स उस फ़क़ीरके पास पहुँचा। उसने रोते-रोते अपना सिर ज़मीनपर रख दिया और कहा, "हज़रत, एक बार इस बदनसीब शराबी शाहज़ादेके लिए भी दुआ कीजिए। मैं बेज़बान हूँ, बेहाथ-पैरवाला हूँ। आप तो जानते ही हैं कि एक दुखे हुए दिलकी दर्दनाक आह सत्तर तलवारों और तीरोंसे कहीं ज्यादा क़ूवत रखती है।"

यह सुनते ही उस ज़माना देखे हुए फ़क़ीरने अपने दोनों हाथ उठाकर दुआ करना शुरू किया, "ऐ छोटे-बड़े और नीच-ऊँचके मालिक, यह शाह-ज़ादा बहुत अच्छा है, यह लाखों लोगोंका मालिक है, इसे हमेशा ख़ुशहाल रख ! ऐ अल्लाह, मेरी दुआ क़बूल कर, जिससे इसकी रिआया बहुत दिन तक अमन-चैनकी ज़िन्दगी बसर करती रहे !"

अब तो एक शख्ससे चुप न रहा गया। उसने बेचैन होकर कहा, "हज़-रत, इस शख्समें आपने ऐसी कौन सी बात देखी जो आप इसकी भलाई चाहते हैं ? यह तो निहायत ब[illegible] फिर आप क्यों इसकी खैरख्वाही करते हैं ? इसकी भलाईका, इसकी खैरख्वाहीका मतलब तो यही निकलेगा कि तमाम रिआया तबाह हो जायेगी।"

उस अक़्लमन्द होशियार फ़क़ीरने जवाब दिया, "जब तू बातका मतलब नहीं समझता, तब शोर क्यों करता है ? मैंने तो सबके लिए महज़ भली बातों-की आरज़ू की है, और उसके लिए अल्लाहतालासे तौबाके रहमकी ख्वाहिश की है। जो शख्स अपनी बुरी आदतोंसे बाज़ आ जाता है वह हमेशाके लिए स्वर्गका आराम हासिल करता है। शराबका इश्क़ तो चन्दरोज़ा है और उसे छोड़ देना कोई मुश्किल काम नहीं है। फिर मैं क्यों न उसकी खैरख्वाही चाहूँ ?"

उस पीर मर्दका यह खुश-बयान किसीके ज़रिये शाहज़ादेके कानों तक जा पहुँचा। इसके असरसे उसकी आँखोंमें बादल उमड़ आये और आँसुओंकी शक्लमें बह-बहकर उसका चेहरा धोने लगे। ग़मकी आगसे उसका दिल जल उठा और सिर मारे शर्मके झुककर रह गया। उसने एक प्यादेको हुक्म दिया, "जाओ, उस नेक मर्दको इज़्ज़तसे ले आओ। उससे कहना कि वह बदनसीब तौबाका दरवाज़ा खटखटा रहा है। आपके सिवा कौन उसकी फ़रियाद सुननेवाला है ! मेहरबानी कर तशरीफ़ ले चलिए तो वह आपकी ताबेदारी क़बूल करे और अपने दिमाग़से जहालत और गुमराही निकाल फेंके।"

फ़क़ीर पहरेदारोंकी क़तारोंमें होता हुआ शाहज़ादेके पास पहुँचा तो देखता क्या है कि महल धन-दौलतसे भरा हुआ है मगर लोगोंपर बरबादी-का आलम छाया हुआ है। कोई अपने आपेसे बाहर हो रहा है तो कोई गुलाबी नशेमें धीरे-धीरे झूम रहा है। कोई मज़ेसे शेर गुनगुना रहा है, तो कोई सुराही थामनेकी कोशिश कर रहा है। एक तरफ़ गाने-बजाने-वाले शोर मचा रहे हैं तो दूसरी तरफ़ पिलानेवाले 'पिये जाओ-पिये जाओ'-की आवाज़ें लगा रहे हैं। मतलब य[illegible]या बड़े और क्या छोटे सभी दीन-दुनियासे बेखबर हैं, अपने-अ[illegible] चूर हैं। बस, एक अकेली शमा होशमें है और मानो उनकी हालत देख-देखकर अपना सिर धुनती है।

फ़क़ीरपर नज़र पड़ी तो शाहज़ादेपर जैसे एक पागलपन सवार हो गया। उसने जल्दी-जल्दी शराबके खूबसूरत बरतन तोड़ना और क़ीमती बाजे फोड़ना शुरू कर दिया। देखते-देखते तमाम फ़र्श शराबके ख़ूनी रंग-से तर हो गया, टूटे-फूटे बरतनों और बाजोंके मलबेसे भर गया। इसके बाद शाहज़ादा झपटकर फ़क़ीरके क़दमोंपर जा गिरा और चीखकर बोला, "हज़रत, आजसे अपना आचरण सुधारनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ। मुझपर रहम कीजिए, अल्लाह पाकसे मेरे हक़में दुआ कीजिए। वह मुझे माफ़ कर दे, मेरे गुनाह बख्श दे।"

फ़क़ीरने शाहज़ादेके सिरपर हाथ रखा और बड़ी मुहब्बतसे, बड़ी मिठास-से कहा, "अल्लाह बड़ा रहीम है। वह हमेशा भूले-भटके हुए लोगोंपर रहमकी बारिश करता है। अगर तुमने अपनी ग़लतियोंपर सच्चे दिलसे तोबाका दामन थाम लिया है, तो समझ लो, अल्लाहने तुम्हें माफ़ कर दिया है।"

आजसे पहले कई बार बादशाहने भी शाहज़ादेको बहुत-बहुत समझाया था मगर शाहज़ादा था कि बादशाहकी सारी नसीहतें और सारी धमकियाँ कानोंपर उड़ा देता था—जैसे उसे बादशाहका कोई खौफ़ ही नहीं था। अगर कोई नसीहत करनेवाला उससे कहता कि अपने सिरसे जवानी और जहालत-

की खराबियाँ निकाल डाल तो शायद उसका खयाल और ग़रूर उसे इस बातपर आमादा करता कि वह उस नसीहत करनेवालेको ज़िन्दा न छोड़ता। मगर आज इस बुज़ुर्ग फ़क़ीरकी ज़रा-सी नरमी और चतुराईने ऐसा कमाल दिखाया कि शाहज़ादेका दिल अपनी मुट्ठीमें कर लिया।"

७

कड़वे आदमीका शहद भी कड़वा होता है

शहद बेचनेवालेकी आवाज़ इतनी मीठी थी कि लोगोंके दिल अपने-आप उसकी तरफ़ खिचते चले जाते थे और खरीदनेवाले मक्खियोंकी तरह उसके इर्द-गिर्द जमा थे। अगर वह ज़हर भी बेचता तो शायद लोग उसके हाथसे शहद समझकर खा जाते।

शहद बेचनेवालेका बाज़ार इस तरह गरम देखा तो एक बदचलन शख्स जल मरा। बस, दूसरे ही दिन वह सिरपर शहदका घड़ा रखकर निकल पड़ा और चारों तरफ़ दौड़ता फिरा। उसने शोर मचा-मचाकर बहुत-कुछ कहा, मगर उसका शहद न बिका। जब शाम तक कुछ रक़म उसके हाथ न लगी तब वह बहुत रंजीदा हुआ और घर आकर एक कोनेमें बैठ गया। अब उसके चेहरेपर वह मुर्दनी थी जो ईदके दिन क़ैदीके चेहरेपर होती है। यह देखकर बीबी उसका मखौल उड़ाते हुए बोली, "क्या आप इतना भी नहीं जानते कि कड़वे आदमीका शहद भी कड़वा होता है?"

ऐ सरदार, अपना काम दुश्वार मत कर। यह खयाल रख कि बुरी आदतोंवालेका नसीब औंधा होता है। मैंने माना कि तेरे लिए सोने-चाँदी-

की कोई हक़ीक़त नहीं है, मगर सादोकी तरह तेरी ज़बानमें नरमी और मिठास भी तो नहीं है।

०

८

जो अपने लिए चाहता है वही दूसरेके लिए कर

एक बुज़ुर्ग बहुत हुनरमन्द था और अपनी खूबियोंके लिए दूर-दूर तक मशहूर था। मगर उसका ग़ुलाम इतना बुरा था कि शहर-भरके बदचलन लोगोंसे बाज़ी मार ले गया था। वह इस क़दर कड़वापन अख्तियार कर चुका था कि चाहे जिसे बेइज्ज़तीसे मुँह चिढ़ा देता था और अपने दाँत हमेशा काले नागकी तरह ज़हरीले बनाये रहता था। गुस्सैल ऐसा था कि उसकी आँखोंसे जब देखो तब खून बरसा करता था। तबीयतका यहाँतक सख्त था कि कोई मर भी जाये तो एक गिलास पानीके लिए न पसीजता था। जब खाना पकाने बैठता था तब कुत्तेकी तरह ग़ुर्राता था, मगर जब खाना पक जाता था तब मालिककी बराबरीसे बैठकर खाता था। गन्दा भी खूब रहता था, उसकी बग़लोंसे प्याज़-जैसी बदबूका पनाला बहा करता था। घरका सामान अकसर तोड़ा-फोड़ा करता था। कभी बकरियाँ जंगलमें खदेड़ देता था, तो कभी मुर्ग़ियाँ कुएँमें फेंक देता था। न कहनेसे मानता था, न बेतोंकी चोटसे रास्तेपर आता था। बस, रोटीके लिए ही मालिकसे नाता रखता था। अगर किसी कामसे घड़ी-भरके लिए बाहर जाता था तो फिर दिन-भर घरकी खबर न लेता था। देखने-वालोंको उसकी सूरतसे ही नफ़रत होती थी।

आखिर एक दोस्तने उस बुज़ुर्गसे कहा, "यह ग़ुलाम हरगिज़ इस लायक़ नहीं है कि आप इसका ज़ुल्म और भार उठायें और फ़िज़ूल ही ग़म या मुसी-

बत बरदाश्त करें। मैं आपके लिए कोई अच्छा-सा ग़ुलाम तलाश कर दूँगा। बस, इसे किसी दलालके हवाले कीजिए। अगर इसके ज़रिये कोई रक़म भी हासिल हो तो उसपर लात मार दीजिए। मैं ख़ूब समझ चुका हूँ, यह बदज़ात वह मर्ज़ है जो किसी भी दवासे हाथ आनेवाला नहीं है।"

यह सुनकर वह नेक बुज़ुर्ग मुसकराया और बोला, "ऐ अज़ीज़ दोस्त, बेशक इस लड़केकी तबीयत बहुत बुरी है, आदत भी बहुत बुरी है; मगर इसकी वजहसे मेरी त[illegible]र आदत ज़रूर कुछ-न-कुछ सुधर गयी है चूँकि मैंने इसके ज़ुल्म [illegible]श्त किये हैं, इसलिए अब मैं इस लायक़ हो गया हूँ कि हर शख़्सका ज़ुल्म बरदाश्त कर सकता हूँ। कह नहीं सकता कि मैं मुरौवतको छोड़ चुका हूँ, इसलिए कि दूसरोंके ऐब ज़ाहिर कर देता हूँ। मगर इतना तो साफ़ है कि जब मैं इसकी तकलीफ़ बरदाश्त न कर सकूँ तब बेहतर है कि दूसरेके हवाले कर दिया जाऊँ।"

तू जो कुछ अपने लिए चाहता है वही दूसरेके लिए क्यों नहीं पसन्द करता? भला दूसरेको तकलीफ़में फँसाना कहाँकी इनसानियत है? सब्र और ज़ब्त पहले तो तुझे ज़रूर ज़हर नज़र आयेंगे, लेकिन जब तबीयतमें बैठ जायेंगे तब शहदकी तरह मीठे हो जायेंगे।

●

९

अपनी ख़ुशहालीके शुक्रियेमें कमज़ोरोंका बोझ उठा

जिसने हज़रत मारूफ़ करख़ीके घरका रास्ता तलाश किया और जो उनके यहाँ पहुँचा उसने ख़ूब जान लिया कि उनके दिमाग़से शोहरतका, नामवरीका, ख़याल कितनी दूर है। मैंने सुना है कि एक बार उनके यहाँ

कोई मेहमान आया। वह बीमार था, मरनेके क़रीब था। उसके सिर और चेहरेके बाल झड़ गये थे और उसमें शायद बाल-बराबर ही जान बाक़ी थी। फिर भी हज़रत मारूफ़ करख़ीने बड़ी मुहब्बतसे, बड़ी हमदर्दीसे, उसका स्वागत किया।

बीमार रात-भर रोता-कराहता और चीख़-पुकार मचाता रहा। उसे घड़ी-भर भी नींद न आयी, न उसकी वजहसे और किसीको ही आ सकी। जब सवेरा हुआ तब लोगोंने [illegible] कि बीमार परेशानहाल ज़रूर है, मगर उसकी तबीयत ज़्यादा [illegible] है; इसलिए वे अपना काम-काज देखने लगे। दिन तो ख़ैर किसी तरह गुज़र गया, मगर शाम होते-होते बीमारने फिर वही हाय-तोबा मचानी शुरू कर दी। उसकी दर्द-भरी आहों और फ़रियादोंसे लोग इस तरह ऊब उठे कि वहाँ ठहर भी न सके, दिन निकलते ही एक-एक कर इधर-उधर खिसक गये।

मगर हज़रत मारूफ़ बीमारको छोड़कर कहाँ जाते? वह हिम्मत बाँधे दिन-रात उसकी ख़िदमतमें लगे रहते और उसके मुँहसे जो निकलता वही करते। जब इस तरह बहुत दिन बीत गये, तब एक रात बैठे-बैठे ही ऊँघने लगे। आख़िर कई रातके जागे हुए थे, और कबतक जागनेकी ताक़त रखते? मगर उनकी आँखोंमें यह झपकी देखते ही बीमार चिड़-चिड़ा उठा और लगा बकवास करने, "लानत है इन मग़रूर और बेहया लोगोंपर! कहनेको तो ये कम्बख़्त विश्वास जमाते और साफ़-सुथरा लिबास पहनते हैं, मगर इसकी ओटमें दग़ा-फ़रेबका जाल फैलाते और सदाचार बेचते फिरते हैं। ये सम्पन्नतासे रहनेवाले, ठूँस-ठूँसकर पेट भरनेवाले और ख़र्राटेकी नींद लेनेवाले हैं। भला ये क्या समझें कि मुद्दतसे जिस ग़रीबकी आँख नहीं झपी है, उसपर कैसी-क्या बीत रही है! लुच्चे कहींके, बड़े अल्लाहवाले बने फिरते हैं।"

इस तरह उस बीमारने हज़रत मारूफ़को ख़ूब खरी-खोटी सुनायी, सिर्फ़ इसलिए कि वे उसकी तरफ़से ग़ाफ़िल होकर नींद क्यों लेने लगे!

हज़रत मारूफ़ तो उसकी ये ज़हरमें बुझी हुई बातें शरबतकी तरह पी गये। मगर घरके लोग क्यों पीते। उन्होंने एकान्तमें हज़रत मारूफ़से कहा, "आपने उस एहसान भूलनेवालेकी बातें सुनीं? जाइए, उससे कह दीजिए: अपना रास्ता पकड़ो, इतनी बड़ी दुनिया पड़ी है, जहाँ तबीयत चाहे जाओ और मरो। रहम और नेकी वाक़ई बढ़िया चीज़ें हैं, मगर मौक़ेसे ही अच्छी मालूम देती हैं। बदोंके साथ नेकी या रहम करना तो मुसीबत मोल लेना है जो कमीनी तबीयत रखनेवाला हो उसका सिर तकियेपर क्यों [illegible] हिए? बंजर ज़मीनमें नासमझ लोग भी बीज नहीं डालते, फिर आप क्यों बदोंके साथ नेकी करते हैं? हम यह नहीं कहते कि लोगोंके साथ रिआयत न की जाये, मगर स्याह दिलवालोंके साथ नेकी करना गोया कीचड़में पत्थर फेंकना है। भला बुरी आदतोंवाले शख्सको प्रेम और नर्मी पानेका हक़ ही क्या है? देखिए, कोई भी समझदार आदमी बिल्लीकी तरह कुत्तेकी पीठ नहीं थपथपाता, अगरचे ईमान और इन्साफ़की बात यह है कि अपनी नेक आदतमें कुत्ता एहसान भूलनेवाले इनसानसे कहीं बहुत बेहतर होता है। सोचिए, कमीने-पर रहमतका ठण्डा पानी ढालना कहाँतक मुनासिब है! हमने तो ऐसी आदतवाला आदमी अपनी ज़िन्दगीमें कभी नहीं देखा। बस, निकाल बाहर कीजिए इसे।"

हज़रत मारूफ़ मुसकराये और बोले, "ऐ दिलका आराम चाहनेवालो, उसकी बकवासपर इस तरह परेशान होनेकी क्या ज़रूरत है। सच पूछो तो मुझे उसकी नाराज़गी बहुत पसन्द आयी; इसलिए कि उसने ग़ुस्सेकी हालतमें अपने दिलके दर्दका इज़हार किया है। जो सख्त तकलीफ़में छट-पटा रहा है, आरामके लिए तरस रहा है, क्या वह अपने दिलका बुखार निकालनेके लिए ग़ुस्सा भी ज़ाहिर न करे? भला ऐसे शख्सका ग़ुस्सा बरदाश्त कर लेनेमें हमारा क्या बनता-बिगड़ता है?"

जब तू अपनेको खुशहाल और तन्दुरुस्त पाये, तब इसके शुक्रियेमें

कमज़ोरोंका बोझ उठा। अगर तू खुद तिलिस्मकी तरह मिट जायेगा तो तेरा नाम भी जिस्मकी तरह मुरदा हो जायेगा। अगर तू रहमदिलीके दरख्तको परवरिश करेगा तो यक़ीनन् नेकनामीके फल चखेगा। तारीफ़की रस्सी पकड़कर कुएँमें मत गिर।

●

१०

इनसानके सामानमें .गुलामी भी शामिल है

मशहूर हकीम, दार्शनिक, और ईश्वर-भक्त हज़रत लुक़मान न आराम-तलब थे न नाज़ुकबदन थे, और न इतनेपर स्याह रंगके थे। बग़दादके एक अमीरने उनको महज़ ग़ुलाम समझा। जब उसका मकान बनने लगा तब उसने उनको मज़दूरकी तरह पकड़ लिया और मिट्टी खोदनेका काम सौंप दिया। मकान साल-भर तक बनता रहा और लुक़मान बराबर मिट्टी खोदते रहे। मगर किसीने यह खयाल न किया कि वह कौन हैं।

इसके बाद उस अमीरका एक ग़ुलाम कहींसे वापस आया। उसने लुक़मानको पहचान लिया और अपने मालिकसे कहा! "यह कैसा ग़ज़ब है! आपका मकान बने और हज़रत लुक़मान मिट्टी खोदें! या अल्लाह!"

अब तो अमीरकी घबराहटका ठिकाना न रहा वह फ़ौरन लुक़मानके क़दमोंपर गिर पड़ा और लगा तरह-तरहसे माफ़ी माँगने। इसपर लुक़मान हँसकर बोले, "इन बातोंकी क्या ज़रूरत है! तूने साल-भर तक जो ज़ुल्म ढाया है, उससे मेरा खून खुश्क हो गया है। भला वह घड़ी-भरमें क्यों कर दिलसे निकल सकता है! लेकिन मैंने तुझे माफ कर दिया है, इसलिए कि तेरे नफ़ेसे मेरा कुछ भी नुक़सान नहीं हुआ है। अगर साल-

भर में तेरा आरामगाह आबाद हो गया है तो मेरी भी दानाई और मारफ़तमें, बहुत-कुछ इज़ाफ़ा हो गया है। ऐ नेकबख्त, मेरे सामानमें गुलामी भी है और वक़्तके मुताबिक़ उसकी फ़रमाइश मेरे लिए सख्त होती है। मगर जब खयाल आता है कि मुझे क़ब्रमें जाना है, तब मैं दिलपर पत्थर रखता और किसीको तकलीफ़ न पहुँचाते हुए उस पूरी करनेकी कोशिशमें लग जाता हूँ।"

जो बड़ोंका ज़ुल्म नहीं सहता उसका दिल छोटोंपर रहम नहीं करता। बादशाह बहरामने अपने वज़ीर[illegible] कि रिआयाके साथ शख्तीसे पेश मत आ। अगर तुझे हाकिमोंकी कोई बात बुरी मालूम हो तो रिआयापर सख्ती मत कर, जिससे हाकिम तुझपर सख्ती न कर सके।

●

११

काँटेके बदले फूल

रातका वक़्त था। एक शख्स बग़लमें [1]बरबत दबाये, मस्तीसे झूमता-झामता चला जा रहा था। अचानक सामनेसे एक बुज़ुर्ग आ निकला। मस्तने आव देखा न ताव, बरबत बुज़ुर्गके सिरपर दे मारा और वह ख़ूनमें नहा गया।

जब सवेरा हुआ, तब वह नेक बुज़ुर्ग एक मुट्ठी चाँदी लेकर उस पत्थर-दिल मस्तके पास पहुँचा और बोला, "तू कल नशेकी हालतमें बदमस्त था। नतीजा यह हुआ कि तेरा बरबत टूटा और मेरा सिर फूटा, मेरा ज़ख्म तो खैर दवासे अच्छा हो जायेगा, मगर तेरा बरबत बग़ैर चाँदीके कैसे दुरुस्त होगा? इसलिए ले, यह चाँदी रख ले!"

●

---

१. एक प्रकारका वाद्य-यन्त्र।

पाँच

कर्तव्य श्रेष्ठ होता है पर भाग्य प्रबल रहता है। मनुष्यको चाहिए कि अपने भगवान्‌पर आस्था रखते धैर्यपूर्वक सुपथका अवलम्बन करे।
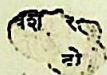
आसमानपर क़ाबू नहीं पाया जा सकता

ख़ुशनसीबी जंग करने या बाज़ुओंकी क़ूवत आज़मानेसे हासिल नहीं होती। वह तो अल्लाह-पाककी रहम[illegible] रहती है। जब दौलत बुलन्द आसमान नहीं देता, तब वह बहादुर[illegible] जालमें क्योंकर फँसायी जा सकती है ?

कौन शख्स कमज़ोरीमें चींटीसे बदतर होता है ? फिर क्या बहादुर अपनी क़ूवतसे रोज़ी कमा लेता है ? जब आसमानपर क़ाबू नहीं पाया जा सकता तब क्या इनसानके लिए उसकी गर्दिशके मुताबिक़ चलना ज़रूरी नहीं है ?

अगर तक़दीरके पट्टेपर तेरी ज़िन्दगी ज़्यादा लिखी हुई है तो न तुझे साँप काट सकता है न तीर या तलवारसे ही तेरा कुछ बिगड़ सकता है, और अगर तेरी ज़िन्दगीका वक़्त बाक़ी नहीं है तो फिर तिर्याक़ [ज़हर-मोहरा] भी तेरे लिए ज़हर हो जायेगा। क्या तू नहीं जानता कि जब रुस्तम-का वक़्त आ गया तब उसके छोटे भाई शुग़ारने उसे कितनी आसानीसे खत्म कर दिया था ?

●

२

हकीम दूसरेका मर्ज क्या दूर करेगा

जब एक किसानका गधा मर गया तब उसने अपने बाग़में अंगूरकी टट्टियोंके पास उसका सर लटका दिया।

अचानक एक तजुर्बेकार श[illegible] उधरसे निकला। उसने मुसकराकर बाग़के रखवालेसे कहा, "ऐ अपने [illegible]पके प्यारे, यह मत समझ कि यह मरा हुआ गधा बाग़को बुरी नज़रोंसे बचा लेगा। वह खुद अपने सर और कानोंसे डण्डेकी मार न बचा पाया, यहाँतक कि ज़ख्मी और कमज़ोर होकर मर गया; फिर तेरे बाग़को क्योंकर बचा सकेगा?"

भला हकीम किसी दूसरेका मर्ज क्या दूर करेगा; वक़्त आनेपर वह खुद बीमार पड़ेगा और चल बसेगा।

३

बेतके पौधेसे फूल निकलना मुश्किल है

ईरानकी खाड़ीके कीश टापूमें किसी दरवेशने अपने एक बदसूरत साथीसे कहा, "कुदरतके हाथोंने तुझे बदसूरत बनाया है, फिर तू क्या समझकर अपने बदनुमा चेहरेपर रोग़न मलता रहता है?"

ऐसा कौन शख्स है जो ताक़त और तदबीरसे नेक-बख्ती हासिल कर सकता है? ऐसा कौन अन्धा है जो सुरमेंसे आँखोंवाला हो सकता है?

जिस तरह कुत्तोंके ज़रिये कटी हुई चीज़ जोड़नेकी उम्मीद करना बेकार हैं, उसी तरह दरिन्दोंसे नेक काम होना दुश्वार है।

रूम और यूनानके तमाम अक़्लमन्द कोशिश करें, ज़हरको तिर्याक़ बनानेमें हरगिज़ कामयाब न होंगे। वहशी दरिन्दा कभी इनसान न बनेगा, उसे पालने-पोसनेकी जो भी कोशिश की जायेगी वह बेकार होगी। आइनेसे ज़ङ्ग हटाना तो आसान है मगर पत्थरसे आइना बनाना ग़ैर-मुमकिन हैं। इनसान कितने ही हाथ-पैर चल[illegible]तके पौधेसे फूल निकलना मुश्किल है। फिर कोई हवशी हम्म[illegible] लोटनेसे क्योंकर गोरा हो सकता है ?

क़ज़ाका तीर कभी ग़लत निशानेपर नहीं लगता। बन्देके पास ऐसी ढाल ही कहाँ है जो वह क़ज़ाके तीरसे अपना बचाव कर सके ?

•

४

मौत आती है तो दाना दिखता है मगर जाल नहीं

एक गिद्धने ग़ुरूरमें आकर किसी चीलसे कहा, "बताओ, मुझसे ज़्यादा दूर देखनेवाला और कौन है ?

चीलने जवाब दिया, "भाई, यह दावा करना तो ठीक नहीं है। आओ भला, हम तुम दोनों जंगलके कोने देखें।"

मैंने सुना है कि वे दोनों दिन-भर आसमानमें ऊपर उड़ते गये और फिर नीचे देखने लगे। गिद्धने एकाएक कहा, "वह देखो, जंगलके उस कोनेमें गेहूँका एक दाना पड़ा हुआ है। अगर तुम्हारी आँखोंमें दूर देखनेकी ताक़त हो तो तुम भी देख लो।"

चील बेचारी ताज्जुबमें रह गयी। उसके पास और चारा भी क्या था। इसके बाद दोनोंने नीचे उतरना शुरू किया। जब गिद्ध गेहूँके दानेके पास पहुँचा, तब एक बड़े जालमें फँसकर रह गया। वह यह न समझ सका कि ज़मानेने उस एक दानेकी शक्लमें उसकी गरदनके लिए मौतका फ़न्दा डाल रखा है। हर सीपीमें मोतीका होना ज़रूरी नहीं है और न हर तीरका निशानेपर लगना मुमकिन है।

अब चीलने गिद्धसे कहा, "भला यह ज़रा-सा दाना देखनेमें क्या फ़ायदा हुआ? ताज्जुब है कि तुझे दुश्मनका इतना बड़ा जाल नज़र न आया!"

गिद्ध गरदन फटकारते हुए बोला, "तक़दीरमें जो लिखा हुआ है उससे कोई क्योंकर बच सकता है?"

मौतने जब उसके खूनका इरादा कर लिया, तब अल्लाहके हुक्मने जालकी तरफ़से उसकी आँखें बन्द कर दीं। जिस नदीका किनारा नज़र न आता हो उसमें तैरनेका घमण्ड करना बेकार है।

•

५

पैसेपर सोनेका पानी मत चढ़ा

इबादत साफ़ तबीयतके साथ करना बेहतर है; वरना बेफ़ायदा है—ठीक उसी तरह जिस तरह बग़ैर गूदेका छिलका। चाहे अग्नि-पूजककी कस्ती[1] हो, चाहे दरवेशकी गुदड़ी, अगर वह लोगोंको धोखा देनेके लिए पहनी गयी है तो बेकार है। मैं तुझसे कहता हूँ कि अपनी हिम्मत ज़ाहिर मत कर। अगर तूने बहादुरी दिखायी है तो नाज़-नखरे कर नामर्द मत बन।

---

१. वह ऊनी धागा जो पारसी लोग जनेऊकी तरह पहने रहते हैं।

जितनी रोशनी हो उतनी ही ज़ाहिर करनी चाहिए। वह शख्स कभी शर्मिन्दा नहीं होता, जो अपनेको बाहर और भीतर एक-सा रखता है। अगर उसका मक्र और फ़रेबका लिबास उतार दिया जायेगा, तो उसका असली लिबास—जो हृदयकी कुरूपता ज़ाहिर करता है—उसके जिस्मपर नज़र आने लगेगा। अगर तेरा क़दम ठिगना है, तो लकड़ीके पैर लगाकर उसे लम्बा मत बना; क्योंकि इससे सिर्फ़ नासमझ लोगोंकी नज़रको धोखा होगा; समझदार तो तेरा धोखा साफ़ ताड़ जायेंगे।

अगर ताँबेपर सोनेका पानी चढ़ाया जाये, तो इससे नासमझको ही धोखा दिया जा सकता है। ऐ मेरी जान, पैसेपर सोनेका पानी मत चढ़ा; क्योंकि परखनेवाला सर्राफ़ उसे कौड़ीके मोल भी न लेगा। मुलम्मा करने-वाले यानी धोखा देनेवाले मुसीबतमें डाले जाते हैं। उसी वक़्त पता चलता है कि सच्चा कौन है और झूठा कौन!

६

अच्छी आदतें दिखावेकी इबादतसे बेहतर हैं

मैंने सुना है कि एक नाबालिग़ लड़केने रोज़ा रखा और बड़ी मुसीबत बर्दाश्त करते-करते दिनका पहला पहर काटा। उसका उस्ताद मकतबसे उसे घर पहुँचाने गया; इसलिए कि उसको छोटे बच्चेकी यह इबादत बड़ी नज़र आयी। अब तो मारे खुशीके माँ-बापने उसके चेहरेपर चुम्बन बिखेर दिये और फिर उसपर बादामोंके साथ रुपये निछावर किये।

धीरे-धीरे आधा दिन गुज़र गया। अब तो बच्चेके मेदेमें भूखकी आग

बुरी तरह धधक उठी और वह घबराकर सोचने लगा : अगर चुपके-से चन्द लुक़मे खा लूँ तो माँ-बापको भला क्या पता चलेगा ? बस, उसने घर-के सब लोगोंको नज़र बचाकर खाना खा लिया; मगर दिखावेके लिए रोज़ा रखा।

कौन जानेगा कि तू अल्लाहका ईमानदार बन्दा नहीं है—भले ही तू बग़ैर वज़ू किये नमाज़में खड़ा हो जाये। वह बूढ़ा उस बच्चेसे भी नासमझ है जो लोगोंको दिखानेके लिए नमाज़ पढ़ता है। मगर ऐसी नमाज़ दोज़ख-के दरवाज़ेकी कुञ्जी है जो लोगोंको दिखानेके लिए अदा की जाती है। अगर तेरा रास्ता अल्लाहके खिलाफ़ है तो तेरी जा-नमाज़ आगमें जला देनी चाहिए।

जिसकी आदतें अच्छी हों—ख्वाह देखनेवालोंको खराब ही क्यों न जान पड़ें—वह उस इबादत करनेवालेसे बेहतर है जो अन्दर-ही-अन्दर काला दिल रखता है। मेरे नज़दीक तो रातको डाका डालनेवाला डाकू उस बदकारसे अच्छा है जो ज़ाहिरा पारसाईका जामा पहने रहता है। लोग लिबासका ज़ाहिरी हिस्सा नीचे लगे हुए अस्तरसे बढ़िया रखते हैं; क्योंकि अस्तर नज़र नहीं आता और ऊपरी कपड़ा साफ़ दिखायी देता है। मगर आबिद लोग अपनी नज़र पैनी रखते और अस्तरके काममें खूबसूरत रेशम लाते हैं।

अगर तू दुनियामें शोहरत चाहता है तो ज़ाहिरा खूबसूरत लिबास उतार डाल और अपना दिल साफ़ कर। हज़रत बायज़ीद बुस्तामीने यह बात बेकार नहीं कही थी कि मैं अपने अनुयायीके बजाय विरोधीकी तरफ़-से कहीं ज्यादा सुरक्षित हूँ। जो लोग अपना बादशाह-जैसा असर रखते हैं वे भी उसकी दरगाहके फ़क़ीर हैं। फ़क़ीरको लालचसे दूर भागना और इधर-उधर बिखरी हुई चीज़ोंसे बचना चाहिए।

अगर तुझमें हुनर है तो तू सीपी जैसा मोतियोंकी वजह खुद-ब-खुद मशहूर हो जायेगा। अगर तेरी इबादतका मुँह अल्लाहकी तरफ़ है तो

उसमें खूबी यह हो कि हज़रत जिबराईलको भी उसका पता न चले। ऐ लड़के, तेरे लिए सादीको नसीहत काफ़ी है, अगर तू उसे बापकी नसीहतकी तरह कान लगाकर सुन। अगर आज तूने मेरी बात न सुनी तो कहीं ऐसा न हो कि कल तुझे पछताना पड़े।

छह

असन्तोष सदा कष्ट और कलहके बीज बोता है। एक सन्तोष ही ऐसा धन है जो जीवनमें भी सुख और शान्ति देता है और उसके बाद भी।

१

दीनके बदले दुनियाकी खरीद मत कर

जिसने अपने नसीब और रोज़ीपर [illegible] नहीं किया उसने न तो अल्लाहको पहिचाना और न अल्लाहकी बन्दगी की। सब्र आदमीको अमीर बना देता है। दर-दर भटकनेवाले लालचीसे कह दे कि जो चीज़ आराम और चैन हासिल कराती है वह अस्थायी होती है। याद रहे, घूमनेवाले पत्थरपर काई भी नहीं जमती।

ऐ समझ और होश रखनेवाले इनसान, तनको मत पाल। जब तू उसको पालता है, तो अपनेको मार डालता है। अक़्लमन्द आदमी तो हुनर पालता है; क्योंकि तन पालनेवाला हुनरसे महरूम रह जाता है। जो आदमी अपने दिलको, अपनी ख्वाहिशको, दबा देता है वह ज़रूर अच्छी आदतें अख्तियार कर लेता है।

सिर्फ़ खाने-पीने और सोने-जागनेमें लगे रहना तो जानवरोंका तरीक़ा है, और यक़ीनन् यह तरीक़ा बेवकूफ़ीसे भरा हुआ है। बहुत बेहतर और नेकबख्त शख्स वह है, जो एक कोनेमें बैठा हुआ मारफ़तका तोशा हासिल करता है। जिसपर हक़ अच्छी तरह ज़ाहिर हो जाता है, वह उसपर अपनी ख्वाहिशें, अपनी तमन्नाएँ, लुटा देता है।

लेकिन जो अँधेरे और उजालेमें फ़र्क़ नहीं जानता, उसके लिए क्या चुड़ैलका और क्या हूरका चेहरा एक समान है। तूने अपनेको उस तरफ़से गढ़ेमें गिरा लिया है; इसलिए तुझे गढ़े और रास्तेका फ़र्क़ कैसे मालूम हो सकता है? भला बुलन्दी किस तरह बाज़को आसमानपर उड़ाये जब कि तूने उसके पङ्खमें लालचका पत्थर बाँध रखा है?

इनसानके लिए खाने-पीनेकी आदतोंमें सुधार करनेसे फ़रिश्तेका रुतबा पा लेना मुमकिन है। मगर वहशी आदतोंवाला इनसान क्योंकर ग़ैबी-फ़रिश्ता हो सकता है? वह रहे तो सबसे नीची जगह ज़मीनपर और हौसिला करे आसमानपर उड़नेका—यह कहाँतक वाजिब है? इसलिए अव्वल तो आदमीकी आदतका पेशा अख़्तियार कर; फिर फ़रिश्ता बननेकी सोच।

अगर तू आदमी है तो अपने तोशेमें-से अन्दाज़के साथ खा, पेटको ठूँस-ठूँस कर मटका मत बना। यह मत समझ कि वह सिर्फ़ रोटी भरनेके लिए है। खयाल रख कि उसका अन्दरूनी हिस्सा अल्लाहका ज़िक्र करने और साँस लेनेके लिए है। भला उस पेटमें अल्लाहका ज़िक्र कब समा सकता है जिसमें लालचका बोझ भरा हुआ है और साँस तक दिक़्क़तसे पहुँचती है?

तन पालनेवालेको यह खबर ही नहीं है कि भरा हुआ मेदा हिकमत-से खाली हो जाता है। यह सचाई है कि दो आँखोंकी तरह पेट कभी किसी चीज़से नहीं भरता। दोज़खकी तरह उसमें चाहे जितना ईंधन डाला जाये, वह सन्तुष्ट होता ही नहीं और बार-बार यही आवाज़ लगाता है: और कुछ है? इसलिए बेहतर है कि उसकी पेंचीदा आँतें खाली ही रहें। कमज़ोरी ही ऐसी चीज है जिससे तेरी कामना, तेरी वासना, मर सकती है। मगर तू है कि उसके फ़रेबमें फँसा हुआ है।

ऐ अक़्लमन्द, दीनके बदले दुनियाकी खरीद मत कर। हज़रत ईसाकी इन्जीलके बदले गधेके लिए जौ खरीदनेका ख़याल छोड़। शायद तू नहीं जानता कि दरिन्देको हमेशा शिकारके लालचके सिवाय और कोई जालमें नहीं फँसाता। जो शेर चौपायोंकी गरदनपर रहता है, वह खानेके लोभमें कितनी आसानीसे चूहेकी तरह जालमें जा फँसाता है।

●

२

लालचका सर कन्धोंसे ऊपर नहीं उठता

ऐ भाई, नफ़्सके हुक्मकी तामिल मत कर। यह सचाई है कि जो उसकी फ़रमावरदारी नहीं करता वही इस दुनियासे रिहाई पाता है। सब्रसे ही इनसानका सर बुलन्द रह... सब्रसे ही इनसानका रुतवा वढ़ता और सब्रसे ही इनसानको होश हासिल होता है। भला लालचका सर कन्धोंसे कब ऊपर उठता है?

लालचसे आरामकी आबरू जाती रहती हैं। दो जौके लिए दामन-भरे मोती बिखेरना कहाँकी अक़्लमन्दी है? अगर तू नहरके पानीसे सन्तुष्ट हो सकता है, तो बर्फ़के लिए क्यों अपनी इज़्ज़त धूलमें मिलाता है? तू शायद नाज़ और निआमतसे सब्र कर ले, तो कर ले; वरना यह तय है कि ज़रूर-ज़रूर दर-बदरकी ठोकरें खाता फिरेगा।

ऐ इज़्ज़तके धनी, अपने लोभका हाथ छोटा कर। भला लम्बी आस्तीन—यानी टीम-टाम ज़ाहिर करनेवाली पोशाकसे तुझे क्या चाहिए? जिसके लोभका फ़रमान लिपट गया—यानी जिसमें लोभ नहीं रहा—वह किसीके लिए अपनेको बन्दा या खादिम या तावेदार क्यों लिखने चला? उम्मीद तुझे हर मजलिससे निकाल बाहर करेगी। बस, अपनेसे उम्मीद-को निकाल बाहर कर; इसलिए कि कोई तुझे निकाल बाहर न करे।

●

३

दिलकी बनिस्बत पेटका तंग होना कहीं बेहतर है

एक भक्तको बुखार आ गया। किसी प्रेमीने उससे कहा, "हुक्म हो तो फ़लाँ शख्ससे थोड़ी-सी शक्कर माँग लाऊँ। आप कुछ दवा खा लीजिए।"

भक्तने उसे जवाब दिया, "ऐ लड़के, मेरे लिए मौतकी कड़वाहटमें मिठास है; बजाय इसके कि मैं उसे मुँह बिगाड़ता हुआ देखूँ।"

इस तरह उस अक़्लमन्द भक्तने ऐसे आदमीसे शक्कर लेकर नहीं खायी, जिसने कभी ग़ुरूरमें आकर उसकी तरफ़से मुँह खट्टा बना लिया था।

हर उस चीज़के पीछे मत दौड़, जिसे तेरा दिल चाहता है; इसलिए कि जिस्मका मर्तबा आत्माके प्रकाशको घटा देता है। दुनियवी ख्वाहिश आदमीको ज़लील करती है। अगर तुझमें अक़्ल है, तो तू उसपर प्यार मत कर।

अगर तू दुनियवी ख्वाहिशके मुताबिक खायेगा तो आखिर नाउम्मीदीसे हाथ मलता रह जायेगा—यानी ज़मानेमें नाउम्मीदीके सिवाय और कुछ न पायेगा। बार-बार खाना, पेटके तन्दूरको बार-बार गरमाना, गोया न पानेपर मुसीबतमें पड़ना है।

अगर आसूदगीका वक़्त मेरा भरा रखता है, तो तंगीका वक़्त मुँहका रंग उड़ा देता है। बहुत खानेवाला गोया पेटका बोझ ढोता है, और नहीं पाता, तो ग़मका भार खींचता है। तू पेटके ग़ुलामको हमेशा शर्मिन्दा पायेगा। मेरे नज़दीक तो दिलकी बनिस्बत पेटका तंग होना कहीं बेहतर है।

४

तक़ाज़ेकी कड़वाहट बनाम गन्नेकी मिठास

कोई शख्स काहिराके तवक़री महल्लेमें गन्ने बेचता और खरीदारोंके दाहिने-बायें चक्कर लगाया करता था। उसने किसी भले आदमीसे कहा, "आप खुशीसे गन्ने ले जाइए और जब पैसे हों, दे दीजिए।"

इसपर उस नेक-तबीयत अक़्लमन्दने जो जवाब दिया था, वह इतना ख़ूबसूरत था कि दिलपर लिख लेने लायक़ था। उसने कहा था, "मुझे तो गन्नेसे सब्र हो जायेगा, लेकिन तुझे गन्नेकी क़ीमतके लिए सब्र न होगा। जब गन्ने चखनेके बाद तक़ाज़ेकी कड़वाहट मेरे सामने आयेगी, तो फिर उसकी मिठास कहाँ रहेगी?"

●

५

सलामतीका ख़ज़ाना तनहाईके एक कोनेमें रहता है

एक बादशाह बड़ी शान-शौक़तवाला था। जब उसका सूरज डूबनेको हुआ तो वह अपना मुल्क एक समझदार बुज़ुर्गको दे गया; इसलिए कि उसके औलादके नाम न कोई लड़का था न कोई लड़की थी।

कहाँ तो बुज़ुर्ग तनहाईमें अपनी ज़िन्दगी बसर करता था, और कहाँ अब सल्तनतका नक़्क़ारा सुनते ही तनहाईके सारे मज़े भुला बैठा। उसने ज्यों ही इधर-उधर लश्कर भेजना शुरू किया, त्यों ही बहादुरोंके दिलोंमें जङ्गका जोश उमड़ उठा। वह खुद इतना मज़बूत और लड़ाका हो गया

कि उसने मैदानमें कभी पीठ न दिखानेवाले बहादुरोंसे जम-जमकर लोहा लिया।

आखिर उसके हाथों एक परेशान दुश्मन मारा गया। अब क्या था, दुश्मनके साथियोंने एक राय और एक दिल होकर उसके क़िलेपर मज़बूती से घेरा डाला और तीरों और पत्थरोंकी मारसे उसका नाकों-दम कर दिया। जब उसे छुटकारेका कोई उपाय नज़र न आया तो उसने एक पहुँचे हुए फ़क़ीरके पास अपना आदमी भेजा और उससे दुआ की, "तक़लीफ़ बरदाश्त करते-करते परेशान हो उठा हूँ। अल्लाहके वास्ते मेरी फ़रियाद सुन लीजिए। तीर और तलवारसे ही हमेशा फ़तह हासिल नहीं होती। बस, अब तो आप ही का सहारा है। मेरी कुछ मदद कीजिए।"

यह सुनकर फ़क़ीर हँसा और बोला, "क्या ही अच्छा होता, कि वह आधी रोटी खाता और चैनकी नींद लेता। अफ़सोस, वह कारूँकी तरह निआमत-परस्त निकला। उसने यह नहीं जाना कि सलामतीका खज़ाना तनहाईके एक कोनेमें रहता है।"

●

सात

फुटकर उपदेश और शिक्षाएँ
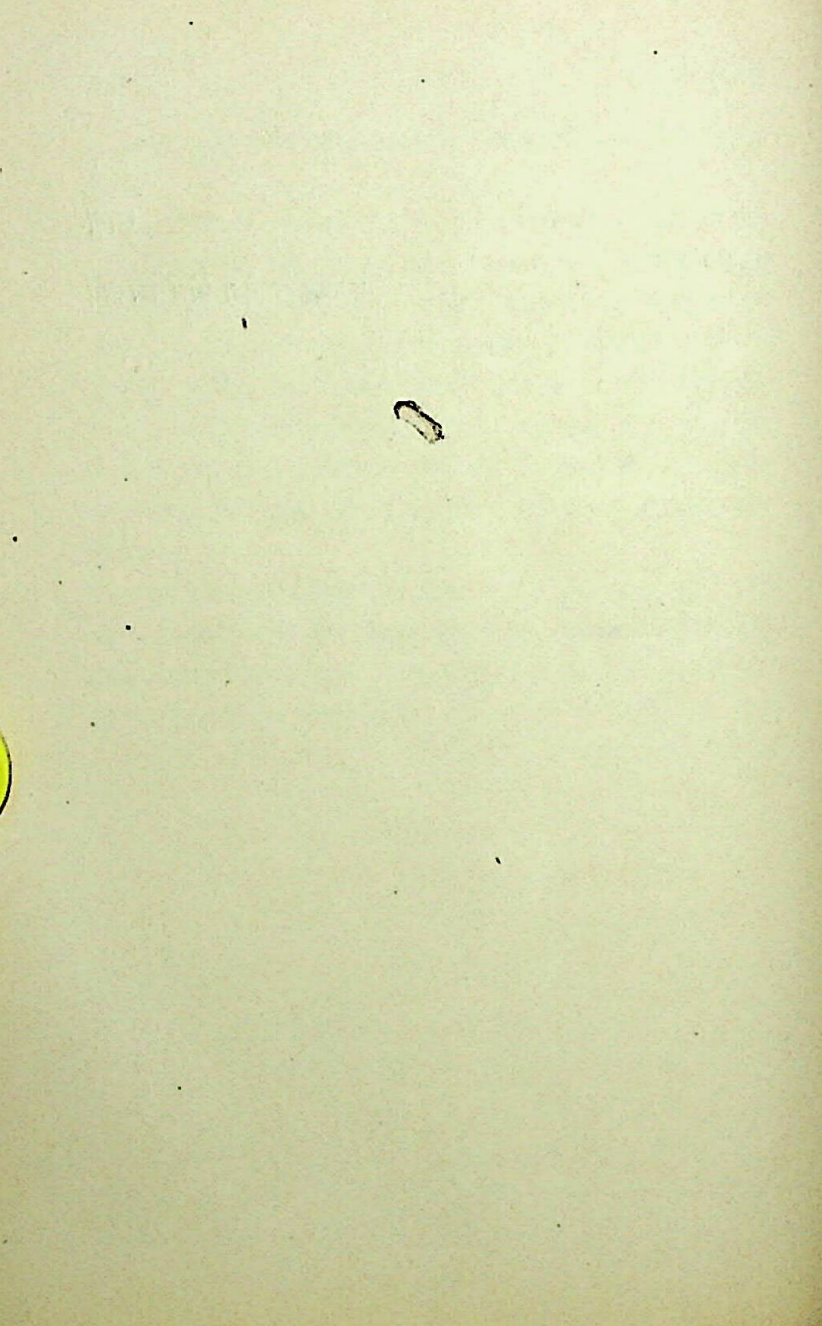
तेरा जिस्म एक मुल्क है

तेरा जिस्म एक मुल्क है, जिसमें भले-बुरे सब रहते हैं। तू ख़ुद इस मुल्कका बादशाह है और तेरी अक़्ल तुझे समझदार वज़ीरका काम देने-वाली है। गुरूर, गुस्सा और सौदा[1]-जैसे कमीने इसी मुल्कमें सोना ताने मटर-गश्त किया करते हैं। हवा[2], फ़रेब और नफ़रत—जैसे डाकू-गिरहकट भी इसी मुल्कमें घात लगाये घूमते-फिरते हैं। ऐसी सूरतमें सब्र, रज़ा[3], तस्लीम[4] और परहेज़[5]गारी सर उठाये भी तो कैसे उठायें! जब बादशाह-ही बदोंपर इनायत करे तो फिर भलोंको किस तरह आसाइश हासिल हो? यह सचाई है कि तुझमें शहवत[6], हिर्स,[7] कीना[8] और हसद[9]की वही जगह है, जो ख़ूनकी रगोंमें जानकी।

अगर ये दुश्मन इसी तरह परवरिश पाते गये तो हमेशाके लिए तेरे हुक्मसे, तेरे रुख़से, सर फेर लेंगे। जब हवा और हिर्स देखते हैं कि दिमाग़-में अक़्लका पंजा तेज़ है तो वे ख़ुद-ब-ख़ुद सरकशीसे पीछे हटने लगते हैं। क्या तू नहीं जानता कि रातमें जहाँ कोतवाल गश्त लगाता है वहाँ चोर-बदमाश और कमीने झाँकनेकी भी हिम्मत नहीं करते। साफ़ बात है, जिस रईसने दुश्मनपर हुकूमत नहीं की उसने दुश्मनके ही हाथों हुकूमत चलते देखी है। मैं इस बारेमें ज़्यादा नहीं कहना चाहता; क्योंकि अगर कोई अमल करे तो उसके लिए एक हर्फ़ भी बहुत काफ़ी है।

●

---

१. उन्माद, २. कामनाएँ, ३. भगवान्‌की मरज़ीपर राज़ी रहना, उसमें दुख मिले या सुख, ४. भगवान्‌की मरज़ीमें सच्चा आनन्द अनुभव करना, ५. संयमशीलता, ६. भोगाकांक्षा, ७. लोभ, ८. शत्रुता, ९ ईर्ष्या।

२

आदमी अपनी जबान-में छिपा हुआ है

एक गुदड़ीपोश बड़ी अच्छी आदतवाला था। वह मिस्रमें कुछ अरसे तक खामोश रह चुका था। क्या पासके और क्या दूरके अक़्लमन्द आदमी उसके इर्द-गिर्द जमा रहते थे और परवानेकी तरह उजाला ढूँढ़ा करते थे।

एक रात उसने अपने दिलमें सोचा कि आदमी अपनी ज़बानमें छिपा हुआ है। अगर मैं इस तरह खामोश रहूँगा तो शायद लोग समझेंगे कि अक़्लमन्द वही है। मगर बात मुँहसे निकलेगी तो दोस्त और दुश्मन सभी जान लेंगे कि मिस्रमें उससे ज़्यादा वही है—सिर्फ़ वही।

आखिर उसके पास हाज़िर रहनेवाले सब लोग परेशान हो गये। बस वह उठा और उसने मसजिदकी मेहरावपर लिख दिया : "अगर मैं अपनेको आइनेमें देखता तो अपनेको इस तरह बेवकूफ़ीसे ज़ाहिर न करता। इतना बुरा होनेके बावजूद अपनी बुराइयोंपर-से परदा न उठाता और खुद-को खूबसूरत न समझता। थोड़ा बोलनेसे आवाज़ तेज़ होती, यानी शोहरत बढ़ती, और ज़्यादा बोलनेसे रौनक़ घटती है। ऐ होशमन्द, खामोशी अगर तेरे लिए इज़्ज़त देनेवाली है तो बेवकूफ़के लिए परदा-पोशी करने-वाली है।"

अगर तू आलिम है तो ज़्यादा बोलकर अपना दबदबा मत खो, और अगर जाहिल है तो अपना परदा मत फाड़। अपने दिलका राज़ जल्दी ज़ाहिर मत कर, उसे तो जब ही तू चाहेगा ज़ाहिर कर सकेगा। मगर यह खयाल रख कि जब आदमीका राज़ ज़ाहिर हो जाता है तो फिर लाख कोशिश करनेपर भी पोशीदा होना ग़ैर मुमकिन है।

चौपाया ख़ामोश रहता है और इनसान बोलनेवाला होता है। मगर फ़िज़ूल बोलनेवाला चौपायेसे कहीं बदतर है। जब आदमी बात कहे तो होश-के साथ कहे, वरना चौपायेकी तरह ख़ामोश ही रहे। बोलनेसे आदमीकी अक़्ल उजालेमें आती है। इसलिए तोतेकी तरह बकवास करने और नादान बननेकी क्या ज़रूरत ?

३

अपने गुण और दूसरेके दोषपर नज़र न डाल

ऐ जवान, अगर तू मर्द है और अक़्ल रखता है तो किसी आदमीके बारेमें 'नेक' या 'बद' मत कह। इसलिए कि वह 'बद' है तो तू उसे अपना दुश्मन बनाता है और वह 'नेक' है तो तू बुरा करता है।

जब तुझसे कोई कहे कि फ़लाँ आदमी बुरा है तो समझ ले कि वह अपने पोस्तीनमें है[1]। जब तू दलील पेश करता है कि फ़लाँ शख़्सने भी तो ऐसा काम किया है तो ख़ुद-ब-ख़ुद यह ज़ाहिर करता है कि तेरा काम खोटा है। जब तू किसीको बुरा कहता है तो ख़ुद भी बुरा बनता है—भले ही तेरी बात बावन तोले पाव रत्ती सच हो।

मशहूर और अक़्लमन्द पीर हज़रत शेख़ शहाबुद्दीनने नहर-किनारे मुझे दो नसीहतें अता फ़रमायी थीं—"पहली यह कि अपने गुण न देख, और दूसरी यह कि ग़ैरके दोषपर नज़र न डाल।"

---

१. अभिप्राय यह है कि वह पशुकी खालका लिबास धारण किये हुए है, अर्थात् पशु है।

४

ग़ीबत[1] करना गोया आदमीकी लाश खाना है

वचपनमें मुझे रोज़ा रखनेका शौक़ हुआ। उस वक़्त मैं दायाँ-वायाँ भी ठीक नहीं समझता था। मुहल्लेमें रहनेवाले एक मुल्लाजी मुझे वज़ू करनेका तरीक़ा सिखाते रहते थे—

"अव्वल तो बिस्मिल्लाह कहो, फिर नीयत बाँधो और पहुँचे तक हाथ धोओ। इसके वाद तीन वार मुँह और नाकपर पानी डालो। तीन ही वार नथुनोंमें छोटी उँगली डालो और उनको साफ़ करो। अव पहली उँगलीसे अच्छी तरह दाँत रगड़ो; क्योंकि दोपहरके वाद दातौन करना मना है। फिर दोनों हाथोंके ज़रिये जहाँसे बाल शुरू होते हैं, वहाँसे ठोड़ी तक मुँहपर पानी मारो और गीले हाथ—आगेसे लेकर पीछे तक—फेर लो। इसके वाद पैर धोओ। वस, अब खतम है अल्लाहके नामपर। इस कामको मुझसे बेहतर जाननेवाला कोई नहीं है। तुम देखते तो हो, गाँवमें कितने उम्र-रसीदा बूढ़े खूसट मौजूद हैं।"

यह वात गाँवके पुराने मुखियाने सुनी, तो वहुत शोर मचाया और गरजकर मुल्लाजीसे कहा—

-'ऐ बुढ़ापेकी दरगाहपर बेजा हरकत करनेवाले शैतान, क्या तूने नहीं वताया था कि रोज़ेमें दातोन करना नाजायज़ है? मैं पूछता हूँ कि क्या आदमीकी लाश खाना—यानी किसीकी ग़ीबत करना जायज़ है? जो बातें कहने-लायक़ नहीं हैं, उन्हें कहना छोड़ दे और जो चीजें खाने-लायक़ नहीं हैं, उन्हें खाना छोड़ दे। जब गुफ़्तगूके दरम्यान किसीका ज़िक्र आये तो उसका नाम तारीफ़ और ख़ूबीके साथ ले। अगर तू हमेशा कहता रहे कि

---

१. पीठ पीछे बुराई करना।

यह गधा है—वह गधा है, तो फिर यह खयाल मत रख कि कोई तेरा नाम इज्जतसे लेगा। पुरा-पड़ोसमें इस तरह मेरी आदतका ज़िक्र कर, जिस तरह तू मेरे रू-ब-रू कर सकता है। तुझे अल्लाहसे शर्म होनी चाहिए, जो सब जगह हाज़िर-नाज़िर है। मगर देखता हूँ कि तुझे अपने-आपसे भी शर्म नहीं आती, जैसे तू उससे हाथ धो चुका है। फिर मुझसे क्या शर्म करता है।"

५

दुश्मनकी कही सुनानेवाला उससे बड़ा दुश्मन है

किसी शख्सने ऊँचे खयाल रखनेवाले एक सूफ़ीसे कहा, "आपको मालूम नहीं कि फ़लाँ शख्स आपकी पीठ-पीछे आपके बारेमें क्या कहता रहता है!"

यह सुनकर सूफ़ी बोला, "ऐ भाई, चुप रह; जा आराम कर! दुश्मन जो कुछ कहता है उसे न जानना ही बेहतर है। जो आदमी दुश्मनका सन्देशा लेकर आता है, सचाई यह है कि वह दुश्मनसे भी ज्यादा दुश्मन होता है। कोई दोस्त दुश्मनका सन्देशा लेकर दोस्तके पास नहीं आता, सिवाय उसके जो ऊपरसे तो दोस्ती ज़ाहिर करता है मगर भीतर-ही-भीतर दुश्मनी रखता है। दुश्मन मेरी ऐसी बुराई नहीं कर सकता जिसे सुनकर मेरा जिस्म काँपने लगे। दुश्मन तो खैर, पीठ-पीछे मुझे सख्त-सुस्त कहता है, मगर तू मेरे ही सामने ज़बान चलाता है इसलिए तू दुश्मनसे कहीं बढ़कर है!"

बातें लगानेवाला पुरानी लड़ाईको ताज़ा कर देता और ऐबोंपर क़ाबू

रखनेवाले भले आदमीको भी लड़ा देता है। जहाँतक हो सके ऐसे दोस्तसे दूर भाग जो सोते हुए फ़ितनेसे कहे कि उठ। आदमी जा-ब-जा फ़ितनेको लिये फिरे, इससे बेहतर है कि वह अँधेरे कुएँमें क़ैद रहे। दो आदमियोंमें लड़ाई आगके समान भड़क सकती है, उनके बीचमें काट करने और ईंधन झोंकनेवाला बदबख़्त-भर होना चाहिए।

६

जिस घरमें सुन्दर स्त्री है, वह घर पतिके लिए स्वर्ग है

यदि स्त्री सुन्दर हो, आज्ञाकारिणी हो, पतिव्रता हो; तो वह निर्धन पतिको भी राजा बना देती है। यदि ऐसी अनुकूल स्त्री तेरे पास है तो जा, अपने दरवाज़ेपर ख़ुशी मना। तुझे दिन-भर कड़ी मेहनत-मशक़्क़त करनी पड़े तो भी चिन्ताकी कोई बात नहीं, यदि रातको तेरे पास चिन्ता दूर करनेवाली स्त्री है। जिसका घर आबाद है और जिसके पास घर आबाद करनेवाली स्त्री है तो समझ ले, उसीपर ईश्वरकी दया-दृष्टि है।

यदि घरमें सुन्दर स्त्री है तो पतिके लिए मानो वह स्वर्ग है। जो शख़्स अपना हृदय और अपना सुख अपनी स्त्रीके लिए समझता है वह संसारमें सब तरह कामयाबी हासिल करता है। यदि स्त्री पतिव्रता है, मधुर भाषण करनेवाली है, तो फिर उसकी ख़ूबसूरती और बदसूरतीपर ध्यान देना मूर्खता है। सचमुच पतिको धीरज बँधाने और शान्ति पहुँचानेवाली स्त्री बहुत बेहतर है। वह इन गुणोंके ज़रिये मानो अपने दोषोंकी तरफ़से पतिकी आँखोंपर परदा डाल देती है।

स्त्री वह है जो पतिके हाथसे सिरका भी हलवेकी तरह खा ले, न कि

हलवेको सिरकेकी तरह खाये। वह भले ही परी-जैसे आकर्षक मुखड़ेवाली हो, यदि बुरी आदतें रखती है, तो अच्छी आदतें रखनेवाली कुरूप स्त्री भी उससे बाज़ी मार ले जाती है। पतिका भला चाहनेवाली स्त्री ही पतिके हृदयपर अधिकार रखती है। जो स्त्री इसके विरुद्ध आचरण करती है, उससे ईश्वर बचाये। यदि पींजड़ेमें तूतीका साथी कौआ हो, तो वह पींजड़ेसे निकल भागना ग़नीमत समझता है।

यदि घरमें दुर्गुणी स्त्री मौजूद है, तो संसारमें भटकना और परेशानी उठाना बेहतर है, या फिर मजबूरन् दिल ऊँचा रखनेके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। घरमें हमेशा स्त्रीके बदले हुए तेवर देखना पड़े, इससे तो कहीं सरकारी क़ैदखानेमें बन्द रहना हज़ार दर्जे अच्छा है। जिस घरमें दुर्गुणी स्त्री मौजूद है, उस घरका मालिक यात्रापर निकल जाये—यही उसके लिए ईद है। जिस घरसे स्त्रीकी भयानक आवाज़ ऊपर उठती है, समझना चाहिए कि उस घरके लिए खुशीका दरवाज़ा बन्द है।

यदि स्त्री मूर्ख है, गन्दे खयाल रखनेवाली है, तो वह तेरे लिए स्त्री नहीं, मुसीबत है। परन्तु जिस शख्सके साथ साफ़ दिल और मज़बूत हाथोंवाली स्त्री है, उसके साथ मानो ईश्वरने अधिकसे-अधिक भलाईकी है। जिस तरह तंग जूते पहिननेके बदले नङ्गे पैर फिरना कहीं अच्छा है, उसी तरह घरकी दाँता-किलकिलमें पड़नेके बदले यात्राकी मुसीबतें सह लेना कहीं बेहतर है। ऐ भाई, यदि तू किसी ऐसे आदमीको देखे, जो स्त्रीका ग़ुलाम हो, तो न उसे ताना मार, न उसका मज़ाक़ उड़ा।

●

७

जहाँ तक बन सके, अपने लड़केको नेक बना

नादान माँ-बापसे कह दे, कि जब लड़का दस साल पार कर ले, तो वह उससे दूर बैठें। रूईके पास आग जलाना ठीक नहीं; कौन जाने, उसके एक झोंकेमें घर जल जाये। अगर तू चाहता है, कि तेरा नाम क़ायम रहे, तो अपने लड़केको अक़्लमन्द और समझदार बना। अगर उसमें काफ़ी अक़्ल और सूझ-बूझ न होगी, तो तू मर जायेगा और दुनियामें कोई तेरा नाम-लेवा भी न रहेगा।

अगर बाप नाज़-नखरेंसे बेटेको पालता है, तो ज़मानेकी सख्ती कौन बर्दाश्त करेगा? बेटेकी परवरिश इस तरह कर कि वह आक़िल और परहेज़गार बने। अगर तू उसे दोस्त ही रखता है, तो फिर उसके नाज़-नखरे मत उठा। उसे कम उम्रमें ही झिड़की दे और सिखा-पढ़ा—भले और बुरेका भेद समझा, नेकीसे होनेवाले फ़ायदे और बदीसे पहुँचनेवाले नुक़सान बता। मगर यह खयाल रख कि इस उम्रमें उस्तादकी डाँट-डपटके बदले सराहना और शाबासी कहीं ज्यादा असर करती है।

तू जिसकी परवरिश करता है, उसे मेहनत करना भी सिखा; भले ही तेरे क़ब्ज़ेमें क़ारूँका खज़ाना क्यों न हो। अपनी क़ूवत और हुकूमत-पर ज़रा भी भरोसा न कर; इसलिए कि मुमकिन है, तेरे हाथमें ये निआमतें न रहें। चाँदी-सोनेका थैला खाली हो जाता है, मगर पेशेका थैला कभी खाली नहीं होता। तुझे क्या पता कि ज़मानेकी गर्दिशसे तू ग़रीबीके पञ्जेमें फँस जाये और तेरा लड़का मुल्क-भरमें मारा-मारा फिरे। अगर किसी पेशेपर उसका क़ाबू होगा, तो वह क्यों किसीके सामने सवाल-का हाथ फैलायेगा?

तुझे नहीं मालूम कि सादीने यह पद—यह मान कहाँसे पाया, कैसे पाया। यह उसे जंगलों-पहाड़ोंमें भटकने और समुद्रकी लहरोंके थपेड़े खानेसे नहीं मिला। असल बात यह है कि उसने बचपनमें बुजुर्गोंकी चपतें खायी थीं। बस, अल्लाहने उसके इस बुढ़ापेपर किसी तरह पसन्दीकी नज़र कर दी। जो शख्स उसकी तावेदारी करेगा, बहुत मुद्दत नहीं गुज़रेगी कि वह हाकिम हो जायेगा। जो बच्चा उस्तादकी सख्ती नहीं देखेगा, वह ज़मानेकी सख्ती झेलेगा। जहाँतक बन सके, लड़केको नेक बना और आराम पहुँचानेके सामान कर। कहीं ऐसा न हो कि उसकी उम्मीद दूसरों-की मुट्ठीमें हो जाये।

जिस लड़केकी फ़िक्र बापने नहीं की, उसकी फ़िक्र दूसरा करेगा और नतीजेमें वह आवारा बनेगा। इसलिए उसे बुरे आदमीसे मिलने-जुलनेसे रोक, नहीं तो वह बदबख्त उसे अपने समान आवारा बनाकर ही छोड़ेगा। भला उस बदकारसे बढ़कर गुनहगार कहाँ मिलेगा, जिसने दाढ़ी-मूँछ निकलनेसे पहले ही अपना मुँह काला कर लिया हो? ऐसे बेग़ैरत लड़केसे तो दूर भागना ही भला, जिसने अपनी बदकारियोंसे बाप-दादोंकी आबरू धूलमें मिला दी हो। जब लड़का लुच्चों-गुण्डोंमें जा बैठे, तो उसके बापसे कह दे कि वह अपने सपूतकी भलाईसे हाथ धो रखे। अगर ऐसा लड़का बरबाद हो जाये—यहाँतक कि मारा भी जाये, तो उसके लिए अफ़सोस करनेकी ज़रूरत नहीं। नालायक़ औलादका तो बापसे पहले ही मर जाना बेहतर है।

●

८

बद-अन्देशकी ज़बान बन्द करना ग़ैरमुमकिन है

अगर कोई दुनियामें दुनियासे बचा हुआ है, तो उसने अपने ऊपर मख़लूक़का दरवाज़ा वन्द कर दिया है। मगर ज़बानोंके ज़ोरसे कोई नहीं बचा; वह चाहे झुठाईपर जीनेवाला हो, चाहे सचाईपर मरनेवाला हो। तू भले ही फ़रिश्तेके समान आसमानसे उतरे, बद-गुमानीके दामनमें लटका रहेगा। कोशिशसे दजलाके आगे बाँध डाल देना मुमकिन है, मगर बद-अन्देशकी ज़बान बन्द करना ग़ैर-मुमकिन है।

जब गुनहगार इकट्ठे बैठते हैं, तो कहते है कि यह परहेज़ कोरा ढोंग है—रोटी कमानेका अच्छा-खासा ढंग है। तू अल्लाह-तालाकी इबादत किये जा—मख़लूक़की तरफ़से मुँह मोड़ ले; भले ही वह तेरी पाकीजगी-का मज़ाक़ उड़ाया करे। बन्देसे अल्लाहतालाको खुश होना चाहिए, ये लोग राज़ी न भी हों, तो क्या डर! बद-अन्देश मख़लूक़ सचाईसे क्यों वाक़िफ़ होने चली! उसके शोर-गुलको छोड़े बग़ैर सचाईकी तरफ़ कोई रास्ता नहीं है।

गुनहगारोंने पहला ही क़दम ग़लत रखा है, भला वह मतलबके नेक रास्तेपर कैसे पहुँच सकते हैं? दो आदमी ऐसे होते हैं, जो एक ही बातपर कान लगाते हैं—पहला तो वह, जो फ़रिश्तेकी तासीर रखता है, और दूसरा वह, जो शैतानकी राह पसन्द करता है। पहला उससे नसीहत लेता है, और दूसरा उसमें तरह-तरहके ऐब निकालता है। जो अँधेरे कोनेमें पड़ा हुआ है, वह इस दुनियाके छलकते हुए प्यालेसे क्या हासिल कर सकता है?

चाहे शेर हो, चाहे लोमड़ी हो; खयाल मत कर कि तू उनसे बहादुरी या छल-कपटके ज़रिये छुटकारा पा जायेगा। अगर कोई एकान्त कोनेमें

जा बसे और लोगोंसे ज्यादा मेल-जोल न रखना चाहे, तो बद-अन्देश उसकी बुराई करते हैं, कहते हैं—बहानेबाज़ है, लोगोंसे शैतानकी तरह भागता है। अगर इनसान लोगोंसे मिलने-जुलनेवाला हो—लोगोंकी भलाई चाहनेवाला हो, तो उसके बारेमें राय क़ायम करते हैं—कहाँका पाक-साफ़ है! बना हुआ खुद-ग़रज़ है।

अगर इनसान मालदार हो, तो पीठ-पीछे बुराईसे उसका चमड़ा छीलते हैं। कहते हैं कि बस, दुनियामें यही तो फ़िराऊन है। अगर कोई मर्द दरवेश हो—मुसीबतका मारा हो, तो कहते हैं कम्बख्त है—बदबख्त है; तभी तो इस तरह मारा-मारा फिरता है। अगर कोई कामयाबी हासिल करता है, तो ठण्ढी साँसें भरते और कहते हैं—इत्तेफ़ाक़से पाजीपर अल्लाहका रहम है। कभी तो इस रुतबेसे गिरेगा और गरदन नीची करेगा। कभी तो इस खुशीके बाद ग़मका मुँह देखेगा।

अगर किसी तंग-दस्तका—छोटी हैसियतवालेका नसीब बदलता और रुतबा बढ़ता है, तो मारे डाहके दाँतोंसे होंठ चबाते और कहते हैं कि सियाह दिलवाला है—कमीना दूसरोंसे जलन रखनेवाला है। अगर किसी-के हाथमें कोई बड़ा काम देखते हैं, तो उसे लालची बताते हैं—दुनिया-परस्त ठहराते हैं। अगर कोई हिम्मतके—भलाईके काममें हाथ लगाता है, तो कहते हैं—फ़क़ीर है फ़क़ीर, दूसरोंकी हण्डीपर हाथ साफ़ करनेवाला!

अगर कोई क़ौल-क़रारपर ज़ोर देता है, तो कहते हैं कि बेहूदा बकवास करनेवाला है, और अगर कोई खामोश रहता है, तो कहते हैं कि बस, हम्मामका नक़्श है। अगर कोई बर्दाश्त करनेवाला है, तो उसे नामर्द ठहराते हैं। अगर कोई डरके मारे सिर नहीं उठाता, या अपने दिलमें मर्दानगीसे खौफ़ खाता है, तो उससे दूर भागते और कहते हैं कि यह तो दीवाना है। अगर कोई थोड़ा खाता है, तो उसे यह कहकर रंज पहुँचाते हैं कि बस, इसका माल तो दूसरोंकी क़िस्मतमें लिखा है और अगर कोई ज़्यादा खाता है, तो उसे 'पेटू' या 'खाऊखप्प' बताते हैं।

अगर कोई मालदार ठाट-बाट पसन्द नहीं करता और सादगीसे रहता है, तो उसकी बुराईमें कतरनीकी तरह ज़बान चलाते हैं—रुपये-पैसेवाला है, तो क्या हुआ, बद-क़िस्मत है, मक्खीचूस है, और अगर अपना मकान आरास्ता रखता है, लक़-दक़ कपड़े पहिनता है, तो ताना-ज़नोंसे तंग आ जाता है, जो कहते हैं—देखो तो बेवक़ूफ़को, औरतोंकी तरह बना-ठना रहता है। अगर कोई भला आदमी इधर-उधर नहीं जाता, तो उसपर फ़ब्तियाँ कसते हैं—उल्लूका पट्ठा है, घरमें घुसा रहता है। भला जो आदमी बाहर क़दम नहीं रखता, वह कैसे अक़्लमन्द-हुनरमन्द हो सकता है ?

फिर ऐसे लोग दुनियाको देखने-परखनेवालेका चमड़ा फाड़ते हुए भी नहीं हिचकते। कहते हैं—औंधे नसीबेका है, तभी तो आवारा फिरता है। अगर खुश-क़िस्मतीमें उसका कुछ भी हिस्सा होता, तो वह ज़मानेमें क्यों इस तरह दर-दरकी खाक छानता फिरता ? ऐसे लोग बेज़न[1]-जैसे मर्दके बारेमें बग़ैर किसी पसोपेशके ज़बान हिलाने लगते हैं—उँह, ज़मीन-को उसका उठना-बैठना भी नापसन्द है। और तो क्या, इनसान चाहे जैसा खूबसूरत, चाहे जैसा मीठा बोलनेवाला क्यों न रहा आये, वह भी नुक़्ता-चीनीके निशानेसे नहीं बचने पाता, और यह नुक़्ता-चीनी करनेवाले कौन होते हैं ? निहायत बदसूरत—निहायत कड़वी ज़बान रखनेवाले !

●

---

१. ईरानका एक बहुत बड़ा पहलवान।

९

लोगोंकी बुराईसे पैग़म्बर भी नहीं बचने पाये

मिस्रमें एक ग़ुलाम मेरा सेवक था। वह इतना हयादार था कि हमेशा आँखें नीची किये रहता था। यह देखकर एक शख्सने मुझसे कहा, "भई, यह लड़का न अक़्लमन्द जान पड़ता है, न समझदार। ज़रा इसके कान गरम कीजिए—ज़रा इसे कुछ तालीम दीजिए।"

जब एक दिन मैंने उस लड़केको कुछ डाँट-डपट दिखायी, तो वही शख्स एकबारगी चीख उठा—"अरे रे, बेगुनाह ग़रीबको मार डाला! मियाँ, ऐसी भी सख्ती किस कामकी। अल्लाहके वास्ते ज़रा तो रहम-दिलीका लिहाज़ किया कीजिए।"

बड़ी अजीब तबीयतके होते हैं ऐसे लोग! अगर कभी तुझे ग़ुस्सा आ जाये, तो कहेंगे—"सिर-फिरा है—बेवक़ूफ़ है!" अगर तू किसीके साथ सहन-शीलता दिखाये, तो कहेंगे—'बुज़-दिल है—बेग़ैरत है!' अगर किसीको सखी देखेंगे, तो उसे नसीहत करेंगे—"रहने भी दो म्याँ यह सखावत! किसी दिन ग़रीबीके चंगुलमें फँस जाओगे, तो रोते फिरोगे!" अगर किसीको सन्तोषी या स्वाभिमानी पायेंगे, तो उसकी बुराई करेंगे—"यह कमीना भी बापकी तरह मरेगा। वह मर गया और हसरतके हाथ मलता चला गया!" सच है, जब ऐसे लोगोंकी बुराईसे पैग़म्बर भी नहीं बचने पाये, तो फिर कोई क्योंकर चैनसे बैठ सकता है?

●

१०

दोस्तका अहसान ज़ाहिर करना मुश्किल है

मैं दोस्तके अहसानसे इतना दबा हूँ कि खुलकर साँस भी नहीं ले सकता। मेरे पास ऐसे लफ़्ज़ ही नहीं, जो वह अहसान ज़ाहिर करने लायक़ हों। मेरे जिस्मके हर-हर बालमें उसकी मेहरबानी भरी हुई है, फिर हर बालसे कैसे उसका अहसान ज़ाहिर करूँ? बख्शीश करनेवाले अल्लाहतालाके लिए यह तारीफ़की बात है कि वह मुझे न दिखनेवाली दुनियासे दिखनेवाली दुनियामें लाया। किसमें यह क़ूवत है कि उसकी तारीफ़ कर सके। जिस तरह उसकी शान बेइन्तेहा है, उसी तरह उसका अहसान भी बेइन्तेहा है।

वह ऐसा कारीगर है कि मिट्टीसे आदमी पैदा करता है। फिर उसमें रूह डालता और उसे दिल, अक़्ल और समझके ज़रिये बना-सँवार देता है। ज़रा सोच तो, बापके जिस्मसे लेकर माँके जिस्मसे बाहर आने तक तुझे उसने ग़ैबके खज़ानेसे क्या-क्या निआमतें नहीं दीं! जब उसने तुझे पाक-साफ़ पैदा किया है, तब तू होश रख और पाक-साफ़ रह। यह समझ ले कि खाकमें नापाक मिलना शर्मकी बात है। आइनेकी गर्द हमेशा पोंछा कर—इसलिए कि अगर कहीं उसपर ज़ंग बैठ गयी, तो फिर वह सैक़ल[1]से भी छुटाये न छूटेगी।

क्या तू शुरूमें पानीका क़तरा नहीं था? इसलिए अगर मर्द है, तो अपने दिमाग़से ग़ुरूर निकाल दे। जब तुझे कोशिशसे रोज़ी हासिल हो, तो अपने ज़ोरपर अपने बाज़ूपर भरोसा मत कर। ऐ मग़रूर, क्या तुझे

---

१. वह यन्त्र जिससे आइने और तलवार आदि हथियार चमकाये जाते हैं।

यह असलीयत नहीं मालूम कि हाथको काम करनेकी क़ूवत कौन देता है? अगर तेरी कोशिशसे किसी तरहकी भलाई पैदा हो, तो उसे अल्लाहके रहमसे समझ, न कि अपनी कोशिशसे। ज़ोरावरीसे कोई गेंद नहीं जीत लेता; अगर तू जीत ले, तो अपने ऊपर अल्लाहका रहम जान और उसका अहसान मान।

तू अपने-आप एक क़दमपर भी तो क़ायम नहीं है। तुझे हर घड़ी ग़ैवसे उसीकी मदद पहुँचती रहती है। देख, बच्चा माँके पेटमें—बच्चेदानी-के अन्दर अपनी ज़बान बन्द रखता है, फिर भी उसे नाफ़के ज़रिये बराबर रोज़ी मिलती रहती है; और जब नाफ़ कट जाती है—रोज़ीकी राह टूट जाती है, तो वह चुपके-चुपके माँके स्तनोंपर अपना मुँह लगा देता है। फिर वह मुसाफ़िर जब दुनियामें बीमार पड़ता है, तो दवाकी शकल-में अपने ही वतनका पानी पाता और सँभलकर उठ खड़ा होता है।

मतलब यह कि बच्चेने पेटमें परवरिश पायी है—उसकी नालीसे ख़ूराक हासिल की है। माँके दोनों स्तन—जिनसे आज उसे ग़रज़ है, ख्वाहिश है—ज़िन्दगीके दो चश्मे हैं और उसी अल्लाहतालाकी परवरिश-गाहसे है। माँकी प्यारी-प्यारी गोद उसके लिए बिहिश्त है, जिसमें दूधसे भरे हुए स्तन दो नहरोंके समान हैं। माँका जिस्म तो उसकी जानकी परवरिशके लिए मानो दरख्त है और वह क्या है? वह उस दरख्तकी डालमें फला हुआ, जैसे प्यारा-प्यारा मेवा है।

क्या स्तनोंकी रगें दिल तक पहुँची हुई नहीं हैं? बस, अगर तू ग़ौर करे तो समझ ले कि दूध और कुछ नहीं है, दिलका ही ख़ून है। उस ख़ूनमें तूने अपनी मुहब्बत क्या शामिल की, डंककी तरह अपने ख़ूँ-ख्वार दाँत गड़ा दिये। जब तेरे दाँत बड़े और बाज़ू ताक़तवर हो गये, तो दाईने स्तनोंपर एलुआ मल दिया और जब एलुवेने दूध खामोश कर दिया, तो तू उसकी मिठास बिलकुल भुला बैठा! फिर भी तौबामें तू बचपनके रास्ते-पर है, अगर सब्रसे काम लेगा, तो तेरा गुनाह भी भुला दिया जायेगा।

●

११

ज़रूरत अच्छी आदत अख़्तियार करनेकी है

देख, एक उँगली चन्द जोड़ोंसे मिलकर गणित विद्याकी कैसी कारीगरी दिखाती है! अगर तू उस कारीगरीपर उँगली उठाये—यानी अल्लाहतालाकी कारीगरीमें ऐब निकाले, तो बस, यह तेरी नादानी है—बेवकूफ़ी है। ज़रा सोच, आदमी चल-फिर सके—इसलिए उसने कितनी हड्डियाँ आगे-पीछे मिलायी हैं। भला टखने और घुटने हिलाये-डुलाये बग़ैर क़दम अपनी जगहसे कैसे उठ सकते हैं?

आदमीकी रीढ़की हड्डियाँ भी एक नहीं हैं। यही वजह है जो उसे सिजदा करनेमें कोई मुश्किल नहीं है। उसने दो सौ टुकड़े एक दूसरेसे मिलाये और जोड़े हैं, तब कहीं तुझ जैसा मिट्टीका ढाँचा तैयार हुआ है। ऐ भली आदत और समझवाले, तेरे जिस्ममें रगें इस तरह हैं, जिस तरह किसी ज़मीनमें तीन सौ साठ नहरें। सिरमें देखने, सुनने, सूँघने, चखने, बोलने, बतानेकी कूवत भरी है और भला-बुरा, सोचने-समझनेके लिए अक़्ल या तमीज़ मौजूद हैं।

चौपाये मुँहके बल पड़े रहते हैं—गिरि हुई हालतमें रहते हैं; मगर तू अलिफ़की तरह क़दमोंपर सवार है। चौपाये खानेकी ग़रजसे सिर झुकाते हैं, मगर तू अपने खानेका निवाला इज़्ज़तके साथ सिरके सामने लाता है। जब मालिकने तुझे ऐसी सरदारी दी है, तो तेरे लिए यह शोभाकी बात नहीं है कि तू इबादतके सिवाय और किसी तरह सिर झुकाये। मगर तुझे इस दिल खुश करनेवाली सूरतपर लट्टू होनेकी ज़रूरत नहीं है, ज़रूरत अच्छी आदत अख़्तियार करनेकी है।

तेरा रास्ता छोटा, सीधा-सादा और साफ़-सुथरा होना चाहिए, न

कि लम्बा, टेढ़ा-मेढ़ा और ऊबड़-खाबड़; वरना सूरत-शकलमें तो क़ाफ़िर भी तेरी तरह है। जिसने तुझे मुँह दिया है, आँखें दी हैं, कान दिये हैं, उसके खिलाफ़ कोशिश करना तेरा फ़र्ज़ नहीं है। मैंने मान लिया कि तू दुश्मनको पत्थरसे नहीं मारेगा, मगर तुझे नादानीके दोस्तसे लड़नेकी ज़रूरत ही क्या है ? जो अहसान माननेवाले—अक़्लमन्द तबीयतवाले होते हैं, वह ज़बानी ही नहीं दिली शुक्रियेकी मेखसे निआमतको मज़बूत कर लेते हैं।

१२

वह भली आदतवाला बेहतर है, जो किसीको तकलीफ़ नहीं पहुँचाता

एक शख्स किसी दरवेशके पास गया। दरवेश देखनेमें उसे यहूदी मालूम हुआ। बस, उसने दरवेशकी गरदनपर घूँसा मार दिया। मगर दरवेशने बदलेमें उसे अपना कपड़ा दे डाला।

इसपर वह शख्स बहुत शर्मिन्दा हुआ और बोला, "मैंने जो कुछ किया—बहुत बुरा किया। मुझे माफ़ कर दीजिए। भला मेहरबानीका ऐसा अच्छा मौक़ा आप कहाँ पायेंगे ?"

दरवेशने अल्लाहका शुक्र अदा किया और कहा, "ऐ भाई, मैं बदी या बुराईके साथ खड़ा नहीं होता। फिर तूने मुझे जो कुछ समझा है, मैं वह नहीं हूँ—हरगिज़ नहीं हूँ।"

वह भली आदतवाला—जो किसीको तकलीफ़ नहीं पहुँचाता—उस नेक नामसे कहीं बेहतर है, जिसका दिल खराब है। मेरे नज़दीक रातमें फिरनेवाला वह डाकू उस बदकारसे कहीं बेहतर है, जो कपड़े तो दरवेश-जैसे पहिनता और दुनियाकी आँखोंमें धूल झोंकता है।

१३

तुम्हारी परवरिश वह करता है, जिसकी ताक़त ज़र्रे-ज़र्रे में समायी हुई है

अगर अल्लाहकी तरफ़से इस मिट्टीके ढाँचेकी ज़िन्दगी बाक़ी है, तो समझ लो कि उसने जड़ी-बूटियोंमें तन्दुरुस्ती पैदा कर दी है। ज़िन्दा आदमियोंका मिज़ाज मामूली शहद भी दुरुस्त कर देता है; मगर मौतके दर्दका क्या इलाज है? अगर जान बदनसे निकल चुकी हो या निकल रही हो, तो शहद मुँहमें डालनेसे क्या फ़ायदा? एक शख्सके दिमाग़में लोहेका हथौड़ा लग गया। इस पर उस मरते हुए-से किसी शख्सने कहा, "अपने दर्दपर सन्दल मलो सन्दल!"

जहाँतक हो सके, खतरेके सामनेसे भाग जाओ; लेकिन अल्लाहके हुक्मसे लोहा लेनेके लिए पञ्जे तेज़ मत करो। जबतक भीतरी अङ्ग खाने-पीनेके लायक़ हैं, समझ लो कि यह मुँह ताज़ा है—यह शकल साफ़ है। उस वक़्त तनका यह घरौंदा बिलकुल खराब हो जाता है, जब तबीयत और खाने-पीनेका कोई आपसी मेल नहीं बैठता। तुम्हारा मिज़ाज तर, खुश्क, गरम और सर्द है और इनसानमें इन्हीं चारों खूबियोंका बोलबाला है। अगर इनमें-से कहीं एक भी दूसरीको दबा बैठी, तो तबीयतके तराज़ूमें पासंग आ जायेगा।

अगर साँसकी ठण्ढी हवा न आये-जाये, तो सीनेकी गरमी ही ठण्डी हो जाये, और अगर मेदेमें खानेका जोश न आये, तो इनसानका जिस्म बेकार हो जाये। मगर जो लोग असलीयतकी परख जानते हैं, वह इन बातोंमें दिल नहीं लगाते; क्योंकि इनका तौल हमेशा बराबर नहीं रहता। उमदा ग़िज़ासे अपने जिस्मकी ताक़त मत समझो। तुम्हारी परवरिश तो वह करता है; जिसकी ताक़त ज़र्रे-ज़र्रेमें समायी हुई है।

उसकी सचाईकी क़सम, तलवार या छुरीकी धारपर आँख रख दी जाये, तो भी उससे शुक्रका हक़ अदा नहीं हो सकता। जब तुम इबादत-का सिजदा करो, तो अपनेको भूल जाओ, अल्लाहकी तारीफ़ करो और समझो कि उसने बड़ी दया की। पाकीज़गीसे अल्लाहका ज़िक्र करना—सच्चे दिलसे अल्लाहकी प्रार्थना करना ही फ़क़ीरी है। भला फ़क़ीरीको ग़ुरूर करनेकी क्या ज़रूरत है? मैंने मान लिया कि तुमने खुद इबादत की है, तो क्या तुमने अपनी रोज़ीमें-से नहीं खाया है? वही तो अल्लाहकी जागीर है।

•

१४

उसने तुम्हें अक़्ल—सूझ-बूझ दी है

वह बड़ा रहनुमा है। उसने बन्देके दिलमें इरादा पैदा कर दिया। इसके बाद बन्देने अपना सर ज़मीनपर रख दिया—यानी सिजदा किया। अगर अल्लाहकी तरफ़से नेकीकी देन न पहुँचे, तो बन्देसे दूसरेको नेकी कैसे हासिल हो?

इकरार करनेवली ज़बानको क्या देखते हो! देखो यह कि ज़बानको इक़रार करनेकी खूबी किसने दी है? शनाख्त करनेका दरवाज़ा आदमी-की आँख है। उसे ज़मीन और आसमानपर किसने खोला है? अगर वह तुम्हारे मुँहके सामने न खुला होता, तो तुम्हें कब ऊँच और नीचकी समझ होती? वही सर और हाथ अदमसे वजूदमें लानेवाला है और वही एकमें सिजदेकी और दूसरेमें बख्शिशकी आदत पैदा करनेवाला है। अगर उसने ऐसा न किया होता, तो यह ग़ैरमुमकिन है कि सर सिजदाके लिए

झुकता और हाथ बख्शिशके लिए आगे बढ़ता।

उसने अपनी हिकमतसे तुम्हें ज़बान दी और तुम्हारे कान पैदा किये। आखिर ये ही दिलके सन्दूक़की कुञ्जियाँ हैं। अगर ज़बान क़िस्सा न कहती, तो कोई दिलकी खबर कैसे पाता? अगर जासूस-होशकी कोशिश न होती, तो सुलतान-होश तक ख़बर कैसे पहुँचती? उसने मुझे मिठास अदा करनेवाले लफ़्ज़ दिये हैं और तुम्हें अक़्ल—सूझ-बूझ दी है। दो नक़ीब हमेशा दरवाज़ेपर मौजूद रहते हैं; जो सुलतानकी ख़बर सुलतान तक पहुँचाते हैं। अपनी तरफ़से क्या ख़याल करते हो कि मेरा काम—मेरा चलन अच्छा है। यह तो उस अल्लाहतालाके दरकी क़ुदरत है। बस, यों समझ लो कि माली शाही बाग़से शाहीमहलमें फल-फूलोंके तोहफ़े ले जाता है।

१५

मैं वह सुर्ख़ फूल हूँ, जो ज़र्द हो चुका है

एक रात कुछ जवान नाज़-नख़रों और निआमतोंके दरम्यान आपसमें ग़प-शप लड़ा रहे थे। वह फूलकी तरह तरो-ताज़ा थे, बुलबुलकी तरह चहकते थे और अपनी शोख़ीके लिए उस कूचेमें मशहूर थे।

एक तजुर्बेकार बूढ़ा चुपचाप उनकी बातें सुन रहा था। उसके स्याह बाल आसमानी धुएँकी तरह सफ़ेद हो गये थे। उसकी ज़बान भी कोताह हो चुकी थी—बात करनेमें वह ऐसी बँधी हुई थी, जैसे पिस्तेकी गुठली। और तो क्या, उसके होंठोंपर मुसकराहट भी नहीं थी। अचानक एक जवानने उससे कहा, "ऐ बूढ़े बाबा, हसरतके गोशेमें बैठे-बैठे ग़म क्यों खा

रहे हो ? ग़मके गरेबाँसे थोड़ी देरके लिए सिर बाहर निकालो और दिल बहलानेके लिए हम जवानोंसे गप-शप लड़ाओ।"

बूढ़ेने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया और अपने जवाबके एक-एक शब्दसे ज़िन्दगीका गहरा तजुर्बा बखेरना शुरू किया—

"जब सुबह बाग़में हवा चलती है, तो सिर्फ़ छोटे-छोटे पौधे हिलते-डुलते हैं—बड़े दरख़्त ज्योंके-त्यों तने खड़े रहते हैं। दरख़्त जबतक छोटा रहता है, तभीतक तरो-ताज़ा रहता है और हवाकी थपकियोंसे हिलता-डुलता है; मगर जब पुख़्त हो जाता है, तो हवाकी टक्करोंसे भी नहीं झुकता, टूट भले ही जाता है। जब बहारके मौसमकी ख़ुशबूदार हवा चलती है, तो जवान दरख़्त अपनी सूखी पत्तियाँ झाड़ देते और फिर धीरे-धीरे हरे-भरे हो उठते हैं। मगर पुराने दरख़्त तो पुराने ही रहते हैं—क्या बहार और क्या बरसात, कोई भी उनके लिए नयी ज़िन्दगी नयी ताज़गी नहीं लाती।

"मेरे लिए जवानोंके साथ चलना शोभा नहीं देता; क्योंकि मेरे चेहरे-पर बुढ़ापेका सवेरा चमक उठा है। मेरे जिस्ममें जो पंछी फड़फड़ा रहा है, वह पल-भरमें उससे नाता तोड़ सकता है। अब निआमतोंसे फ़ायदा उठानेकी बारी तुम्हारी है। मैं तो कभीका ऐशो-इशरतसे हाथ धो चुका हूँ। जब सिरपर बुढ़ापेका ग़ुबार बैठ गया, तो फिर जवानीके आरामकी उम्मीद क्यों रखूँ ? मेरे जवानीके कौए-जैसे स्याह बालोंपर बुढ़ापेकी बर्फ़ गिर रही है। अब मेरे लिए बुलबुलकी तरह बाग़का तमाशा कहाँ शोभा देता है ? नाज़-नख़रे तो ख़ूबसूरत मोर दिखाता है। गिरे हुए बालोंवाले बाज़से उसकी उम्मीद करना बेकार है।

"मेरा ग़ल्ला तो पुख़्त होकर कट गया, अब तुम्हारा हरा-भरा नज़र आ रहा है। मेरे बाग़की ताज़गी तो रुख़सत हो गयी; भला कहीं मुरझाये फूलोंका भी गुलदस्ता बनाया जाता है ? ऐ प्यारे बच्चो, मेरा सहारा तो यह छड़ी है और अब ज़िन्दगीपर भरोसा करना बेकार है। समझदार

जवानोंको नेक और दुरुस्त रास्तेपर चलना चाहिए; क्योंकि बूढ़े उनसे मदद हासिल करनेकी उम्मीद रखते हैं। मैं वह सुर्ख़ फूल हूँ, जो ज़र्द हो चुका है। जब सूरज ज़र्दी पकड़ता है, तो थोड़ी देर बाद अस्त भी हो जाता है।

"किसी कम-उम्र लड़केका हविस करना उतना बुरा नहीं, जितना कि एक बूढ़ेका। मुझे अपने गुनाहोंपर शर्मिन्दा होना चाहिए—बच्चोंकी तरह रोना चाहिए, न कि बच्चोंकी तरह नादानीसे चलना चाहिए। लुक़मानने क्या ख़ूब कहा है कि बरसों गुनाह करने और ज़िन्दा रहनेके बजाय मर जाना कहीं बेहतर है। नफ़ा और पूँजी हाथसे खोकर नुक़सान उठानेके बजाय सुबहसे ही अपनी कोठरीका दरवाज़ा बन्द कर बैठ रहना कहीं बेहतर है। जवान आदमी अँधेरेको उजालेसे बदलता है और बूढ़ा सिपाही अँधेरेको ही नहीं, उजालेको भी क़ब्रमें ले जाता है।"

●

१६

हमने काम तो कुछ न किया और उम्र ख़तम कर दी

एक बूढ़ा किसी तबीबके पास पहुँचा। उसकी दर्द-भरी चीख-पुकार सुनकर मेरा कलेजा मुँहको आने लगा। उसने तबीबसे कहा, "ऐ नेक-समझ, ज़रा मेरी नब्ज़पर तो हाथ रख! मेरा पैर अपनी जगहसे हिलता-डुलता भी नहीं। मेरा सारा जिस्म इस तरह बेकार हो गया है, मानो कीचड़में फँसकर रह गया हो!"

तबीबने उसे जवाब दिया, "दुनियासे सारी उम्मीदें तोड़ ले। अब तेरा पैर क़यामतके दिन कीचड़से बाहर निकलेगा। अगर तू जवानीमें

हाथ-पैर चलाता रहता, तो वह बुढ़ापेमें भी दुरुस्त और बेहतर रहते।"

जब उम्र चालीस सालसे ज्यादा हो जाये, तो बहुत हाथ-पैर मत चला और समझ ले कि तेरी क़ूवत खतम हो गयी। मुझसे खुशी उस वक़्त से भागने लगी, जिस वक़्तसे मेरे बाल सफ़ेद होने लगे। बस, लालचका ज़माना भी खतम हो गया; फिर हविसको दिमाग़में जगह देनेकी क्या ज़रूरत? भला मेरा दिल सब्ज़ी देखकर कैसे ताज़ा हो सकता है, जब कि मेरी खुश्क मिट्टीसे भी सब्ज़ी उगनेवाली नहीं है। आज हम लोग शौक़से दिल बहलानेके लिए निकलते हैं, तो बहुतोंकी मिट्टीपर क़दम रखते हुए चलते-फिरते हैं; मगर कल जो लोग हमारे बाद आयेंगे, वह इसी तरह हमारी मिट्टी रौंदते हुए चलेंगे।

हाय अफ़सोस, जवानीका ज़माना चला गया और ज़िन्दगी खेल-कूदमें ही खतम हो गयी! हाय अफ़सोस, ऐसा आनन्दसे भरा हुआ—मस्तीमें डूबा हुआ ज़माना आया और बिजलीकी तरह कौंधकर ग़ायब हो गया! मैं सारी उम्र भोजन और वस्त्रकी तलाशमें रहा और अपने पैदा करनेवाले का ज़रा भी चिन्तन न कर सका। नाहकका तो पुजारी बना रहा और हक़से ग़ाफ़िल रहा—दूर-दूर भागता रहा। किसी शिक्षकने अपने शिष्यसे क्या खूब कहा है कि हमने काम तो कुछ न किया और उम्र खतम कर दी।

•

१७

अब तेरी जगह दूसरे बैठेंगे

जब ज़िन्दगीकी घड़ियाँ खतम हो गयीं, तो एक शख्स चल बसा। उसकी मौतपर दूसरा शख्स इतना रंजीदा हुआ कि अपना गरेबाँ फाड़ने लगा। एक अक़्लमन्द दूसरे शख्सकी यह चीख-पुकार सुनते ही बेचैन

होकर बोला, "तेरे हाथसे मरनेवालेको ऐसी तकलीफ़ पहुँच रही है कि अगर उसका बस चलता, तो वह कफ़न फाड़कर उठ खड़ा होता और कहता, मेरे ग़ममें इस तरह मुब्तेला न हो; क्योंकि तुझसे पहले मैं भी ऐसे दिन देख चुका हूँ। शायद तू अपनी मौतको भुला बैठा है, जो मेरी मौतने तुझे इस तरह कमज़ोर और ज़ख्मी कर दिया है। देखनेवाले मुरदेपर फूल क्या चढ़ाते हैं, अपना ही ग़म बढ़ाते हैं।"

एक बच्चेकी जुदाईमें—जो दफ़न हो चुका है—क्यों इस तरह रोता है? वह तो पाक-साफ़ आया था और पाक-साफ़ ही चला गया। तू भी पाक-साफ़ पैदा हुआ था, इसलिए पाक-साफ़ रह; क्योंकि दुनियासे नापाक जाना शर्मकी बात है। तू इस चपल रूहको पैर बाँधकर रखना चाहे—इसलिए कि उससे तेरा ताल्लुक़ खतम न हो—यह ग़ैरमुमकिन है। तू बहुत दिन दूसरोंकी जगह बैठ चुका, अब तेरी जगह दूसरे बैठेंगे। तू चाहे पहलवान हो, चाहे तलवार चलानेवाला; मगर अपने साथ कफ़नके सिवाय और कुछ न ले जायेगा।

मैंने माना कि गोरखर[1] फन्देको तोड़ देगा; मगर जब रेतमें पहुँचेगा, तो फँसकर रह जायेगा। सवाल यह है कि क्या तू गोरखरसे भी गया-बीता है? जबतक तेरे पैर क़ब्रकी रेतमें नहीं फँसे हैं, तबतक तो तुझे भी उसके जैसा ताक़तवर होना चाहिए। इस छोटे और चन्द-रोज़ा घोसलेमें दिल लगाना ठीक नहीं। भला अखरोट गुम्बदपर कबतक ठहर सकता है? जब वक़्त निकल जायेगा, तो फिर हाथ न आयेगा। इसी एक घड़ीमें अपना हिसाब कर ले, जो इस वक़्त मौजूद है।

●

---

१ जङ्गली गधा।

१८

हमारे बाद भी सब्ज़े उगते और फूल खिलते रहेंगे

जमशेदका एक लड़का मर गया। उसने लड़केका जिस्म रेशमके कीड़ोंकी तरह रेशमके कपड़ोंमें लपेटा और उसे क़ब्रमें रखा। कुछ दिन बाद जमशेद क़ब्रिस्तानमें पहुँचा; ताकि उसकी यादमें ठण्ढी-ठण्ढी साँसें भरे और आँखोंसे आँसू वहाये। मगर, जब उसने रेशमी कफ़न इधर-उधरसे कटा-फटा देखा, तो वह फ़िक्रमें डूब गया और अपने-आप बोला, "एक दिन था, जब मैं अपनी क़ूवतसे इस रेशमको कीड़ोंके हमलेसे साफ़ बचा लेता था और एक दिन यह है कि क़ब्रमें उन्हीं कीड़ोंने इस रेशमको चिथड़े-चिथड़े कर डाला है।"

एक दिन दो शेरोंने मेरा जिग़र जलाकर क़बाब कर डाला था, जिन्हें गवैया रबावके सुरमें सुर मिला कर गा रहा था। उसका मतलब था, "हाय अफ़सोस! हमारे बाद भी हमेशा सब्ज़े उगते रहेंगे और फूल खिलते रहेंगे। बहुत ज़माने तक मौसमे-बहारके प्यारे-प्यारे महीने आते रहेंगे; मगर उस वक़्त हम मिट्टी और ईंट बन चुके होंगे!"

•

१९

भला एक ईंट नदीको कैसे बन्द कर सकती है!

एक भली आदतवाले ईश्वर-भक्त बुज़ुर्गको कहीं सोनेकी ईंट पड़ी हुई मिल गयी। सोनेकी ईंटने उसकी अक़्लको कुछ ऐसा हैरान किया कि

उसका ज्ञानके उजालेसे चमकता हुआ दिल एकदम काला हो गया। वह सारी रात उसी मालकी चिन्तामें डूबा रहा और लगातार सोचता रहा—यह ज़िन्दगी-भरके लिए काफ़ी है। अगर मैं कमानेसे मजबूर हो जाऊँगा, तो भी मुझे अब किसी दूसरेके सामने हाथ न फैलाना पड़ेगा। रहनेके लिए एक अच्छा महल बनवा लूँगा। उसका फ़र्श संगमर्मरका होगा और छत-में खालीस ऊदकी लकड़ी दिखायी देगी। उसमें दोस्तोंसे मिलने-जुलनेके लिए भी एक शानदार कमरा रहेगा, जिसके सामने एक खुशनुमा बाग़ीचा लगवा दूँगा। उफ़! पैवन्द लगाते-लगाते मर मिटा! ऐरों-ग़ैरोंके तानोंने आँखें झुका दीं और दिमाग़ जला डाला! अब नौकरोंसे अच्छे-अच्छे खाने पकवाऊँगा और बड़े चैनसे इस जिस्मकी परवरिश करूँगा। कम्बलके सख्त बिस्तरपर कितनी तकलीफ़ होती है! अब नरम-नरम बिस्तर बिछवाऊँगा और मज़ेसे रात गुज़ारूँगा।

इस तरहके न जाने कितने अनोखे-अनोखे ख़यालातने उसके दिमाग़-पर क़ाबू कर लिया और वह दिवाना हो गया। अब उसे न तो नमाज़ पढ़नेकी और न अल्लाहका नाम लेनेकी फ़ुरसत रही— न तो खाने-पीने-की और न सोने-पड़ने या आराम करनेकी फ़िक्र रही। धीरे-धीरे उसपर ग़ुरूरका ऐसा भूत सवार हुआ कि वह जङ्गलकी तरफ़ जा निकला। मगर उसे कहीं बैठने या ठहरनेसे चैन न मिला। अचानक उसने एक ऐसे शख्स-को देखा, जो ईंटें बनानेके लिए क़ब्रकी मिट्टी गूँध रहा था। बस, उसकी आँखोंके सामनेसे मानो काला परदा हट गया और वह अपने-आपसे कहने लगा—"ऐ अन्धे, इस नतीजेसे कुछ सबक़ हासिल कर! इस सोनेकी ईंटमें क्या दिल लगाता है! उस दिनकी फ़िक्र कर, जब तेरे जिस्मसे ईंट बनेगी—मिट्टीकी ईंट। लालचका मुँह इतना कब खुलता है कि तू उसे एक लुक़मेंसे खामोश कर दे! ऐ कम-समझ, यह सोनेकी ईंट फेंक दे। भला एक ईंट नदीको कैसे बन्द कर सकती है!"

तू माल और नफ़ेकी फ़िक्रमें ऐसा ग़ाफ़िल रहा कि उम्रकी सारी पूँजी

गँवा बैठा। इसी मिट्टीपर इतनी दफ़ा हवाएँ चलेंगी कि हमारा ज़र्रा-ज़र्रा न जाने, कहाँसे-कहाँ जा पड़ेगा। लालचके ग़ुबारने ग़फ़लतकी आँखें सी दीं और हविसकी गरम आँधीने उम्रकी खेती जला डाली। बस, होशमें आ। आँखोंसे ग़फ़लतका सुरमा दूर कर दे। कल तू खुद मिट्टीके नीचे सुरमा हो जायेगा।

२०

किसीकी मौतपर ख़ुशी मत मना

दो आदमियोंमें दुश्मनी और लड़ाई चल रही थी। वह चीतेकी तरह ग़ुरूरमें डूबे रहते थे और एक-दूसरेको नीचा दिखानेकी कोशिश करते थे। वह इस तरह नफ़रतके शिकार हो चुके थे कि एक-दूसरेकी सूरत देखनेसे भी चिढ़ते थे। यहाँतक कि आसमान उनकी हरकतोंसे तंग आ गया था। आख़िर एकके सिरपर मौतकी फ़ौजने हमला किया। बस, उसका ऐश-व-आरामका ज़माना खतम हुआ, वह चल बसा और उसके दुश्मनका दिल खिल उठा।

एक ज़माने बाद वह ज़िन्दा दुश्मन अपने मरे हुए दुश्मनकी क़ब्रके क़रीबसे गुज़रा। उसकी क़ब्र गर्द-ग़ुबारसे ढँक रही थी, हालाँ कि ज़िन्दगी-में उसका मकान सोनेकी नाईं चमका करता था। मगर क़ब्रपर नज़र पड़ते ही ज़िन्दा दुश्मनकी अदावतके खयाल कुछ इस तरह भड़के कि उसने अपने बाज़ूकी क़ूवतसे क़ब्रका एक तख्ता उखाड़ लिया और क़ब्रमें देखा कि वह सिर, जो एक दिन ताज पहिननेकी काबिलियत रखता था, आज मिट्टी-में लोट रहा है और उसकी आँखोंमें धूल भरी हुई है। उसका वजूद क़ब्र के ज़रा-से क़ैदखानेमें गिरफ़्तार है और उसका जिस्म कीड़ोंने खा डाला

है—चींटियोंने रौंद डाला है। आसमानकी गर्दिशने उसका चाँद-सा चेहरा चूर-चूर कर दिया है। ज़मानेके ज़ुल्मसे उसका क़द टुकड़े-टुकड़े हो गया है और उसके क़ूवतवर पंजे इस तरह बिखरे पड़े हैं, जैसे कभी जिस्मसे उनका कोई रिश्ता ही नहीं था। अपने मरे हुए दुश्मनका यह अंजाम देखते ही वह ज़िन्दा दुश्मन काँप उठा, अपनी करतूतपर बहुत शर्मिन्दा हुआ और रो-रोकर उसकी क़ब्रकी मिट्टी आँसुओंसे गूँधने लगा। आखिर उसने हुक्म दिया और मरे हुए दुश्मनकी क़ब्रके पत्थरपर ये जुमले लिखे गये—"किसीकी मौतपर खुशी मत मना। उसके बाद ज़माना तुझको भी बहुत वक़्त न देगा।"

यह बात एक चतुर इबादत-गुज़ारने सुनी, तो रोते-रोते कहा, "ऐ क़ुदरत रखनेवाले अल्लाह! ताज्जुब है, अगर उसपर तेरी रहमत न होती, तो दुश्मन उसपर हरगिज़ इस तरह आँसू न बहाता।"

हमारा जिस्म भी एक रोज़ ऐसा हो जायेगा कि उसपर दुश्मनका दिल ग़म खायेगा। शायद दोस्तके दिलमें भी मेरे लिए रहम आ जाये, जब वह देखे कि दुश्मनने मुझे माफ़ कर दिया है। जल्दी या देरमें इस सिरकी यह हालत हो जायेगी कि तुम उसे देखोगे, तो कहोगे—"इसमें आँखे थीं ही नहीं। एक रोज़ मैंने मिट्टीके ढेरमें फावड़ा मारा, तो मेरे कानोंमें यह दर्दनाक आवाज़ आयी—"खबरदार, फावड़ा आहिस्ता-आहिस्ता चला! क्या तुझे नहीं मालूम कि इस मिट्टीमें कितने सिर और कान पोशीदा हैं?"

२१

हम इस दुनियासे दिल क्यों लगायें

तुझे अपने जिस्मके पींजड़ेकी भी कुछ ख़बर है? तेरी जान परिन्दा है और उसका नाम नफ़्स है। जब परिन्दा पींजड़ेको तोड़कर उड़

जायेगा, तो वह दोबारा तेरी कोशिशसे शिकार नहीं हो सकेगा। मौक़ेको ग़नीमत समझ कि दुनिया चन्द-रोजा है। किसी अक़्लमन्दके सामने थोड़ी देर बैठना सारी दुनियाके साथ रहनेसे बेहतर है।

वह सिकन्दर, जिसने दुनियापर हुकूमत की, जब खुद गया, तो दुनिया भी छोड़ गया। उससे इतना भी न हो सका कि दुनियाकी हुकूमत देकर मौतसे थोड़ी देरके लिए समझौता कर लेता। सब चले गये और हर एकने जैसा बोया, वैसा काटा। सिवाय अच्छे या बुरे नामके कुछ बाक़ी न छोड़ा।

हम इस दुनियासे दिल क्यों लगायें। इससे दोस्त तो सब चले गये हैं और हम रास्तेमें अकेले खड़े रह गये हैं। हमारे बाद भी बाग़में तरह-तरहके फूल खिलेंगे और दोस्त आपसमें मिलकर इसी तरह बैठेंगे। दिल-बहलावकी जगहमें दिल लगाना ठीक नहीं। उससे जो दिल हटाना नहीं जानता, वह उसका खयाल भी नहीं करती। जो मरकर क़ब्रमें सो गया है, क़यामत उसके चेहरेकी गर्द साफ़ कर देगी। बस, अब भी ग़फ़लतके गरेबानसे सिर बाहर निकाल, ताकि वह क़यामतमें अफ़सोससे झुका हुआ न रहे।

जब इनसान सफ़रसे घरमें आता है तो ग़र्द-ग़ुबार दूर करनेके लिए हाथ-मुँह धोता है। ऐ गुनाह करनेवाले, तू बहुत जल्दी एक अनोखे आलममें सफ़र करेगा। बस, अपनी दोनों आँखोंसे आँसू बहा, और अगर तुझमें कोई गन्दगी है, तो उसे साफ़ कर डाल!

●

२२

बस, अपने दामनसे गुनाहोंका ग़ुबार धो डाल

मिट्टीमें लिथड़ा हुआ एक शख्स मसजिदमें दाखिल होने लगा। उसकी हालतपर उसका नसीब हैरान था। अचानक किसीने उसे डाँटकर कहा, "कम्बख्त, तेरे दोनों हाथ टूट जायें! पाक जगहमें इस तरह गन्दगीके साथ क्यों जाता है?"

यह देखकर मुझे रोना आ गया। मैंने सोचा, बिहिश्तका दर्जा कितना ऊँचा है! वह निहायत पाक मुक़ाम है। उसके उम्मीदवार तो पाक-साफ़ लोग ही हो सकते हैं। भला वहाँ गुनाहोंके कीचड़में लिथड़े हुए शख्सका क्या काम! बिहिश्त वह पाता है, जो इबादत करता है—वहाँ तो हर एकको अपनी इबादतकी पूँजी लेकर ही जाना चाहिए। बस, अपने दामनसे गुनाहोंका ग़ुबार धो डाल! कहीं ऐसा न हो कि अचानक तौबाकी नहरका फाटक बन्द हो जाये।

यह मत कह कि दौलतकी चीड़िया मेरे फन्देसे उड़ गयी। अभी तो जिन्दगीसे तेरा ताल्लुक़ बाक़ी है। अगर देर हो गयी है, तो तेज़ी और होशियारीसे इबादत कर—देर होनेका ग़म न कर। मौतने अभी तेरी ख्वाहिशके हाथ नहीं बाँधे हैं। इसलिए अल्लाहकी कचहरीमें तौबाके हाथ फैला दे।

ऐ गुनाह करनेवाले, ग़ाफ़िल मत सो; बल्कि गुनाहोंसे तौबा करनेके लिए आँसू बहा! जब देखे कि तेरी आबरू बरबाद हो गयी, तो फिर अल्लाहकी कचहरीमें अपनी आबरू मिटा दे यानी तौबा कर। अगर तेरी आबरू न रहे, तो ऐसा सिफ़ारिशी ला, जो तुझसे ज़्यादा आबरू रखता

हो। अगर अल्लाह गुस्सेसे मुझे अपने दरवाजेसे दूर कर देगा, तो मैं बुज़ुर्गोंकी रूहोंको सिफ़ारिशके लिए ले जाऊँगा।

•

२३

जा सादीकी तरह नेक बातोंके फल चुन

मुझे वचपनकी बात याद आती है। मैं एक ईदके दिन वापके साथ वाहर निकला। रास्तेमें जो खेल-कूद और आने-जानेवाले लोगोंको देखने लगा, तो भीड़-भाड़में बापसे अलग हो गया। बस, मैंने ख़ौफ़ और दहशत-से चीख़ना शुरू किया। अचानक वापने मेरा कान पकड़ा और कहा, "ऐ गुस्ताख लड़के, तुझसे कितनी दफ़ा कहा कि मेरे दामनको हाथसे मत छोड़ा कर। छोटे वच्चोंको अकेले इधर-उधर न जाना चाहिए; क्योंकि वह रास्ते-से अनजान रहते और कहींके-कहीं भटक जाते हैं।"

ऐ फ़क़ीर, तू भी राह चलते वच्चोंकी तरह कोशिश कर—यानी किसी नेक वुज़ुर्गका दामन थाम। कमीने लोगोंके साथ मत वैठ। अगर वैठेगा, तो खौफ़से उस नेक वुज़ुर्गका दामन छोड़ देगा। पाक लोगोंके पटकेमें पंजा डाल दे; क्योंकि जाननेवाला फ़क़ीरीसे शर्म नहीं रखता। भरोसा करनेवाले जो भरोसेकी क़ूवतमें बच्चोंसे भी गये-बीते होते हैं; मगर वुज़ुर्ग मजवूत दीवारकी तरह रहते हैं।

चलना तो उस छोटे बच्चेसे सीख, जो दीवारकी मदद लेकर चलता है। जो शख्स बुज़ुर्गोंके दायरेमें जा बैठा, वह बदकारोंकी ज़ंजीरसे आज़ाद हो गया। अगर तुझे ज़रूरत है, तो दरवेशकी सोहबत अख्तियार कर; क्योंकि बादशाह भी उसके दरवाज़ेका मोहताज होता है। जा, सादी-

की तरह नेक बातोंके फल चुन; ताकि ईश्वरीय ज्ञानकी दौलत हासिल कर सके।

•

२४

दिलका आइना आहोंके असरसे चमक उठेगा

अगर बिल्ली किसी साफ़ जगह गन्दगी छोड़ देती है, तो उसे बुरा समझती और धूल-मिट्टीसे तोप-ताप देती है। मगर तू गन्दे काम करनेके लिए आज़ाद है और इस बातसे खौफ़ नहीं खाता कि लोग देखेंगे, तो क्या कहेंगे! उस गुनाहगार इनसानसे खौफ़ खाना चाहिए, जो कुछ अरसेके लिए ही सही, अपने मालिकका हुक्म न माने। अगर वह दीनता और सचाईके साथ वापिस आ जाये, तो उसे गिरफ़्तारी और क़ैदसे छुटकारा मिल जाता है।

दुश्मनीके साथ उस शख्ससे झगड़ा कर, जिससे तुझको परहेज़ हो या जिसे तुझसे हो। अभीसे अपने कर्मोंका लेखा-जोखा करना चाहिए, न कि उस वक़्त, जब लेखे-जोखेकी किताबके पन्ने इधर-उधर बिखर जायें। किसीने गुनाह किया भी, तो गोया नहीं किया; अगर उसने क़यामतसे पहले तौबा कर ली। शीशा भले ही गुनाहोंसे स्याह हो जाये, दिलका आइना आहोंके असरसे चमक उठेगा। इस वक़्त अपने गुनाहोंसे खौफ़ खा और तौबा कर, ताकि क़यामतके दिन किसीसे न डरना पड़े।

•

२५

उसका दरवाजा कभी बन्द नहीं होता

ऐ भाई, आओ, आज हम-तुम मिलकर दुआके लिए हाथ निकालें; क्योंकि कल मर जानेके बाद मिट्टीमें-से न निकाल सकेंगे। खिज़ाँके मौसममें दरख्त हरे-भरे नहीं दिखायी देते; क्योंकि वह सख्त सर्दीसे बिना पत्तोंके रह जाते हैं। जो शख्स आजिज़ीके खाली हाथ उठाता है, वह अल्लाहकी रहमतसे कभी खाली हाथ नहीं लौटता। उसका दरवाज़ा कभी बन्द नहीं होता। इसलिए यह मत समझो कि जो उसपर दुआके लिए हाथ उठायेगा, वह नाउम्मीद हो जायेगा।

सभी अपनी अर्ज़ी पेश करते हैं—दीन-दरिद्र अपनी ख्वाहिश ज़ाहिर करते हैं। तुम दीन-दरिद्रोंपर दया करनेवालेकी कचहरी तक तो पहुँचो। हम तो बिना पत्तोंवाली डालीकी तरह हाथ उठाते हैं। भला बिना सामानके इससे आगे कैसे बढ़ सकते हैं? या अल्लाह, रहम कर; बन्देसे ही जुर्म पैदा हुआ है। तूने उसे खाकसे बनाया है, मगर उसने ज़्यादा-से-ज़्यादा गुनाह किया है—सिर्फ़ इस उम्मीदपर कि अल्लाह-ताला माफ़ कर देगा।

या करीम, हम तेरे रिज़्क़से पले हैं, तेरे इनामसे—तेरी मेहरबानीसे बहुत-कुछ कर सके हैं। भिखारी जब मेहरबानी और नाज़-बरदारी करनेवालेकी सीधी निगाह देखता है, तो उसका पीछा करनेसे वापिस नहीं होता। तूने हमें दुनियामें बड़े रुतबेवाला बनाया। परलोकमें भी हम तुझसे यही उम्मीद रखते हैं। तू ही इज़्ज़त और ज़िल्लत देनेवाला है। जो तुझसे इज़्ज़त पा चुका, भला वह किसीसे क्योंकर ज़िल्लत पा सकता है?

या अल्लाह, अपनी इज़्ज़तके ज़रिये मुझे ज़लील मत कर—गुनाहकी बुराईसे मुझे शर्मिन्दा मत कर। मुझ-जैसा मुझपर हावी मत कर। इससे तो बेहतर है कि मुझे तेरे ही हाथों सज़ा मिले। दुनियामें इससे बढ़कर दूसरी बुराई नहीं कि अपने ही जैसेके हाथसे ज़ुल्म उठाया जाये। तेरे आगे मेरा शर्मिन्दा होना ही काफ़ी है। अगर मैं शर्मिन्दा हूँ तो किसीके आगे ज़ाहिर मत कर। अगर मुझपर तेरा साया पड़ जाये, तो आसमान भी मुझसे कम दर्जेका हो जाये। अगर तू ताज बख्शे तो मेरा सर बुलन्द हो जाये। या अल्लाह, तू मुझे उठा, ताकि कोई गिरा न सके।

●

२६

.कुदरतवाला तो बिलकुल तू है

किसी शख्सने एक स्याह रंगवालेको बुरा कहा। स्याह रंगवालेने उसे ऐसा जवाब दिया कि वह हैरान रह गया। उसने कहा, 'मैंने खुद अपनी सूरत नहीं बनायी है। जिसे तू मेरा ऐब समझता है, वह मेरा किया हुआ नहीं है। फिर तुझे मेरे बुरे चेहरेसे क्या लेना-देना? आखिर बुरा बनानेवाला मैं तो नहीं हूँ।

मैं वही हूँ, जो तूने मेरे सिरपर पहलेसे लिख रखा है। ऐ बन्दा-परवर, मैं उससे ज़रा भी कमी-बेश नहीं हुआ हूँ। तू जानता है कि मैं .कुदरतवाला नहीं हूँ—क़ुदरतवाला तो बिलकुल तू है। अगर तू मुझे राह दिखायेगा, तो मैं खैरियतसे मंज़िलपर पहुँच जाऊँगा और अगर तू गुमराह करेगा, तो चलनेसे लाचार रहूँगा। अगर जहानको पैदा करने-वाला मदद न पहुँचाये, तो बन्दा कैसे परहेज़गारी निभा सकेगा?

●

२७

मैं तेरे पास सिर्फ़ उम्मीद लाया हूँ

मैंने सुना है कि कोई मस्त शराबकी गरमीमें मसजिदके हुजरे[1] तक जा पहुँचा। वह अल्लाहके घरमें ज़मीनपर माथा टेककर रोया और बोला, "या रब, मुझे बिहिश्तके ऊँचे दर्जेमें दाखिल कर।"

मोअज़्ज़िनने[2] उसका गरेबान पकड़ा और गरजकर कहा, "कुत्ता और मसजिदमें। अबे, तुझमें अक़्ल और [illegible]नका नाम भी नहीं है। तूने ऐसा कौन-सा क़ाबिलियतका का[illegible]किया है, जो तू बिहिश्त चाहता है? इस बुरे मुँह यह नखरा तुझे ज़ेबा[3] नहीं देता।"

मस्तने मोअज़्ज़िनकी यह बात सुनी, तो रोते-रोते जवाब दिया—"मैं मस्त हूँ। ऐ सरदार, मुझसे अपना हाथ हटा ले। परवरदिगारकी मेहरबानीपर तुझे ताज्जुब है कि एक गुनाहगार उससे उम्मीदवार है! मैं तुझसे कब कहता हूँ कि तू मेरा उज्र क़बूल कर। तौबाका दरवाज़ा खुला हुआ है और अल्लाह-ताला मदद करनेवाला है। मैं अल्लाहकी मेहरबानीसे शर्मिन्दा हूँ। वह बड़ा है—खता माफ़ करनेवाला है। बस, मैं उसके सामने अपने गुनाहोंका ज़िक्र करता हूँ।

अगर कोई बुढ़ापेकी कमज़ोरीसे गिर पड़े, तो वह उस वक़्त तक अपनी जगहसे नहीं उठता, जबतक कि उसका हाथ न पकड़ा जाये। मैं वह बूढ़ा हूँ, जो अपने बुढ़ापेकी वजहसे गिर पड़ा है, मगर अल्लाह अपनी मेहरबानीसे मेरी मदद करनेवाला है। मैं नहीं चाहता कि वह मुझे बुज़ुर्गी और मर्तबा बख्श दे। मैं तो चाहता हूँ कि वह मेरी आजिज़ीपर रहम करे और मेरे गुनाह बख्श दे। अगर एक दोस्त मेरे गुनाह जान लेगा, तो अपनी नादानीसे उन्हें ज़ाहिर कर देगा। मगर अल्लाह ऐसा दोस्त नहीं है।

---

१. कोठरी। २. अज़ान पुकारनेवाला। ३. शोभा।

ऐ रब, तू देखनेवाला है कि हम एक-दूसरेसे खौफ़-ज़दह हैं; क्योंकि तू परदा डालनेवाला है और हम परदा फाड़नेवाले हैं। आदमियोंने बाहरसे शोर मचाया भी, मगर तू बन्देके साथ परदेमें है और परदा डालनेवाला है। अगर ग़ुलाम नादानीसे सरकश भी हो जाता है, तो मालिक उसे माफ़ कर देता है। अगर तू अपने फ़ैज़[1]के मुताबिक गुनाह बख्श दे, तो कोई गिरफ़्तार न रहे—सभी बच जायें; और अगर गुनाहोंके बराबर ग़ुस्सा करे, तो तराज़ूकी ज़रूरत ही न पड़े—सभी दोज़खमें दिखायी दें।

अगर तू मदद करे, तो कौन उ[illegible] दिखा सकता है? अगर तू छोड़ दे, तो कौन पकड़ सकता है? क़यामत[illegible] फ़रीक़[2] होंगे। मालूम नहीं वह मुझे किस तरफ़ रास्ता देंगे। ताज्जु[illegible]गा, अगर मुझे दाहिने तरफ़से रास्ता दिया जाये; क्योंकि मेरे हाथसे [illegible] कामोंके सिवाय और कुछ हुआ ही नहीं है। मेरा दिल मुझे बार-बार उम्मीद देता है कि अल्लाहको सफ़ेद बालसे शर्म होती है। मुझे ताज्जुब होगा, अगर वह मुझसे भी शर्म करे; क्योंकि मुझे तो अपने-आपसे शर्म नहीं आती।

हज़रत यूसुफ़ने मुसीबत उठायी और वह क़ैदमें रहे; मगर जब मिस्रके बादशाहके पास पहुँचें और उनका दर्जा बुलन्द हो गया—उनका हुक्म चलने लगा, तो उन्होंने अपने दूसरे भाइयोंको माफ़ कर दिया; क्योंकि उनकी खूबसूरतमें ख़ूबी छिपी हुई थी। उन्होंने उनके बुरे कामका बदला नहीं चुकाया, उनको क़ैदमें नहीं डाला और उनकी थोड़ी-सी पूँजी नहीं छीनी। या अल्लाह, तेरे रहमसे मैं भी यही उम्मीद रखता हूँ—इस बेपूँजीवालेको बख्श दे। मैं तेरे पास पूँजी नहीं लाया हूँ—सिर्फ़ उम्मीद लाया हूँ। अपने रहमसे मुझे नाउम्मीद मत कर।"

●

---

१. दानशीलता। २. न्यायके दिन दो फ़रीक़ होंगे—एक राह दिखाने वाला, दूसरा चुप रहनेवाला। पुण्यात्मा राह दिखानेवालेकी ओर रहेंगे और पापात्मा चुप रहनेवालेकी ओर होंगे।

भारतीय ज्ञानपीठ
काशी

उद्देश्य

ज्ञानकी विलुप्त, अनुपलब्ध
और अप्रकाशित सामग्रीका
अनुसन्धान और प्रकाशन
तथा लोक-हितकारी
मौलिक साहित्यका निर्माण

•

संस्थापक
साहू शान्तिप्रसाद जैन
अध्यक्षा
श्रीमती रमा जैन

•

मुद्रक : सन्मति मुद्रणालय, दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी ५